जगदीश आर. भुरानी

मूत्र चिकित्सा के प्राकृतिक लाभ

चौथे स्टेज का कैंसर 4 महीने में ठीक हुआ

मूत्र चिकित्सा के प्राकृतिक लाभ, सभी के लिए स्वस्थ्य बने रहने व स्वस्थ्य जीवन जीने के लिए एक 'बेहतरीन स्वास्थ्य के राज़ पर शैक्षिक भाग' है। इसमें हर प्रकार की पुरानी बीमारियों के उपचार एवं उन्हें नियंत्रित करने की प्राकृतिक क्षमता होती है। यह उपचार का काफी प्रभावी तरीका है और पूर्ण रूप से ज्यादा सशक्त उपचार है।

मैंने रोगियों का इलाज/ठीक किया है, जो निम्न रोगों से पीड़ित थे: -

पेट के कैंसर "कार्सिनोमा स्टमक"
डिंबग्रंथि कैंसर “पापिलरी एडीनोकार्सिनोमा”
स्तन कैंसर, एचआईवी/एड्स
नेफ्रोटिक सिंड्रोम "गुर्दे की बीमारी में मूत्र से प्रोटीन खत्म हो जाता है"
मधुमेह, किडनी विफलता
पित्ताशय में पत्थर
मोटर नयूरोन रोग

पेशी कुपोषण
मानसिक गतिरोध
मस्तिष्कीय पक्षाघात
द्रष्टि, सुनने की समस्या और विकृति
तीव्र लम्बर स्पोंडिलोसिस "ए एल एस"
महावारी पूर्व सिंड्रोम "पीएमएस"
शुक्राणुओं की कम गणना और कम गतिशीलता
थाइराइड, अस्थमा, पक्षाघात, अल्सर, सिरोसिस त्वचा समस्या बालों का झड़ना, आदि

मूत्र चिकित्सा उपचार की प्राचीन पद्धति है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही है। प्राचीन विधि में मूत्र चिकित्सा का अभ्यास उपचार की पारंपरिक विधि में किया जाता था, जिसे अपनाना एवं उसके लाभ उठाना अधिकांश लोगों के लिये कठिन है।

मूत्र चिकित्सा के अधिकतम लाभ उठाने के लिये मैंने अध्ययन किया, खोजा कि और अनुसंधान कर सही विधि एवं तकनीक को खोजा है, जिसे जन्म से सेरेब्रेल पाल्सी से ग्रसित बच्चों समेत हर कोई अपना सकता है। इसे अपनाकर घर में बहुत आसान तरीके से इसका अभ्यास किया जा सकता है।

मूत्र चिकित्सा हर प्रकार के गंभीर रोगों एवं पुरानी बीमारियों को ठीक करने एवं अच्छा स्वास्थ्य बनाये रखने की पूरी तरह दवारहित प्रभावी विधि है। बहुत से लोगों के मन में मूत्र के प्रति अलग सोच बनी हुई है, क्योंकि वे इसके लाभों से अनभिज्ञ हैं। उन्हें सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना चाहिये और तब उन्हें महसूस होगा कि उनके खुद के अंदर प्राकृतिक उपचार शक्ति है। लंबी बीमारी से ग्रसित व्यक्ति, जो उत्साह और सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ मूत्र चिकित्सा को अपनाते हैं, वे 10 से 15 दिन की एक छोटी सी

अवधि के भीतर मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य में लाभ पाते हैं और तब उन्हें इसका अहसास होता है।

मूत्र चिकित्सा की उचित विधि मूत्र पीना है, शरीर पर मूत्र से मालिश करना है और मूत्र से गीले कपड़े को रखना है, इसके साथ रस पीना और हलका आहार लेना है। वे लोग जो इस उपचार को उचित तरीके से अपनाते हैं वे सफेद रंग (पानी की तरह बेरंग) मूत्र प्रवाहित करते हैं, जिसमें कोई गंध नहीं होती है। लोग जो मूत्र चिकित्सा को स्वेच्छा व खुशी के साथ अपनाते हैं, वे उचित ज्ञान, पद्धति और उपचार की तकनीक का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

डॉक्टरों और वैज्ञानिकों को तथ्यों पर विश्वास करना चाहिए कि "मूत्र प्राकृतिक दैवी उपचारात्मक शक्ति है" और वहाँ केवल एक प्राकृतिक उपाय है, जो विभिन्न प्रकार के रोगों को नियंत्रित और उसका इलाज कर सकता है। वे अनुसंधान कर सकते हैं और वैज्ञानिक सबूत देते हैं कि मैने जो भी दावे किये हैं वो सत्य हैं।

मैंने "कुछ रोगियों की केस हिस्ट्री" प्रस्तुत की है। कुछ मरीजों के प्रमाण पत्र एवं लिये गये वाक्तव्य इस वैज्ञानिक प्रणाली की सफलता के सबूत हैं। ज्यादा जानकारी और मरीजों की वीजुअल वीडियो रिकॉर्डिंग देखने के लिए लॉग इन करें-
वेबसाइट: - www.urinetherapy.in

जगदीश आर. भुरानी
दिनांक- 26-12-2011
कार्यालय-
गैलेक्सी प्लाजा
254 एस.सी. रोड
बेंगलुरु- 560009

ईमेल:- jbhurani@gmail.com
मोबाइल:- 09342872578
आवास-
डी1202, मंत्री एलीगांस
बीटीएम लेआउट, बनरगट्टा रोड, बेंगलुरु- 560076

विषय सूची:-

उत्कृष्ट स्वास्थ्य के राज़ पर शैक्षिक अनुभाग	1
डा. केसी बल्लाल का जनता को सुझाव	5
"गुर्दे के संलक्षण" के साथ बच्चे के लिए डा. कुमार की रिपोर्ट	7
मूत्र चिकित्सा जीर्ण रोगों के सभी प्रकार का इलाज करती है	9
मूत्र चिकित्सा के प्राचीन संदर्भ	14
मेरा व्यक्तिगत अनुभव	18
डॉक्टरों और वैज्ञानिकों का नैतिक समर्थन	21
कैंसर नियंत्रित किया जा सकता है और ठीक हो सकता है	23
केस हिस्ट्री: -	
पेट का कैंसर "कार्सिनोमा स्टमक"	
श्रीमती विनोदा का संक्षिप्त इतिहास उनकी बेटी विजयलक्ष्मी द्वारा	25
निदान एंडोस्कोपी रिपोर्ट	28
ऊतकविकृति विज्ञानी रिपोर्ट	29
सी.ई.एस.टी. पेट और श्रोणि रिपोर्ट	30
कीमोथेरेपी की आवश्यकता और लागत	31
सर्जरी की आवश्यकता और लागत	32
गर्भाशय का कैंसर एवं श्रीमती ममता का संक्षिप्त इतिहास	34
श्रीमती ममता का उनका अनुभव, मूत्र चिकित्सा अपनाने का सुझाव	38
डॉक्टर का पत्र "सर्जरी से गुजरना और उन्हें कीमोथेरेपी की जरूरत	36
रोगियों की केस हिस्ट्री, जिन्होंने लाभ प्राप्त किये	37
उपचार के ढंग और विधि	52
मालिश, गीले पैक रखने और पीने के विधि	57
संतुलित हल्का आहार, जिसे चालू रखा जाए	58
रस और संतुलित हल्के आहार के लाभ	60
मूत्र चिकित्सा योगाभ्यास की प्राचीन पद्धति	64
ज्ञान एक महासागर	68

डा. बल्लाल आयुर केयर क्लीनिक

स्पेशल केयर- बाल, त्वचा, एवं एलर्जी, दमा, जोड़ों के दर्द की समस्याएं

स्टर्लिटी एवं सभी प्रकार की स्त्रीरोग समस्याएं

नंबर 34/1, 5 वीं क्रॉस, 1 वीं 'बी' क्रॉस, मल्लेश्वरम (ई), बेंगलुरू- 560003

डा. केसी बल्लाल,
बी.एस.ए.एम., बी.ए.एम.एस.
मो.नं.-09900567924
पंजीकरण संख्या 1791

डा. विमला बल्लाल
बी.एस.ए.एम., बी.ए.एम.एस.
फोन नं.-65316758
पंजीकरण संख्या 6721

डा. हमसिनी के बल्लाल
पंजीकरण संख्या 17747

दिनांक 27-10-2010

मैं डॉ. के. सी. बल्लाल 1979 से एक सर्वतोमुखी चिकित्सक (बी.एस.ए.एम. आयुर्वेद डिग्री एवं बी.ए.एम.एस. एलोपैथी कोर्स) हूँ। मैं एक पंजीकृत पेशेवर चिकित्सक हूँ। मैंने अपने करियर की शुरूआत 100 फीसदी एलोपैथी लाइन के इलाज से की। 1979 में मैं, 5 वीं मेन, छठी क्रॉस, गांधीनगर बेंगलुरु में डॉ. सी.डी. पंत की नवशक्ति आयुर्वेदिक औषधालय से जुड़ा। तब मैंने सुबह के समय आयुर्वेद की और शाम के समय एलोपैथी की डॉक्टरी शुरू की।

फिर धीरे-धीरे मुझे एलोपैथी चिकित्सा के दुष्प्रभावों के बारे में पता चला और आयुर्वेदिक लाइन के उपचार की अधिक डॉक्टरी शुरू कर दी। तब मैंने वैकल्पिक प्रणाली की चिकित्सा को प्रोत्साहित करना शुरू कर दिया, जो कि एक्यूपंक्चर, चुंबक चिकित्सा और होम्योपैथी और यूनानी जैसी प्रणालियों की तरह है। मेरा मुख्य विषय, दवा की किसी भी प्रणाली द्वारा रोगियों को अच्छे (जल्दी और सुरक्षित) परिणाम देना है। मैं अपने रोगियों को अन्य प्रणालियों और वैकल्पिक चिकित्सा के लिए उद्धृत करता हूँ।

1995 में मैंने श्री जगदीश भुरानी के माध्यम से आयुर्वेद में एक बहुत अच्छी वैकल्पिक व्यवस्था "स्व मूत्र चिकित्सा" पाई, जिसे शिवाम्बु कहा जाता है। मैं कई बीमारियों के उपचार के लिए, जैसे "गुर्दे की विफलता", स्तन कैंसर, गठिया, गंजापन, मस्कुलर डिस्ट्रोफी और मानसिक रूप से विकलांग (मंद बुद्धि) के मामलों के रोगियों को मूत्र चिकित्सा के लिए जगदीश भुरानी के पास का भेजता हूं। उन्होंने लगभग सभी मामलों में काफी सफलतापूर्वक इलाज किया है।

मेरा जनता के लिए सुझाव है कि उन्हें उपयोग और उपचार के इस प्राचीन रास्ते को अपनाना चाहिए, जैसे हमारे पूर्व प्रधानमंत्री, श्री मोरारजी देसाई ने मूत्र चिकित्सा का प्रयोग किया था। विशेष रूप से गरीब लोगों को इसे अपनाना चाहिए, क्योंकि इलाज, जिसमे कैंसर उपचार भी शामिल है, पर पैसा नहीं खर्च करना चाहिए, जिसे श्री जगदीश भुरानी ने सफलतापूर्वक संभाला है। वह मानव जाति के लिए एक बहुत अच्छी मुफ्त सेवा कर रहे हैं। तो आइये हम सब मिलकर इस मूत्र चिकित्सा को लोकप्रिय बनायें और देश की सहायता करने के लिये और दुनिया को 2020 तक स्वस्थ बनाने के लिये श्री जगदीश भुरानी के साथ हाथ मिलायें। यह निवारक और रोगहर पद्धति भी है।

(Dr. K. C. Ballal)
Member – C.C.I.M. Govt. of India, New Delhi
Past President: – N.I.M.A. All India, New Delhi

(डा. के. सी. बल्लाल)
सदस्य: सी.सी.आई.एम. भारत सरकार, नई दिल्ली
पूर्व अध्यक्ष: अखिल भारतीय एन.आई.एम.ए. नई दिल्ली

नोट- उपरोक्त पत्र डा. बल्लाल द्वारा लिखे गये अंग्रेजी के पत्र का अनुवाद है।

डा. कुमार एच. सी.
बाल रोग विशेषज्ञ
ई.एस.आई.सी. मॉडल
अस्पताल राजाजीनगर,
बेंगलुरू- 560010

दिनांक 25-05-2010

मास्टर रक्षित, जो कि अब 10 वर्ष की आयु का है, गुर्दे सिंड्रोम (गुर्दे का रोग, जिसमें मूत्र से प्रोटीन खत्म हो जाता है) से पीड़ित था। डेढ़ साल की उम्र में पहली बार इस बीमारी का पता चला। तब से उसका स्टीरियॉइड के साथ इलाज जारी था। इस इलाज के बावजूद उसमें लगातार पुनः पतन हो रहा था और वह स्टीरियॉइड पर निर्भर था।

उसके गुर्दे की बायोप्सी हुई थी और न्यूनतम परिवर्तन गुर्दे सिंड्रोम के निदान की पुष्टि की गई थी। एक बार स्टीरियॉइड बंद कर दी गई तो उसके चेहरे, पेट और पैर मे सूजन हो जाती थी, और उसे स्टीरियॉइड पर फिर से डाल दिया जाता था। हर बार स्टीरियॉइड के इस्तेमाल से उसका सिर दर्द, पेट दर्द और जोड़ दर्द बढ़ने लगा।

क्योंकि उसकी स्टीरियॉइड पर निर्भरता और लगातार पुनः पतन के कारण वह स्टीरियॉइड की कम खुराक पर 2-3 साल तक चलता रहा। इसके बावजूद उसे चेहरे, पेट और पैर की सूजन के दौरे पड़ते थे। फिर उसे 2 साल के लिए लीवामिसोल (इम्यून को ठीक करने की दवा) दी गई। उपरोक्त उपचार के बावजूद उसके गुर्दे सिंड्रोम में लगातार पुनः पतन हो रहा था। उसको अक्सर खाँसी, ठंड और जोर-जोर से सांस लेने की बीमारी हो जाया करती थी।

पीड़ा के कारण वह एक सक्रिय सामान्य जीवन व्यतीत करने में असमर्थ था और अन्य बच्चों के साथ नहीं खेल सकता था। वह नियमित रूप से स्कूल में नहीं जा सकता था और अधिकतम समय के लिये उसका आहार नमक प्रतिबंधित और नरम होता था। दिसम्बर 2008 में मैं श्री जगदीश भुरानी के संपर्क में आया, जो मूत्र चिकित्सा अभ्यास कर रहे थे और अन्य रोगियों पर परिणामों से मैं प्रभावित हो गया। तभी मैंने रक्षित को श्री जगदीश भुरानी के पास भेजा। उनके निर्देशन में "मूत्र चिकित्सा" शुरू की गई और बच्चे में 10 दिनों के भीतर सुधार होना शुरू हो गया। स्टीरियॉइड की गोलियां धीरे-धीरे कम हो गईं और उसने 3 महीने के लिए इलाज जारी रखा। अब वह स्टीरियॉइड पर निर्भर नहीं है। गुर्दे सिंड्रोम के लिए आवश्यक सभी रक्त परीक्षण और मूत्र परीक्षणों को दोहराया गया और वे अब सामान्य है।

अब उसे सभी प्रकार के दर्द, सूजन और सांस में घरघराहट जैसी समस्याओं से राहत मिल गई। अब वह एक सामान्य और सक्रिय बच्चा हो गया है और वह अन्य बच्चों के साथ खेल सकता है, जो वह पहले नहीं कर सकता था। अब वह नियमित रूप से स्कूल जा रहा है और अपनी कक्षाओं में उपस्थित होता है और अपनी कक्षा की परीक्षाओं में सबसे ऊपर आया है।

Dr. Kumar H.C.
Child Specialist
Mob: -098450 31647

डा. कुमार एच. सी.
बाल रोग विशेषज्ञ
मो.न. - 09845031647

नोट- उपरोक्त पत्र डा. कुमार द्वारा अंग्रेजी में लिखे गये पत्र का अनुवाद है।

मूत्र चिकित्सा में हर प्रकार के पुराने

रोगों का नियंत्रण / इलाज करने की शक्ति होती है

चिकित्सा शक्ति हमारे भीतर है”

लाखों लोग पुरानी बीमारी जैसे एचआईवी/एड्स, कैंसर, हृदय रोग, गुर्दे फेल होने, आदि से पीड़ित हैं। आज पूरी मानव जाति अनगिनत असाध्य रोगों से घिरी हुई है और आदमी स्वयं को बिलकुल असहाय और निराश महसूस कर रहा है। सरकार द्वारा एक सर्वेक्षण के अनुसार इस प्रकार के भयानक रोगों से प्रभावित लोग हर साल बढ़ रहे हैं। बहुत सी कोशिशों और निरंतर शोध के बावजूद वैज्ञानिक और चिकित्सा शोध विभाग तमाम रोगों का स्थाई इलाज ढूंढने में सक्षम नहीं हो सके हैं।

प्रकृति हमें वायु, जल, सूर्य प्रकाश, आदि, प्राकृतिक सुविधाएं प्रदान करती है, जो हमारे शरीर के लिए जरूरी हैं। इसके साथ हमें 'परमात्मा अमृत' मुहैया कराता है, जिसे हम 'मूत्र' कहते हैं, जो हमारे शरीर से निकलता है। मूत्र में प्राकृतिक इलाज से हर प्रकार के रोगों को नियंत्रित करने की शक्ति होती है।

“मूत्र चिकित्सा उपचार का अच्छा और सबसे सुरक्षित तरीका होता है क्योंकि इसके कोई साइड इफेक्ट यानी दुष्प्रभाव नहीं होते। मूत्र चिकित्सा हर प्रकार की लंबी बीमारियां जैसे एचआईवी/एड्स, कैंसर, गुर्दे का फेल होना, मधुमेह, रक्तचाप, मस्कुलर डिस्ट्रोफी, गठिया, सिरोसिस, बालों का झड़ना, पर्किंसंस रोग, मानसिक मंदता और सेरेब्रल पॉल्सी, आदि को नियंत्रित एवं ठीक करती है। यह प्रतिरक्षा तंत्र को मजबूत करती है, तंत्रिका विकार में सुधार लाती है, हमारे शरीर में जमा होने वाले विषैले पदार्थों को घोल कर निकालती है।

यह मृत ऊतकों को पुनर्जीवित कर सकती है, महत्वपूर्ण अंगों जैसे, मस्तिष्क, हृदय, फेफड़े, पाचक ग्रंथि, लीवर आदि की प्रतिरोधक क्षमता को पुनः विकसित करती है, और मस्तिष्क, आंतों, आदि के अंदरूनी हिस्से को सही करती है। ये हमारे शरीर में नवजीवन प्रदान करती है और लोगों के स्वास्थ्य की सामान्य रक्षा करती है।

'मूत्र चिकित्सा' की इस प्राकृतिक चिकित्सा से पूरी दुनिया में अधिकांश लोग भयानक रोगों से छुटकारा पा सकते हैं। यह एक ऐसा रामबाण है, जो सभी रोगों का समाधान करता है और हमारे अंदर है, वो आपके जीवन में बहुत सारी खुशियां भर सकती है। व्यक्ति का आत्म विश्वास और सकारात्मक दृष्टिकोण उनकी सभी समस्याओं का हल कर सकती है और वो अपने स्वस्थ और सुखी जीवन को बनाए रखने में सक्षम हो जाएंगे। फिजीशियन और डॉक्टर कहते रहते हैं कि मूत्र शरीर का जहरीला मलोत्सर्ग होता है यह बात सच्चाई से कहीं परे है। मेरे अनुभव से यह सिद्ध हो चुका है कि लगभग सभी बीमारियां मूत्र चिकित्सा से नियंत्रित एवं ठीक की जा सकती हैं, उसमें जरूरी है उपयुक्त पद्धति को नियमानुसार अपनाएं।

सूर्य की रौशनी मानव जाति के लिए प्राकृतिक उपहार है। हमें जीवित रहने के लिए और शरीर और मन में स्वस्थ होने के लिए सूर्य की रौशनी की जरूरत है। सूर्योदय के समय सूर्य प्रकाश की सकारात्मक ऊर्जा शारीरिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक चिकित्सा को बढ़ावा देने और संतुलित करने में मदद करती है। सूर्य पृथ्वी पर जीवन का सह निर्माता और निर्वाहक के रूप में माना जाता है। विश्व भर में वैज्ञानिक सूर्य की रोशनी के बराबर किसी भी अन्य मानव निर्मित वैकल्पिक शक्ति का आविष्कार या बना नहीं सकते हैं।

मूत्र "जीवन का अमृत" एक प्राकृतिक तरल है जो स्वस्थ जीवन को बनाए रखने के उद्देश्य के लिए प्रकृति द्वारा उपहार दिए गए रोगों का जड़ से इलाज कर सकता है। समान या समान रूप से शक्तिशाली प्राकृतिक तरल दुनिया में मौजूद नहीं है और ना ही बनाया जा सकता है और वैकल्पिक चिकित्सा के किसी भी अन्य स्रोत के माध्यम से या किसी भी अन्य वैज्ञानिक पद्धति के माध्यम से हासिल नहीं किया जा सकता है। मूत्र जीवन का पानी है जो आध्यात्मिक विकास और शारीरिक तंदुरुस्ती के लिए हमारे निर्माता द्वारा दिया गया प्राकृतिक उपहार है। मूत्र "चिकित्सा शक्ति है जो तुम्हारे भीतर है"। केवल आप अपने आप को स्वास्थ्य बना सकते हैं, जब तक आप अपने आप की मदद नहीं करेंगे कोई आपकी मदद नहीं कर सकता।

मूत्र शरीर के भीतर और बाहर सभी रोगों के लिए एक वैश्विक और उत्कृष्ट उपाय है। यह जहर का मारक है और वी.आई.टी., पिट, के.ए.एफ.एफ.ए. से उत्पन्न सभी रोगों और जहर को नष्ट कर देता है और यह पाचन को सुधरता है और शरीर मजबूत हो जाता है। शरीर से अपशिष्ट उत्पादों और विषाक्त पदार्थों को हटाने के द्वारा और शरीर के रक्षात्मक तंत्र को उत्तेजक भी करते हुए यह बीमारी का इलाज करता है। यह कीड़े और अन्य जहरीली डंकों पर शानदार काम करता है। यह गर्भावस्था समस्या के सभी प्रकार, अत्यधिक मासिक धर्म, और गर्भाशय में ट्यूमर के लिए काम करता है। यह आंखों की कई बीमारियों, आंतों के कीड़े, स्कार्लेट ज्वर और सभी त्वचा रोगों को नष्ट कर देता है।

मूत्र स्वस्थ जीवन को बनाए रखने के उद्देश्य के लिए प्रकृति द्वारा उपहार में दिया गया है। यह रोगों के सभी प्रकार की चिकित्सा और अच्छे स्वास्थ्य को बनाए रखने की एक पूरी तरह से औषधि रहित प्रणाली है। यह रक्त को शुद्ध करता है और जीवन को नई अवधि देता है।

मूत्र आवश्यक यौगिकों, विटामिन, हार्मोन और सभी बहुमूल्य खनिजों, लवण और रासायनिक यौगिकों जो मानव शरीर के विकास और रखरखाव के लिए बहुत आवश्यक हैं शामिल करता है। मूत्र शक्ति का वाष्पशील लवण एसिड को पूरी तरह से अवशोषित करता है और मानव शरीर में अधिकतम बीमारी को एकदम जड़ को नष्ट कर देता है।

मूत्र का स्वाद और रंग निर्भर करता है, कि क्या हम पीते हैं और खाते हैं। व्यक्तियों को इससे जुड़े कलंक पर काबू पाना होगा और उचित विधि, तकनीक, आवश्यक आहार और उपचार के तरीके को समझना होगा। जब हम शुद्ध पानी से हमारे वाहिकाओं या गंदे कपड़ों को धोते हैं, पानी गंदा हो जाता है जिसे नाली में फेंका जाता है। इसी तरह अगर हम हमारे भोजन में तेल, नमक, और मिर्च शामिल करते हैं तो हम पीले रंग का मूत्र प्रसाधन करते हैं और यह गंध से युक्त होता है जिसे फेंका जाता है। लेकिन अगर हम इससे बचे और हमारे भोजन में तेल, नमक, और मिर्च शामिल ना करें और संतुलित हल्का आहार लें, पानी और जूस कॉफी पियें तो हम शुद्ध पानी की तरह बेरंग मूत्र प्रसाधित करेंगे जो एकाधिक विटामिन से युक्त होता है। यह अनुमान है कि दुनिया में 8,000 से अधिक रोग हैं। वहाँ चिकित्सा, उपचार की वैकल्पिक और समग्र विधि की विभिन्न संख्या हैं। उपचार के लिए प्रदान की गईं कुछ दवाओं का बीमारी का इलाज करने के लिए सीमित प्रभाव है और कुछ दवाओं के साइड इफेक्ट हैं।

मूत्र रक्त का पनिहल हिस्सा होता है। चूंकि मूत्र खून से आता है, इसलिये यह किसी के भी स्वास्थ्य को बेहतर बनाता है, जो एक दूसरे का मूत्र पीते हैं बशर्ते वे उचित आहार लेने के बाद विसर्जित किया जाये। जिस व्यक्ति को अपना मूत्र इकठ्ठा करने में कठिनाई हो या वो असमर्थ हो, उसे एक स्वस्थ व्यक्ति का मूत्र पिलाया जा सकता है या मला जा सकता है।

एक व्यक्ति किसी अन्य स्वस्थ व्यक्ति का मूत्र पी सकता है, क्योंकी इसके बराबर कोई अन्य उपाय नहीं है। यह चिकित्सा शक्ति है जो अद्भुत है और एक व्यक्ति आध्यात्मिक तरह से इसे समझता है, जिसका व्यक्तिगत रूप से ही अनुभव किया जाता है।

माँ अपना सफेद रंग का मूत्र (पानी की तरह रंग हीन) इकट्ठा कर सकती है और अपने बच्चे को यह अपने शरीर से निकालने के तुरंत बाद पीने के लिए दे सकती बशर्ते जब वह अधिक पानी पिए और केवल हल्का और संतुलित आहार खाए। इस विधि को अपनाया जा सकता है और मूत्र बच्चों और अन्य लोगों को दिया जा सकता है, जो सेरेब्रल पाल्सी और मानसिक विकार जैसी बिमारी से जन्म से प्रभावित हैं। मूत्र अन्य व्यक्तियों को भी दिया जा सकता है जिनका इलाज चल रहा है और वे अपना मूत्र पीने में असमर्थ हैं और जो किसी भी तरह के जीर्ण रोग से पीड़ित हैं या जिनका टर्मिनल और अंतिम चरण के साथ का निदान किया गया हो।

- मूत्र बहुत प्रभावी चिकित्सा साधन और शक्तिशाली प्राकृतिक उपचार है।
- इसमें सभी प्रकार के पुराने रोगों का इलाज करने की प्राकृतिक शक्ति है।
- प्रतिरक्षा प्रणाली को बढ़ा सकता है, तंत्रिका विकार में सुधार कर सकता है, और हमारे शरीर में विषाक्त पदार्थों को घोल कर हटा सकता है।
- यह मृत ऊतकों को पुनर्जीवित कर सकता है, मस्तिष्क, हृदय, फेफड़े, अग्न्याशय, लीवर और आंत आदि महत्वपूर्ण अंगों की प्रतिरोध शक्ति का पुनर्निर्माण कर सकता है।
- यह हमारे शरीर को फिर से जवान बना देता है और लोगों के सामान्य स्वास्थ्य को सुरक्षित करता है।
- यह पुराने रोगों के सभी प्रकार के उपचार की एक पूरी तरह से औषधि रहित प्रभावी प्रणाली है।
- उपचार का सबसे सुरक्षित तरीका है, जिसके कोई साइड इफेक्ट नहीं हैं।

- यह अधिक शक्तिशाली है और कीमोथेरेपी और विकिरण की तुलना में इसके और अधिक लाभ हैं।
- यह अन्य सक्रिय स्वस्थ कोशिकाओं को नष्ट करे बिना कैंसर की कोशिकाओं को मार सकता है।
- यह कीमोथेरेपी के दुष्प्रभावों को कम भी कर सकता है।
- जीर्ण रोग से पीड़ितों को जीवन की एक नयी अवधि दे सकता है।
- यह उपचार के सकारात्मक तरीकों में से एक है और यह वैकल्पिक चिकित्सा की तुलना में एक छोटी अवधि में सभी बीमारियों का नियंत्रण और इलाज कर लेता है।

मूत्र चिकित्सा कैंसर का नियंत्रण और इलाज कर सकती है। यह अधिक प्रभावी है और विकिरण और कीमोथेरपी की तुलना में इसके और अधिक लाभ हैं। यह कैंसर कोशिकाओं के विकास को नष्ट कर सकती है और उन्हें शरीर के अन्य भागों में फैलने से रोक सकती है। यह किसी भी दुष्प्रभाव के बिना कैंसर कोशिका में जहरीला पदार्थ मार सकती है। यह रक्त आधान के लिए प्रभावी स्वाभाविक विकल्प भी है।

उन व्यक्तियों को, जो जीर्ण रोग से पीड़ित हैं मूत्र पीने, पेशाब के साथ शरीर की मालिश, शरीर पर मूत्र से गीले पैक रखने, पानी, रस पीने और संतुलित हल्के आहार को बनाए रखने के द्वारा मूत्र चिकित्सा अपनानी चाहिए। व्यक्ति, जिन्होंने मूत्र चिकित्सा को अपनाया है, वे 3 दिनों के लिये "सख्त मूत्र उपवास" से गुजर सकते हैं, यानी इलाज के दौरान सिर्फ पानी और मूत्र पीना। बेहतर और तेजी से परिणाम प्राप्त करने के लिए मूत्र उपवास 7 दिन बाद दोहराया जा सकता है। सर्जरी, विकिरण चिकित्सा और रसायन के साथ कैंसर का पारंपरिक रूप से इलाज किया जाता है। लेकिन आंकड़े बताते हैं कि यह उपचार कैंसर के इलाज के लिए अपनी प्रभावशीलता में सीमित रहते हैं और साइड इफेक्टस से भरे होते हैं।

कीमोथेरेपी के संभावित लाभ होते हैं जो शरीर के अन्य भागों में फैली कुछ कैंसर की कोशिकाओंको को कम कर सकते हैं या मार सकते हैं। यह शरीर में ट्यूमर सिकोड़ने में भी कुछ हद तक मदद करती है।

कीमोथेरेपी के कुछ साइड इफेक्ट हैं क्योंकि यह कैंसर कोशिकाओं के साथ साथ स्वस्थ कोशिकाओं को मारती और नष्ट कर देती है। बालों के झड़ने, उल्टी, पेट में दर्द, संक्रमण, नसों और मांसपेशियों में दर्द, सफेद रक्त कोशिकाओं और शरीर में लाल रक्त कोशिकाओं की कमी के परिणामस्वरूप उपचार के साइड इफेक्ट के कारण कई विभिन्न जटिलताएं उत्पन्न होती हैं। **मूत्र चिकित्सा के कोई साइड इफेक्ट नहीं है।**

एक छोटी अवधि में अधिक लाभ और सकारात्मक परिणाम प्राप्त करने के लिए यह उन व्यक्तियों द्वारा अपनायी जा सकती है जो सर्जरी और कीमोथेरेपी करवा रहे हैं। जो लोग पहले से ही सर्जरी और कीमोथेरेपी करवा चुके हैं, वे छोटी अवधि में अधिक लाभ और सकारात्मक परिणाम प्राप्त करने के लिए मूत्र चिकित्सा को अपना सकते हैं। वे डॉक्टरों द्वारा कीमोथेरेपी कराने की सलाह के साथ-साथ एक ही समय में मूत्र चिकित्सा जारी रख सकते हैं।

यह कीमोथेरेपी के दुष्प्रभावों को घटा और कम कर सकती है और उन्हें तेजी से ठीक करने में मदद कर सकती है। यह उनकी प्रतिरक्षा प्रणाली सुधारेगी, स्वस्थ रक्त कोशिका का निर्माण करेगी और उनकी प्रतिरोध की शक्ति में वृद्धि करेगी। "मूत्र चिकित्सा" उनके जीवन को एक नयी अवधि दे सकती है और उनके सभी प्रकार के कष्टों को दूर कर सकती है।

वे व्यक्ति, जो कीमोथेरेपी करवा रहे हैं अस्पताल में इलाज के दौरान किसी अन्य स्वस्थ व्यक्ति का मूत्र पी सकते हैं। इससे उन्हें कीमोथेरेपी के दुष्प्रभाव की वजह से उठने वाली विभिन्न जटिलताओं को कम करने में मदद मिलेगी।

वे कीमोथेरेपी के 24/36 घंटे बाद अपना मूत्र भी पी सकते हैं बशर्ते वे खूब पानी पीते रहें। वे अपने स्वयं का मूत्र पी सकते हैं, जब भी वे पायें कि उनका मूत्र रंगहीन है और उसमें कोई भी गंध नहीं है।

डॉक्टर और कर्करोग विशेषज्ञ उन रोगियों को, जिनका कैंसर के विकसित और चौथे चरण के साथ निदान किया गया है, कीमोथेरेपी या किसी भी अन्य उपचार की सलाह नहीं देते। उन्हें लगता है कि उनके जीवित रहने की संभावना बहुत कम है, और मरीज कीमोथेरेपी के दुष्प्रभाव का सामना करने में सक्षम नहीं होगा। डॉक्टर उनके जीने की उम्मीदें छोड़ देते हैं और उन्हें रोग के लक्षण कम करने वाली दवा लिख देते हैं। रोग के लक्षण कम करने वाली कीमोथेरेपी और दवा कुछ हद तक दर्द को कम करने में और जब तक वे जीवित रह सकते हैं उन्हें मुश्किल हालात में मदद करती है। यह किसी भी बीमारी का इलाज नहीं होता।

मूत्र चिकित्सा उन व्यक्तियों द्वारा अपनायी जा सकती है, जिनका कैंसर चौथे स्टेज पर पहुंच गया हो, जिनमें किसी भी अन्य दवा की प्रतिक्रिया नहीं होती है। जब मूत्र चिकित्सा एक उचित विधि में अपनायी जाती है, तो इसके प्रभाव और लाभ एक छोटी सी अवधि में प्रतिक्रिया शुरू कर देते हैं। यह कैंसर कोशिकाओं को मार सकती है और उन्हें शरीर के अन्य भागों में फैलने से रोकती है और उन्हें उनसे होने वाले कष्टों से राहत दिलाती है।

रोग के लक्षण कम करने वाली कीमोथेरेपी शक्तिशाली या एक मजबूत इंजेक्शन नहीं है। इसके लाभ और साइड इफेक्ट सीमित हैं। यह कैंसर का इलाज नहीं है। यह सौम्य/हल्के इंजेक्शन हैं, कैंसर की कोशिकाओं को सिकोड़ने में कुछ लाभ पहुंचाते हैं और यह मूत्र चिकित्सा के साथ दिए जाने पर कैंसर का इलाज करने में मददगार और सहायक तरीका बन सकते हैं।

मूत्र चिकित्सा रोग के लक्षण कम करने वाले इंजेक्शनों के साइड इफेक्ट को और कम कर सकती है, जो कैंसर रोगी को आखिरी चरण में दिया जाता है।

*** डॉक्टर उन रोगियों के जीवित रहने की उम्मीद छोड़ देते हैं, जो रोग के लक्षण कम करने वाला उपचार पर होते हैं। वे उन्हें रोग के लक्षण कम करने वाली चिकित्सा की सलाह सिर्फ अपने दर्द को कम करने और मुश्किल स्थिति पर काबू पाने के लिए देते हैं। व्यक्ति जो रोग के लक्षण कम करने वाला उपचार/दवा ले रहे हैं वे भी मूत्र चिकित्सा को अपना सकते हैं। यह अपने दर्द और दुख को राहत देने के लिए और उनके जीवन की अवधि में वृद्धि कर सकते हैं।**

*** डॉक्टरों को इस तथ्य पर विश्वास करना चाहिए कि "मूत्र प्राकृतिक दैवीय उपचारात्मक शक्ति है" और इसमें केवल एक प्राकृतिक उपाय है जो रोगों के विभिन्न प्रकार का इलाज कर सकता है। रोगियों के प्रशंसापत्र और चिकित्सा परीक्षण रिपोर्ट के प्रमाणों ने इस तथ्य को साबित कर दिया है।**

*** डॉक्टर इलाज के दौरान खुद की विधि को अपना सकते हैं, लेकिन उसके साथ-साथ जब तक रोगियों का इलाज चल रहा हो और उन्हें उनके कष्टों से मुक्त नहीं मिल जाए उन्हें प्राकृतिक उपचार की विधि के लिए किसी भी प्रकार की रोक नहीं लगानी चाहिए।**

*** डॉक्टरों को पुरानी बीमारी से पीड़ित रोगियों को मूत्र चिकित्सा अपनाने की सिफारिश और सलाह देनी चाहिए। यह लाखों लोगों के जीवन को बचा सकता है और उन्हें उनके कष्टों से मुक्त कर सकता है। यह उनके जीवन को नई अवधि दे सकता है। कई मामलों में, अगर मूत्र चिकित्सा प्रारंभिक चरण में अपनायी जाए तो रोगी सर्जरी और कीमोथेरेपी से बच सकते हैं बशर्ते वे उचित तरह से उपचार की विधि का पालन करें।**

मधुमेह :- अनुमान है कि 5.8 करोड़ लोगों से ऊपर हैं जो भारत में मधुमेह रोगी हैं। मधुमेह दुनिया में लगभग हर जगह आम है। यह कई पुराने रोगों की जड़ माना जाता है। मधुमेह का इलाज, रोकने और नियंत्रण के लिए मूत्र चिकित्सा उपचार की सबसे सुरक्षित और आसान विधि है। यह हृदय रोग, उच्च रक्तचाप और मधुमेह रेटिनोपैथी को शामिल करते हुए मधुमेह से उत्पन्न होने वाली अन्य सभी जटिलताओं को सुरक्षित करता है।

एचआईवी /एड्स एक ऐसी बीमारी है, जिसमें लोग धीरे-धीरे प्रतिरक्षा प्रणाली की कमी का शिकार होने लगते हैं और संक्रमित रोग पर दवाईयों का असर नहीं होता और रोगी का स्वास्थ्य दिन ब दिन खराब होता जाता है। प्रतिरक्षा क्षमता की कमी के कारण एचआईवी/एड्स रोगियों में सीडी4 की संख्या में धीरे-धीरे कम होने लगती है।

मरीज का स्वास्थ्य दिन पर दिन गिरता जाता है और वह विभिन्न प्रकार के विकारों से गुजरता है। डॉक्टर उन्हें कुछ दवाएं लेने और एंटी-रेट्रोवायरल चिकित्सा 'एआरटी' की सलाह देते हैं, जो प्रतिरक्षा प्रणाली की गिरावट को टालने में मदद करती है। हालांकि आज भी जब तक चिकित्सा विज्ञान के मुताबिक कोई इलाज नहीं होता तो उनका कष्ट बढ़ ही जाता है।

मूत्र थेरेपी एंटी रेट्रोवायरल थेरेपी "एआरटी" से अधिक शक्तिशाली है। यह एचआईवी/एड्स रोगियों के स्वास्थ्य की गिरावट पर नियंत्रण और उनकी ऊर्जा शक्ति में सुधार कर सकती है। यह एचआईवी/एड्स का नियंत्रण और इलाज कर सकती है और उन्हें अन्य सभी विभिन्न समस्याओं से राहत देती है। यह उनकी प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत बना सकती है और उनकी सीडी4 संख्या को बढ़ा सकती है। कुछ लोग जिनकी सीडी4 गणना 50 की तरह कम है वे 800 और इससे ऊपर अपनी सीडी गणना को बढ़ा सकते हैं।

सेरेबरल पॉल्सी, मानसिक मंदता-विकलांगता जन्म से मस्तिष्क क्षति के कारण मस्तिष्क में निष्काम एवं ऐठन होती है, जो पक्षाघात का कारण है और उसके परिणाम स्वरूप न्यूरॉन-मस्कुलर स्कोलिओसिस (रीढ़ की हड्डी में झुकाव) होता है। इसमें हाथ-पैर मुड़ जाते हैं और घुम नहीं पाते या बिना सहारे के नियंत्रित नहीं होते। वे सुन, देख व खड़े नहीं हो पाते।

मूत्र चिकित्सा में सेरेब्रल पालसी सहित हर प्रकार की बीमारियों को पैदा होते ही नियंत्रित एवं उसका इलाज करने की शक्ति होती है। बच्चे जो, जन्म से ही सेरेब्रल पाल्सी से प्रभावित होते हैं वो चलने और बैठने, खड़े होने, बोलने और सुनने में असमर्थ होते हैं वो बैठने, खड़े होन व चलने लगते हैं। वे बोलने, सुनने, ध्वनि पर प्रतिक्रिया देने व व्यक्तियों की पहचान करने में सक्षम हो जाते हैं। यह स्मृति, बुद्धिमता औरमस्तिष्क के विकास को बढ़ावा दे सकती है और शरीर की भौतिक विकृति में सुधार करती है। मुड़े हुए हाथ और पैर सीधे हो जाते हैं और उनके शरीर में मांसपेशियां विकसित हो जाती हैं।

मूत्र चिकित्सा

मूत्र चिकित्सा कोई नई नहीं है, बल्कि यह युगों से सिद्ध पूरी तरह से औषधि रहित प्रणाली की एक विधि है, जो बहुत से रोगों का उपचार तथा उसका संसाधन करती है, जो की निरंतर पीढ़ी दर पीढ़ी से चला आ रही है। हर सभ्यता के लोगों में मूत्र का अमृत की तरह गुण जाना जाता है। यहाँ मूत्र के कई संदर्भ जैसे दिव्य स्वास्थ्य को प्रदान करना और अति सामान्य शक्तियां "योगिक और तांत्रिक" किताबों में हैं। मूत्र में रासायनिक यौगिक होते हैं, जो मानव शरीर के स्वास्थ्य के विकास को बनाए रखने के लिए अत्यंत आवश्यक होते हैं। वास्तव में यह दुनिया में उपलब्ध होने वाला सबसे अच्छा प्राकृतिक शक्तिवर्धक पेय है। मूत्र में कुछ अस्थिर लवण होते हैं, जो बहुत फायदेमंद होते हैं।

यह लवण शक्तिशाली एसिड का अवशोषण प्रबलता से करते हैं और मानव शरीर में बहुत से रोगों को मिटा देते हैं, और परिणाम स्वरुप शरीर की कई मुसीबतें जड़ से ठीक हो जाती हैं।

मूत्र शरीर के हर बाह्य और आंतरिक रोग के लिए सबसे अच्छा उपाय है। यह जहर और आंतों के कीड़े नष्ट कर देता है। यह नया जीवन देता है, रक्त को शुद्ध करता है और त्वचा की समस्याओं को साफ करता है। यह आंखों के रोग नष्ट कर देता है, शरीर को मजबूत बनाता है, पाचन में सुधार और खांसी और जुकाम को समाप्त कर देता है।

मूत्र फेफड़े, अग्न्याशय, लीवर, मस्तिष्क, हृदय, आदि सहित सभी महत्वपूर्ण अंगों का पुनर्निर्माण और मरम्मत करता है। मूत्र दंत चिकित्सा और अन्य मौखिक कष्टों में भी प्रभावी है। मूत्र सबसे अच्छा प्राकृतिक शक्तिवर्धक पेय है, मूत्र पीने से गुर्दे के रोग, जिगर और पित्त, जलोदर, साइनस का रुकना, पीलिया, प्लेग, और अन्य जहरीले बुखार ठीक हो रहे हैं। बाह्य रूप से लगाने से यह त्वचा को साफ़ और रूसी का इलाज करता है तथा कँपन, सुन्न, और पक्षाघात के विरुद्ध उत्तम है। शरीर पर मूत्र लगाने से त्वचा के जटिल रोग पूरी तरह से ठीक हो जाते हैं और त्वचा साफ तथा नरम हो जाती है।

मूत्र चिकित्सा सभी "A से Z" समस्याएं
आम सर्दी से लेकर कैंसर तक
सभी के लिए उत्तम उपाय है।

मूत्र चिकित्सा के प्राचीन संदर्भ

वेदों में प्राचीन पुस्तक "दमर तंत्र" में उल्लेखित किया गया है कि भगवान शिव ने स्वयं माँ पार्वती को "मूत्र चिकित्सा के लाभ" गिनाए थे। प्राचीन पुस्तकों और वेदों में, मूत्र को "शिवांबु" (स्वत: मूत्र) अर्थात शिव का जल। मूत्र चिकित्सा यानी मूत्र चिकित्सा उपचार की प्राचीन पद्धति है। उपचार के लिए शक्तिशाली तरीके "स्व मूत्र चिकित्सा" को "शिवांबु कल्प विधि", जो 5000 साल पुराना दस्तावेज है और दमर तंत्र इस अभ्यास को हिन्दू ग्रंथ वेदों से जोड़ता है, उसमें इसे उल्लेखित किया गया है।

अयुर्वेद के लगभग सभी भागों में मूत्र चिकित्सा उल्लेखित किया गया है और उनमें से एक भावप्रकाश में यूरीन को "विषघन", यानी सभी जहर को मारने वाला और "रसायना" कहा गया है जो यहां तक बूढे लोगों को भी जवान बना सकता है और "रक्तापामहाराम", जो रक्त का शुद्धिकरण करता है और सभी त्वचा रोगों का इलाज करता है।

तांत्रिक योगा संस्कृति में इस अभ्यास को "अमरोली" कहा जाता है। अमरोली, मूल शब्द से "अमर" से बना है। वे "शिवांबु" को पवित्र तरल कहते हैं। उनके मुताबिक मूत्र दूध से भी अधिक पौष्टिक होता है, जैसा कि आप भौतिक रूप से न केवल लाभान्वित होंगे, बल्कि आप आत्मिक उन्नत हो जाएंगे क्योंकि यह शरीर, मस्तिष्क और आत्मा के लिए अमृत है। भगवान ने हमें इस अनमोल उपहार (मूत्र) सीधे जन्म से दिया है। कहावत 5:15 पवित्र बाइबल में भी उल्लेखित है: - "अपनी खुद की टंकी से पानी पियो।"

प्राचीन अवतरण

"एक वृहत आत्मा इसकी जरूरत जानती है और अपने को उसी के अंतर्गत ले जती है।"

"स्वत: मूत्र दिव्य अमृत है"

– भगवान शिव - (उमर तंत्र से)

उपाय: -

"आपकी दवा आपके अंदर है, और आपने इसे देखा नहीं।"

आपकी बीमारी आपके अंदर से है, लेकिन आप इस पर ध्यान नहीं देते।

- हज़रत अली –

"थेन के अपने कुछ से निकलने वाले पान को पिएं"

– कहावत 5:15 -(पवित्र बाइबिल)

मूत्र थेरेपी का संदर्भ आयुर्वेद अर्थात सुश्रुत, हरित, भावप्रकाश, योगरत्नाकर, रजनीघंटू, वाग्भट्ट, धनवंतरी निघंतु और भैशज रत्नावली, कई और अधिक के लगभग सभी संस्करणों में पाया जाता है। शिवाम्बू कल्प विधि में जो (श्लोक) छंदों वाले दमर तंत्र का हिस्सा है, में जड़ी बूटियों के साथ मूत्र चिकित्सा की प्रक्रिया और नियमों का विस्तृत वर्णन है।

विद्वान जैन आचार्य भाद्रबाबू द्वारा "व्यव्हारसूत्र" के 41 और 42 श्लोक यह भी उल्लेख करते हैं कि व्रत लेते हुए या धार्मिक अनुष्ठान का नियमित प्रदर्शन करते हुए एक व्यक्ति को अपना ही मूत्र पीना चाहिए। तांत्रिक योग संस्कृति में इस अभ्यास को "अमरोली" कहा जाता है। अमरोली जड़ शब्द अमर से आया है, जिसका मतलब है अमरत्व, अमर, अविनाशी, अमरोली, इसलिए थोड़ी बहुत अमरता लाने के लिए बनाई गयी तकनीक थी। अमरोली मूलतः उपचार की एक विधि के बजाय एक आध्यात्मिक अभ्यास था। वे इसे एक पवित्र तरल के रूप में पुकारते थे जिसे "शिवांबु" कहते हैं। उनके मुताबिक मूत्र, दूध की तुलना में अधिक पौष्टिक है।

यहां तक कि पश्चिमी देशों में मूत्र के शानदार औषधीय मूल्य और प्रभावकारिता से लोग वाकिफ हैं, जो पुराने रिकॉर्ड से स्पष्ट है। एक पुस्तक "एक हजार उल्लेखनीय बातें" इंग्लैंड, स्कॉटलैंड और आयरलैंड में प्रकाशित हुई। साथ ही साथ उन्नीसवीं सदी की शुरुआत में वहाँ मूत्र चिकित्सा के कई महत्वपूर्ण और उपयोगी संदर्भ उपलब्ध हैं।

24 अक्टूबर 1967 को सेन फ्रांसिस्को (यूएसए) की चिकित्सा पत्रिकाओं में प्रकाशित प्रेस रिपोर्ट कि सामान्य मानव मूत्र में कैंसर, क्षय रोग, फेफड़े और हृदय संवहनी रोगों, आदि जैसे घातक रोग का इलाज करने के लिए अद्भुत चिकित्सा संपत्ति पाई गयी है। रिसर्च चिकित्सकों ने अमेरिकन हार्ट एसोसिएशन के वैज्ञानिक सत्र में कहा कि "मानव मूत्र का एक सत् कुछ घातक बीमारियों के इलाज के लिए बेहतरीन द्रव्य है" और सत् को यूरोकिनेस कहते हैं। जापान और चीन में फार्मास्युटिकल कंपनियां मूल्यवान पदार्थ "यूरोकिनेस" को मानव मूत्र से निकाल रही हैं और अन्य देशों को निर्यात करके मूल्यवान विदेशी मुद्रा कमा रही हैं। दिल और फेफड़ों की बीमारी में रक्त के थक्के को भंग करने के लिए उपयोगी है। यूरोकिनेस का संदर्भ चार विद्वान अमेरिकी डॉक्टरों द्वारा लिखित 1354 पृष्ठ पर बड़े दस्तावेज में है। पुस्तक का नाम है "गुडमैन एंड गिलमैन्स दि फार्माकोलॉजिकल बेसिस ऑफ थेरेप्यूटिक्स" जो मैकमिलन प्रकाशन कंपनी न्यूयॉर्क द्वारा प्रकाशित की गई।

यह एक जाना माना तथ्य है कि कुछ लोग गाय का मूत्र पीते हैं और दर्द व पीड़ा से उन्हें राहत मिलती है। लोग को एक छोटी मात्रा में गोमूत्र सीधे पीते हैं। कुछ लाभ पाने के लिए वे आयुर्वेद और होम्योपैथी दवाएं भी लेते हैं, जो गोमूत्र की छोटे मात्रा से युक्त होती हैं। गोमूत्र को "पवित्र मूत्र" कहते हैं, लेकिन फिर भी वे गोमूत्र बड़ी मात्रा में सीधे नहीं पी सकते हैं। वहीं जो लोग जो लोग "मूत्र चिकित्सा" को स्वीकार करते हैं और अपना लेते हैं, वे अपना ही मूत्र बड़ी मात्रा में पी कर उसके अधिकांश लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

उन्हें यह देखना होता है कि वे सफेद रंग के मूत्र (रंगहीन जैसे पानी) का निस्तारण करें और एकत्र करें, जिसमें किसी भी प्रकार की गंध नहीं आती है और उसका स्वाद पानी की तरह होता है।

मूत्र विश्लेषण और अनुसंधान से पता चलता है कि हमारे अपने मूत्र (स्वत: मूत्र) और गोमूत्र में समान बहुमूल्य प्रोटीन मौजूद होते हैं:-क्रिएटिनाइन, यूरिया-एन(नाइट्रोजन), यूरिया, सोडियम, पोटेशियम, कैल्शियम, मैग्नेशियम, अमोनिया-एन, क्लोराइड, एन/10 एसिड और विटामिन और अन्य हार्मोन है जो शरीर और स्वास्थ्य के रखरखाव के लिए महत्वपूर्ण हैं।

जब हम शब्द "मूत्र" की बात करते हैं, कई लोग विषय की अनदेखी करना पसंद करते हैं और वे इसेसे जुड़ीं नकारात्मक बातों के कारण चर्चा की इच्छा प्रकट नहीं करते। उन्हें इसकी बहुमूल्य जबरदस्त क्षमता और बहुत सारे फायदे नहीं पता होते हैं, जिसमें "प्राकृतिक चिकित्सा शक्ति" होती है। उन्हें सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास करना चाहिए, हमारे भीतर प्राकृतिक चिकित्सा शक्ति का एहसास होना चाहिए, इस प्रेरणा को बढ़ाएं और हंसते हुए मूत्र चिकित्सा को मानें और अपनाएं। उन्हें इसे से जुड़े नकारात्मक पहलुओं को दूर करना चाहिए और अन्य लोगों को "यूरीन थेरेपी" से प्राकृतिक लाभ प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित भी करना चाहिए। मूत्र चिकित्सा उपचार की प्राचीन पद्धति है। प्राचीन काल में साधु और ऋषिमुनि मूत्र चिकित्सा एक सक्रिय स्वस्थ जीवन का आनंद पाने के लिए और 300 से अधिक वर्षों की लंबी अवधि तक जीने के लिए मूत्र चिकित्सा का नित्य प्रयोग करते थे।

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री मोरारजी देसाई मूत्र थेरेपी का पालन करते थे और वो हमेशा स्वस्थ्य रहे व जीवन के अंतिम समय तक स्वस्थ जीवन बिताया। कई महान हस्तियां है, जो इसका प्रयोग कर स्वस्थ्य जीवन यापन करते रहे। आज भी पूरी दुनिया में लाखों मूत्र चिकित्सा का प्रयोग कर रहे हैं। लेकिन वे इसके अधिकतम लाभ पानेकी उचित विधि नहीं जानते।

मेरा व्यक्तिगत अनुभव

वर्ष 1990 में मैं पुराने ऑस्टियोआर्थराइटिस और हड्डियों में गंभीर कमजोरी के कारण अस्पताल में भर्ती हुआ। मैं "स्टीरियॉइड" गोलियों के दुष्प्रभावों के कारण बीमारी से ग्रसित हो गया था। वो गोलियां मैं बाएं पैर में एक्जिमा के लिए लंबे समय से खा रहा था। अस्पताल में तीन हफ्ते तक भर्ती होने के बावजूद मैं ठीक नहीं हो सका, मुझे खड़े होने व चलने में कठिनाई होती थी। मेरे एक हितैशी ने मुझे मूत्र चिकित्सा अपनाने की सलाह दी और मुझे कुछ पुस्तकों का सुझाव दिया:-

1. वॉटर ऑफ लाइफ - लेखक आर्मस्ट्रांग
2. मिरैकल्स ऑफ यूरीन थेरेपी- लेखक डॉ. सी.पी. मित्तल, एमडी

मैंने उपरोक्त पुस्तकों को पढ़ा और मूत्र चिकित्सा शुरू कर दी। मैं दिन में दो बार मूत्र से अपने शरीर की मालिश करता था और अपना पूत्र पीता था। धीरे-धीरे मैंने लाभ प्राप्त किए, मेरी सहनशक्ति वापस आ गई और 30 दिनों के भीतर मैं पूरी तरह ठीक हो गया और एक्जिमा भी पूरी तरह सही हो गया।

मेरी पत्नी द्रौपति भुरानी मधुमेह और तंत्रिका समस्या से पीड़ित थीं। तंत्रिका समस्या के कारण कभी-कभी वह बहुत कमज़ोर हो जातीं और बिस्तर से उठ तक नहीं सकती थीं। उस समय वह अपनी उंगलियों में संवेदनशून्यता और कमजोरी महसूस करने लगी थीं और वह कलम या चम्मच तक अपने हाथ से पकड़ने में असमर्थ थीं। अपने मूत्र की मालिश करने के एक घंटे बाद वह अपने शरीर में ऊर्जा महसूस करने लगीं और वह अपने बेड से खुद उठने लगीं और कलम पकड़ने व कागज पर लिखने लगीं। अपने को स्वस्थ्य रखने के लिए वह अपना मूत्र रोजाना पीती थीं।

उन्होंने इस इलाज को अपनाया और वह अन्य लोगों के साथ उत्साहपूर्वक चर्चा करने लगीं। उन्होंने मुझे "मूत्र चिकित्सा" में खास रुचि लेने की प्रेरणा दी। अपनी पत्नी के साथ मैंने भी वर्ष 1993 में गोवा में आयोजित प्रथम ऑल इंडिया कॉन्फ्रेंस ऑफ यूरीन थैरेपी में भाग लिया। तब से मैं पुराने रोगों से पीड़ित व्यक्तियों को सलाह एवं मुफ्त समाज सेवा प्रदान करने लगा।

जुलाई 2006 में मैंने पहले "मूत्र चिकित्सा का लाभ" पर अपना 2 प्रष्टों का लेख तैयार किया और जीर्ण रोग से पीड़ित लोगों को उसकी प्रतियाँ वितरित की। मैं उन्हें उचित विधि, तकनीक, उपचार की विधि और आवश्यक आहार के बारे में समझाता था। जिन्होंने मेंरे लेख पढ़े और सही उपचार की उचित विधि को अपनाया उन लोगों ने मूत्र चिकित्सा के व्यापक लाभ प्राप्त किए।

चेन्नई की श्री अंगाला परामेश्वरी माता ने मुझे आशीर्वाद प्रदान किया और ईश्वर ने मुझे मूत्र चिकित्सा के लाभ का उचित ज्ञान प्राप्त करने की दिव्य शक्ति से प्रबुद्ध किया।

व्यावहारिक अनुभव और गहरी रुचि के साथ मैने अध्ययन किया, जांच की और मूत्र चिकित्सा के अधिकतम लाभ प्राप्त करने की उचित विधि और तकनीक ढूंढ निकाली, जिसका पालन बच्चों समेत सभी लोगों ने किया। व्यक्ति जो मूत्र चिकित्सा को अपनाने के बाद उसे स्वेच्छा से उत्साहपूर्वक व्यवहार में लाते हैं वे इस दिव्य ज्ञान को बढ़ा सकते हैं और व्यवहारिक अनुभवों से अपने खुद के डॉक्टर बन सकते हैं।

मैंने "कुछ रोगियों के केस हिस्टरी" प्रस्तुत की है जो विभिन्न रोगों से पीड़ित थे जहां डॉक्टरों ने उनके स्वास्थ्य की गिरावट को रोकने की उम्मीद छोड़ दी थी और उनके रोग का इलाज नहीं कर पाए थे। सभी रोगी जो वहाँ भेजे गए थे। उन्होंने महान लाभ हासिल किया है और उन्हें दर्द और पीड़ा से राहत मिली है।

मूत्र एक प्रकार का "सीरम" है जो रक्त निस्पंदन या रक्त का पनिहल हिस्सा होता है, न कि अपव्यय निस्पंदन। "मूत्र चिकित्सा" सबसे प्रभावी प्राकृतिक उपाय है जिसका कोई भी दुष्प्रभाव नहीं होता। यह पोषण एवं उपचार शक्ति का अमूल्य स्रोत है। नियमित रूप से अपना मूत्र पीना दीर्घायु और अधिक स्वस्थ्य रहने का रहस्य है, स्वास्थ्य के लिए सबसे अधिक मूल्यवान और लाभकारी है, जो बीमारियों के इलाज की जड़ को समाप्त करने में सक्षम है।

हमारे मूत्र (स्वतः मूत्र) कई प्राकृतिक प्रोटीन से युक्त होता है और पोषण और चिकित्सा शक्ति का एक अमूल्य स्रोत माना जाता है। स्वच्छ और पानी की तरह सफेद रंग का मूत्र (जैसे पानी) किसी भी गंध से युक्त नहीं होने वाला मूत्र हमारे शरीर से एक उचित और स्वस्थ आहार बनाए रख कर प्राप्त किया जा सकता है। रंग और मूत्र का स्वाद लोगों पर निर्भर करता है कि वे क्या खाते और पीते हैं।

लोगों को सफेद रंग (रंगहीन जैसे पानी) का मूत्र एकत्र करने की विधि के बारे में नहीं पता, जो किसी भी प्रकार की गंध से युक्त नहीं होती और बच्चों सहित सभी लोग उसे आसानी से पी सकते हैं। उन्हें उचित आहार और रस के बारे में भी नहीं पता है, जो मूत्र चिकित्सा के साथ ही लिया जा सकता है ताकि वे लंबी अवधि के लिए इलाज जारी रख सकें और उसके उचित लाभ बिना किसी समस्या के प्राप्त कर सकें।

एक व्यक्ति जो पुरानी बीमारी से प्रभावित है और "मूत्र चिकित्सा" को अपनाता है वो नियमित रूप से चिकित्सा परीक्षण से गुजर सकता है। वह डॉक्टर के पर्यवेक्षण में रह सकता है, जो उसके स्वास्थ्य की क्रमिक प्रगति का निरीक्षण कर सकते हैं।

डॉक्टरों और वैज्ञानिकों का नैतिक समर्थन

मैं एक योग्य चिकित्सक नहीं हूँ और मेरे पास कोई भी चिकित्सा प्रमाण पत्र नहीं है पर अपने व्यावहारिक अनुभव के साथ मैंने उन लोगों का जो पुरानी बीमारी जैसे कैंसर एचआईवी/एड्स, मधुमेह, पित्ताशय पत्थर, सेरेब्रल पाल्सी, मानसिक मंदता, विकलांगता, मोटर न्यूरॉन रोग, मस्कुलर डिस्ट्रोफी, नेफ्रेटिक सिंड्रोम, गुर्दे की विफलता, पक्षाघात, बालों के झड़ने "विसरित डिस्क निर्जलीकरण", तीव्र लम्बर स्पोंडिलाइटिस "एएलएस" आदि से प्रभावित थे और जिनका चिकित्सा विज्ञानं के अनुसार इलाज नहीं हो पा रहा था उनका इलाज किया है।

मेरे पास वे सब मेडिकल परिक्षण रिपोर्ट हैं जिनमे "रोगियों ने मूत्र चिकित्सा से लाभ प्राप्त किया है और अपने रोग का निदान किया है। कुछ रोगियों ने लिखित बयान दिए हैं और कुछ ने इलाज के पहले और इलाज के बाद के बयान दर्ज किये हैं। मूत्र चिकित्सा उत्कृष्ट चिकित्सा साधन है जो अधिक प्रभावी और शक्तिशाली समग्र उपचार है।

जब तक रोगी ठीक हो रहा है, तब तक चिकित्सक, वैज्ञानिक और अनुसंधान विभाग के पास इलाज की प्राकृतिक विधि के लिए कोई बाधा नहीं होनी चाहिए। मरीजों को शल्य चिकित्सा के बिना उल्लेखनीय लाभ हासिल करने पर उनके मानसिक तथा शारीरिक स्वास्थ्य के सुधार को देख कर वे उचित सर्वेक्षण कर सकते हैं। वे अपने विभिन्न निदान और चिकित्सा परीक्षण की रिपोर्ट की भी जांच कर सकते हैं। डॉक्टरों और वैज्ञानिकों को उनके नैतिक समर्थन और सिफारिश से लोगों को इस उपचार को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

डॉक्टरों और वैज्ञानिकों को तथ्य पर विश्वास करना चाहिए कि "मूत्र प्राकृतिक दैवी उपचारात्मक शक्ति है" और वहाँ केवल एक प्राकृतिक उपाय है जो रोगों के विभिन्न प्रकार का इलाज कर सकता है। वे अनुसंधान कर सकते हैं और वैज्ञानिक सबूत ले सकते हैं कि मैंने जो दावा किया है वह सच है। डब्ल्यूएचओ को "मूत्र चिकित्सा" को प्राकृतिक चिकित्सा के रूप में मान्यता देनी चाहिए। यह सुरक्षित है और इलाज का सबसे प्रभावशाली तरीका है। वे अच्छी तरह से जानते हैं कि कुछ दवा कंपनियां मानव मूत्र से बनाई गईं जीवन रक्षक दवाओं और इंजेक्शनों की बिक्री से अरबों रुपए की कमाई कर रही हैं।

सरकारी संगठन, वैज्ञानिक, चिकित्सक, मीडिया और निजी संगठनों को "मूत्र चिकित्सा" पर जागरूकता पैदा करनी चाहिए और "मूत्र चिकित्सा" के लाभ प्राप्त करने के लिए इसकी उचित विधि, तकनीक, उपचार और आवश्यक आहार पर लोगों को शिक्षित करना चाहिए। जागरूकता दुनिया के सभी दूरस्थ कोनों तक पहुँचनी चाहिए।

मूत्र चिकित्सा के बारे में जागरूकता बढ़ाना मानवता की नि:शुल्क सेवा है। जागरूकता से दुनिया भर में लाखों लोगों को मदद मिलेगी। चिकित्सा शक्ति हमारे भीतर है।

कैंसर सर्जरी और कीमोथेरेपी के बिना नियंत्रित हो सकता है और ठीक किया जा सकता है

यह अनुमान है कि 700,000 (7 लाख) से अधिक कैंसर रोगियों के मामले और 40,000 से अधिक बच्चों में कैंसर के मामले भारत में हर साल रिपोर्ट किये जा रहे हैं। दुर्भाग्य से कैंसर रोगियों की निरपेक्ष संख्या हर गुजरते साल में बढ़ती जा रही है। यह मौत के प्रमुख कारणों में से एक बन गया है। विश्व भर में लाखों लोग सबसे अधिक खतरे वाली बीमारी से पीड़ित हैं।

एक बार निदान हो जाए, रोगी, गंभीर स्वास्थ्य की मानसिक पीड़ा से अलग उन्हें भयानक स्थिति का सामना करना पड़ता क्योंकी इलाज जटिल और महंगा मामला होता है। कैंसर निदान के साथ शुरू करने के लिए, आवश्यक जांच और उपचार लाखों रुपए में चलता है। कैंसर एक खामोश बीमारी है और कई लोगों को अपनी स्वयं की रक्षा करने के लिए इसका पता नहीं होता है और इसके परिणामस्वरूप यह स्वास्थ्य की गुणवत्ता की गिरावट और जीवन की अवधि के लिए अनिश्चितता लाता है।

कैंसर का उपचार पारंपरिक रूप से शल्य चिकित्सा, विकिरण चिकित्सा और रसायन चिकित्सा से किया जाता है। हालांकि आंकड़ों से संकेत मिलते हैं कि कैंसर के इलाज में इन उपचारों के प्रभाव सीमित हैं और इनके दुष्प्रभाव एक पहेली जैसे होते हैं। सफेद रक्त कोशिकाएं और लाल रक्त कोशिकाएं शरीर में कम हो रही हैं और विभिन्न जटिलताएं कीमोथेरेपी के दुष्प्रभाव के कारण उत्पन्न होती हैं।

मूत्र चिकित्सा अधिक प्रभावी है और विकिरण और कीमोथेरपी की तुलना में और अधिक लाभकारी है। यह कैंसर कोशिकाओं के विकास को नष्ट कर सकती है और उन्हें शरीर के अन्य भागों में फैलने से रोक सकती है। यह किसी भी दुष्प्रभाव के उत्पादन के बिना कैंसर सेल में जहरीला पदार्थ मार सकती है। यह रक्त आधान के लिए प्रभावी स्वाभाविक विकल्प भी है।

जो लोग पहले से ही सर्जरी और कीमोथेरेपी से गुजर चुके हैं वे मूत्र चिकित्सा को अपना सकते हैं। लेकिन जैसा चिकित्सक सलाह देते हैं अगर वे कीमोथेरेपी जारी रखना चाहते हैं तो वे 36 घंटे के बाद मूत्र चिकित्सा शुरू कर सकते हैं। यह कीमोथेरेपी के दुष्प्रभाव कम कर सकती है और स्वस्थ रक्त कोशिका का निर्माण करने के लिए मदद कर सकती है। यह उनकी प्रतिरक्षा प्रणाली में सुधार और उनके प्रतिरोध की शक्ति में वृद्धि करेगी। चिकित्सकों को कैंसर से पीड़ित लोगों को "मूत्र चिकित्सा" को अपनाने की सलाह देनी चाहिए और उसके लिए प्रोत्साहित करना चाहिए जो कीमोथेरेपी के दुष्प्रभाव को कम कर सकती है और उन्हें तेजी से ठीक करने में मदद भी करती है।

यह रोगियों के अस्तित्व की अवधि बढ़ा सकती है और उन्हें कष्टों के सभी प्रकार से दूर कर सकती है। मैंने पेट के कैंसर और डिम्बग्रंथि के कैंसर से पीड़ित मरीज के विस्तृत मामले के इतिहास के साथ उनके निदान के रिपोर्ट प्रस्तुत की हैं। यानी सीटी स्कैन, एंडोस्कोपी, बायोप्सी रिपोर्ट और सर्जरी और कीमोथेरेपी के लिए गुजरने के लिए चिकित्सक की राय। उन्होंने अपना अनुमोदन जारी किया हैं कि उन्हें अपने दर्द और कष्ट से राहत मिली है और वे सर्जरी और कीमोथेरेपी से गुजरे बिना स्वस्थ हैं।

कैंसर के बाद भी जीवित रहना और उसके प्रमाण

"मूत्र चिकित्सा" कैंसर और सभी प्रकार के पुराने रोगों का
इलाज और उसे नियंत्रित कर सकती है

श्रीश्रीमती सुरेश रानी

स्तन, फेफड़े और हड्डी का कैंसर

जुलाई 2012 में पता चला कि दिल्ली में रहने वाली 54 साल की सुरेश रानी को मैटास्टैटिक ब्रेस्ट कार्सिनोमा, मेटाबॉलिकली ऐक्टिव, लिंफ नोडल, बोनी एंड बायीं अधिवृक्क में प्लूरा रिसाव (स्तन, फेफड़े और हड्डी के कैंसर) का रोग है। उनकी आवश्यक मेडिकल जांच हुई और बायोप्सी टेस्ट किये गए। पीईटी-सीटी रिपोर्ट से इस व्यापक रोग का पता चला, कैंसर दोनों फेफड़ों, दाहिने स्तन, हड्डियों और शरीर के अन्य भागों में फैल चुका था। उनके फेफड़ों में बहुत सा पानी जमा हो गया था।

डॉक्टरों ने उनके परिवार के सदस्यों को सलाह दी कि वे उन्हें कीमोथेरेपी या कोई भी अन्य उपचार नहीं दे सकते हैं और वे कैंसर के अंतिम चौथे चरण में थीं। उन्होंने उन्हें यह सलाह भी दी थी कि उनके बचने की संभावना बहुत कम है। इससे पहले मई 2002 में उनके बाएं स्तन में गांठ निकालने के लिए सर्जरी हुई थी।

बायोप्सी परीक्षण के बाद पता चला कि उन्हें आक्रामक डक्टल कार्सिनोमा "स्तन कैंसर" है। सर्जरी के बाद उनकी 6 बार कीमोथेरेपी और 16 बार रेडियोथेरेपी हुई। हर साल चिकित्सा परीक्षण कराना पड़ा जो सामान्य दिखा।

जून/जुलाई 2012 के महीने में उनका स्वास्थ्य बिगड़ना शुरू हो गया। वे सांस लेने में असहजता महसूस करती थीं, वो अंगो में सूजन, उल्टी और पूरे शरीर में गंभीर दर्द से पीड़ा महसूस कर रही थीं। वो ठीक से खाने या कुछ भी पचाने में असक्षम थीं। वो बहुत कमजोर हो गयी थीं और बैठने, खड़े होने और ठीक से चलने में असमर्थ थीं और वे पूरी तरह बिस्तर पर थीं।

सुरेश रानी की बेटी रश्मि ने इंटरनेट में हमारी मूत्र चिकित्सा पर वेबसाइट देखी और फोन पर ममुझसे संपर्क किया और अपनी मां की केस हिस्ट्री मुझे बतायी। उन्होंने 2012/09/09 को मेल द्वारा अपनी माँ के केस की डायग्नोस्ड रिपोर्ट भेजी और मूत्र चिकित्सा के लाभ पर मेरे साथ चर्चा की।

मेरी सलाह पर **श्रीमती सुरेश रानी ने 12/09/2012 को मूत्र चिकित्सा शुरू कर दी।** क्योंकि उनकी मां बहुत कमजोर और अस्थिर थीं, इसलिये शुरू में उनकी बेटी रश्मि ने खूब पानी पीने और हल्का आहार खाने की विधि को अपनाया, ताकि वे साफ और बेरंग मूत्र त्याग सकें। वे अपने मूत्र को एकत्र करके अपनी माँ को पीने के लिए देने लगीं और वे अपने ही मूत्र से उनके शरीर की मालिश भी करने लगीं।

3 दिन की अवधि के भीतर वे अपने शरीर में ऊर्जा और सहनशक्ति महसूस करने लगीं। अब वे बिना तकलीफ साँस लेने में सहज महसूस करने लगी थीं। वे उठने और स्वयं का मूत्र पीने के लिए सक्षम थीं। धीरे-धीरे उनकी प्रतिरक्षा प्रणाली में वृद्धि और उनके स्वास्थ्य में दिन ब दिन सुधार हो रहा था।

उन्होंने एक उचित विधि में काफी पानी, रस पीकर और हल्का आहार लेकर मूत्र चिकित्सा को अपनाया। वे अपनी बेटी का मूत्र पी रही थीं, इसके साथ-साथ वे अपना मूत्र भी पी रही थीं और दिन में दो बार मूत्र से अपने शरीर की मालिश कर रही थीं।

2 सप्ताह (14 दिन) की अवधि में उनकी प्रतिरक्षा प्रणाली में सुधार हुआ और वे स्थिर हो गईं और उन्होंने अपने शरीर में ऊर्जा पुनः प्राप्त कर ली। वे हल्का आहार खाने लगीं और आसानी से हजम करने में सक्षम हो गईं। वे खड़ी होने और धीरे-धीरे चलने में सक्षम थीं। उन्हें अपने शरीर में सूजन और गंभीर दर्द से राहत मिल गयी थी। फेफड़ों में पानी कम हो गया था और वे सामान्य तरीके से साँस लेने में सक्षम थीं।

मैंने उन्हें सलाह दी कि वे बेहतर और थोड़ी तेजी से परिणाम प्राप्त करने के लिए 7 दिनों के अंतराल के साथ लाइट कीमोथेरेपी करा सकती हैं। लाइट कीमोथेरेपी कुछ कैंसर की कोशिकाओं को हटा और मार सकती है और जब यह मूत्र के साथ-साथ लिया जाता है तो कैंसर के इलाज के लिए मददगार और सहायक तरीका हो सकता है। उन्होंने एक्शन कैंसर अस्पताल, दिल्ली में डा। हरि गोयल से परामर्श किया, जिन्होंने सुरेश रानी को देखा और उन्हें उनके स्वास्थ्य में शारीरिक सुधार देख कर खुश थीं। डॉ। हरि गोयल के पर्यवेक्षण के अंतर्गत उन्होंने 26 सितंबर से सात दिनों के अंतराल के साथ उपशामक रसायन चिकित्सा आईएनजे। टैक्सॉल 130 मिग्रा ली।

कीमोथेरेपी के दौरान वे अपनी बेटी का मूत्र पीती थीं और कीमोथेरेपी के 24 घंटे के बाद वे अपना ही मूत्र पीती थीं। कीमोथेरेपी के दौरान और कीमोथेरेपी के बाद उन्हें कमजोरी, थकान, अकड़न, और किसी भी अन्य की तरह की जटिलता के कोई साइड इफेक्ट भी नहीं लग रहे थे। उन्हें लगा कि वे ग्लूकोज/खून की बोतल लेने के लिए अस्पताल गयी थीं।

कीमोथेरेपी के दो चक्रों के बाद डॉक्टर, जिन्होंने उनकी जांच ककी, ने उन्हें बताया दी कि वे स्थिर हैं और उनके फेफड़े पूरी तरह से साफ हैं और इनमें कोई भी द्रव नहीं है। उन्होंने उन्हें कीमोथेरेपी के 12 चक्र जारी रखने की सलाह भी दी।

वे हर 7 दिनों के अंतराल के कीमोथेरेपी के साथ मूत्र चिकित्सा जारी रख रही थीं। दिन ब दिन वे अपने शरीर में ऊर्जावान और सहनशक्ति और अपने स्वास्थ्य में सुधार महसूस कर रही थीं। उन्हें फेफड़ों में द्रव इकठ्ठा होना, सांस में कठिनाई, श्वास, बेचैनी, उल्टी, कमजोरी, अंगों में सूजन और शरीर में गंभीर दर्द की सभी प्रमुख समस्याओं से उन्हें राहत मिली है।
उनका एपेटाइट अच्छा है और वे भोजन को खाने और ठीक से पचाने में सक्षम हैं। वे बैठने, खड़े होने और चलने, सीढ़ी चढ़ने और अपने घर में अपनी सामान्य कार्य करने में सक्षम हैं।

उन्होंने 25 सितंबर और 12 दिसंबर 2012 से उपशामक रसायन चिकित्सा आईएनजे। टैक्सॉल 130 मिलीग्राम के 12 चक्र लिए। उन्होंने 12 दिसंबर को छाती और फेफड़ों का स्कैन भी कराया। स्कैन रिपोर्ट देखने के बाद डा। हरि गोयल ने श्रीमती सुरेश रानी को यह सलाह दी कि उनकी छाती और फेफड़े पूरी तरह से साफ हैं। उन्होंने इसके आगे अंतिम परिणाम को देखने के लिए पीईटी स्कैन कराने का सुझाव दिया। उन्होंने चंडीगढ़ में पीजीआईएमईआर कैंसर रिसर्च सेंटर के ऑन्कोलॉजिस्ट डॉ। गुरप्रीत सिंह, से परामर्श किया और **11/012013 को पी ई टी स्कैन कराया।**

पीईटी सीटी की रिपोर्ट से पता चला कि शरीर में सक्रिय कैंसर की कोई कोशिकाएं नहीं हैं और सभी कैंसर की कोशिकाएं मर चुकी हैं। रिपोर्ट बताती है कि वह सामान्य हैं और उन्हें कैंसर नहीं है। एक्शन कैंसर अस्पताल, दिल्ली के ऑन्कोलॉजिस्ट डॉ।

हरि गोयल और पीजीआईएमईआर, कैंसर रिसर्च सेंटर, चंडीगढ़ के डॉ। गुरप्रीत सिंह पीईटी सीटी के परिणामों को देख कर कि वे सामान्य हैं बहुत खुश और संतुष्ट हुए। अधिकांश डॉक्टर और ऑन्कोलॉजिस्ट, जिन्होंने पीईटी सीटी की रिपोर्टों को देखा है परिणाम से हैरान हैं। इस तथ्य पर विश्वास नहीं कर पा रहे थे कि एक मरीज, जिसका स्तन कैंसर के अंतिम चरण के साथ निदान किया गया था, जो हड्डियों, फेफड़े और लिम्फ नोड्स तक फैल गया था, उसको ठीक किया जा सकता है।

श्रीमती सुरेश रानी जी रही हैं और उन्होंने 4 महीने (12 सितम्बर 2012 से 11 जनवरी 2013 तक) की एक छोटी सी अवधि में एक सकारात्मक रवैये के साथ मूत्र चिकित्सा अपनाने के द्वारा कैंसर के अंतिम चरण पर काबू पाया है। वे मूत्र चिकित्सा जारी रखे हैं। वे चुस्त और स्वस्थ हैं और अपनी सभी सामान्य गतिविधियों को कर रही हैं।

ऊपर के तथ्यों/विवरण की पुष्टि करती हैं-
श्रीमती रश्मि मो: 092179 63629
श्रीमती। सुरेश रानी की बेटी।
ई - मेल: nkj_24@yahoo.com

उपचार से पहले की पी ई टी सी टी रिपोर्ट

ISO9001 ISO 14001

RAJIV GANDHI CANCER INSTITUTE AND RESEARCH CENTRE

IMAGING SCIENCES:
X-RAY/US/CT/PET/MRI/NM

Sector – 5, Rohini, Delhi- 110085
Tel. : 47022222 (30 lines), 27051011-15
Fax : 91-11-27051037

PET-CT REPORT

OrderNo	:	DIRRGCI890166	Order Date	:	23-Jul-2012 03:08PM
CR. No.	:	**146393**	Age/Sex	:	54 YR(S)/F
Name	:	**SURESH RANI**	Study Date	:	24-Jul-2012 05:09PM
Referred By	:		Status	:	OPD

PT Report

Purpose of Scan:
Rxed case of Ca left breast. Post OP/RT (2000). Now with left pleural effusion. For evaluation
Ref.:PET/2530/12

POSITRON EMISSION TOMOGRAPHY AND DIAGNOSTIC CT:
296-370 MBq 18F-FDG was administered I.V.& Images were taken after 1hr. from skull base to mid thigh. IV contrast was given. Diagnostic CT Chest was done. Images of the brain were also acquired.

Finding:
Metabolically active lymphnodes are seen in prevascular, pretracheal, AP window, subcarinal, bilateral hilar and left paraaortic regions. Right supraclavicular region shows evidence of few air pockets.

Metabolically active sclerotic lesions are seen in sternum, left 1st and 10th ribs, few dorso-lumbar vertebrae, sacrum, right acetabulum, left femur, right iliac bone and bilateral pubic bone.

Left adrenal shows metabolically active nodule.

Metabolically active left pleural thickening is seen. Mild left pleural effusion is seen.

Both lungs are normal. Trachea and main stem bronchi are normal.
No right pleural / pericardial effusion is seen.

Rest of the body including brain shows normal physiological tracer uptake.

Impression:
Metabolically active, lymphnodal, bony, left adrenal involvements with pleural effusion as described.

DR.VISHU / DR.ANKUR:
S.R.NUCLEAR MEDICINE

DR.S.A.RAO:
Sr.CONSULTANT RADIOLOGY

DR.P.S.CHOUDHURY:
DIRECTOR NUCLEAR MEDICINE

DR.A.K.CHATURVEDI:
DIRECTOR RADIOLOGY

This Report has been Approved by : DR. VISHU/DR. ANKUR on 25-Jul-2012 03:51PM
This Report has been Validated by : Dr.P.S.Choudhury / Dr. A.K. Chaturvedi / Dr.S.A.Rao on 25-Jul-2012 03:51PM
This is an Electronically Generated Report and Needs No Signature.
Any Alternations will make the Report Void.

Entered By : REENA CHHARI

Printed By : REENA CHHARI

बायोप्सी रिपोर्ट

(7)

RAJIV GANDHI CANCER INSTITUTE AND RESEARCH CENTRE

ISO 9001 ISO 14001

Sector-V, Rohini, Delhi - 110 085
Tel.: 47022222 (30 Lines), 27051011 - 27051015
Fax: 91-11-27051037

RAJIV GANDHI CANCER INSTITUTE AND RESEARCH CENTRE
(Unit of Indraprastha Cancer Society & Research Centre)

ISO 9001 ISO 14001 CER NO - 0309

DEPARTMENT OF LABORATORY SERVICES

Sector-V, Rohini, Delhi - 110 085
Tel. : 47022222 (30 LINES), 27051011-1015 Fax : 91-11-27051037

CR Name	: MRS.SURESH RANI	**CR No**	: 146393	**Age/Sex**	: 54/Female
Refered Doctor	:	**OPD/IPD**	: OPD		
Sample On	: 24-07-2012	**Report On**	: 25-07-2012 02:34 pm	**Biopsy No**	: B -

DEPARTMENT OF PATHOLOGY

Lab Test Report

BIOPSY NO:B/4988/2012

SPECIMEN: RIGHT CERVICAL LYMPHNODE BIOPSY

GROSS EXAMINATION:SINGLE NODULAR BITS MEASURING 1.5 X 0.7 X 0.7 cm(A,B)(NTL)

MICROSCOPIC EXAMINATION SHOWS TOTAL REPLACEMENT OF LYMPHOID CELLS BY METASTATIC BREAST CARCINOMA CELLS IN KNOWN CASE OF CARCINOMA BREAST.

Clinical Interpretation if any :

Verified By:

Signature:
DR GURUDUTT GUPTA
25-07-2012 04:57 pm

* Marked Service are not covered Under NABL Accreditation

This is an electronically generated report and needs no signature, Any alterations will make the report void.Request for Histopathology slide/blocks for second opinion: The slides and blocks for second opinion will be issued on the next working day, subsequent to a written request submitted 24 hours prior. Time of collection of the same would be between 3pm and 5pm only.

Technician Name : MINI_2636

-- End of Report --

Cervical — ER / PR

Breast — Herceptin — Herceptin.

कीमोथेरेपी के 12 चक्रों के बाद निर्वहन सारांश

Action Cancer Hospital

Name: : SURESH RANI | IP No : 11640 | CR No 12384 | D.O.A : 12/12/2012 11:01AM
Relative : W/O ASHOK KUMAR | Age : 54 Years | Sex : Female | D.O.D : 12/12/2012 03:24AM
Address : C-3C DELHI CITY APP. SEC-13 ROHINI | Area : ROHINI
Phone : Ph 9310096450 | Unit : HG UNIT
Doctor : Dr. Dr.Hari Goyal,Dr.VIKAS DUA
Room No : DC-3

Discharge Summary

1. DIAGNOSIS:- METASTASIS CARCINOMA BREAST, ON PALLIATIVE CHEMOTHERAPY.

2. KNOWN ALLERGIES:- No known drug allergies.

3:BRIEF SUMMARY OF CASE:-Mrs. Suresh Rani 54 years old normotensive, nondiabetic female is a diagnosed case of Carcinoma breast. She underwent Surgery in 2001 followed by 6 cycles of chemotherapy using CMF regimen followed by 5 yrs of Tamoxifen(ER/PR were negative) Patient developed breathlessness in july 2012 and found to have large pleural effusion. She was further investigated and found to have Right supraclavicular node. Biopsy was perfomed and reported as +ve for metastasis Carcinoma. Pleural fluid was also reported postive for malignant cells. The tissue was reported +ve for ER/PR & HER -2-NEU (3+)) **PET-CT** revealed extensive disease. After that no treatment was taken and received alternative treatment. Patient had rapidly refilling effusion. The prognosis of metastasis disease was explained in detail.Option of oral Xeloda/weekly taxol or hormones was given. In view of grossly symptomatic disease,it was planned to give weekly taxol.

Presently she was admitted for **12th cycle** of chemotherapy which she received with prehydration, posthydration and antiemetics on **12/12/2012**. She tolerated the treament well and now she is being discharged in a stable condition.

4. PAST HISTORY: - No h/o HTN/DM/CAD/COPD.

5. EXAMINATION:-Patient Conscious, Oriented, Afebrile, BP-120/70mmHg, PR-70/min, RR-20/min, PS-2, Chest - no added sound, CVS-S1S2+, P/A- Soft, BS+.

6. INVESTIGATIONS: - Lab report attached.

7. COURSE DURING HOSPITAL STAY:-

Medicine Given:- Inj. Taxol 130mg with other supportive care.

8. CONDITION ON DISCHARGE:- Satisfactory.

9. TREATMENT ADVICE:-
TAB. LIZOLID 600mg TWICE DAILY FOR 5 DAYS.
TAB. VOVERAN TWICE DAILY FOR 5 DAYS.
TAB. PAN D TWICE DAILY FOR 5 DAYS.
TAB. LARPOSE 1mg FOR 3 DAYS AT NIGHT.
CAP. BECOSULE Z ONCE DAILY FOR 7 DAYS.
TAB. FOLVITE ONCE DAILY FOR 7 DAYS.
PLENTY OF ORAL FLUID.

A-4, Paschim Vihar, New Delhi-110063 Tel.: +91 11 4922 2222 Fax.: +91 11 4502 4287 E-mail : ach@actionhospital.com Website : www.actionhospital.com

उपचार के बाद की पी ई टी सी टी रिपोर्ट

Positron Emission Tomography Centre
Department of Nuclear Medicine,
PGIMER, Chandigarh – 160 012, Tel: 0172 2756719

Name:	Suresh Rani	**PET No:**	8112/13
Age/Sex:	54/Female	**CR No**	1085901
Ref/Dept:	General Surgery	**Date:**	11/01/2013

PET-CT Report

Clinical Indication: K/C/O Ca breast ; Left segmental mastectomy - 16/5/2000; CT - 6 cycles & RT 2000; c/o breathlessness - 2012 : Evaluation : pleural effusion; PET outside (24/7/12): lymph nodal, bony and left adrenal involvement. CT - 12 cycles, last on 12/12/12; PET for CT response.

Technique: *Whole body images (base of skull to mid thigh) were acquired in 3-D mode 60 min after i.v. injection of 370 MBq of F18-FDG using a dedicated BGO PET-CT scanner. Oral contrast diluted with water was given. Reconstruction of the acquired data was performed so as to obtain fused PET-CT images in transaxial, coronal and sagittal views.*

Findings: No abnormal FDG uptake noted in the left breast. No abnormal FDG uptake is noted in the bilateral axillary, internal mammary and supraclavicular regions.

A non FDG avid irregular soft tissue lesion (measuring ~ 2.4 X 2.1 cm) is noted in the subareolar region of the right breast .

Non FDG avid multiple sclerotic foci are noted in the following sites:

--Multiple cervical and dorsolumbar vertebrae
--Sternum
--Multiple bilateral ribs
--Bilateral iliac bones, right ischial tuberosity and bilateral pubic bones
--Sacrum

Note is made of faintly FDG avid moderate left pleural effusion with atelectasis of the underlying segments. Note is made of non FDG avid GGOs in the both lung fields. No abnormal thickening of the pleura is noted.

Note is made of fatty liver with physiological FDG uptake.

Faint FDG uptake is noted in the medial limb of the left adrenal.

FDG uptake is noted in the brown adipose tissue in the neck and thorax – physiological.

Physiological tracer uptake is noted in liver, spleen and rest of the visualised organs.

Impression: Non-FDG avid lesion in the right breast - suggest mammography / FNA correlation.

Non FDG avid left pleural effusion and skeletal lesions and faintly FDG avid left adrenal lesion as described . Compared to the PET printout images of previous study, there appears to be response to chemotherapy.

Consultant **Senior Resident**

Vinoda Shetty

विनोदा शेट्टी

दिनांक 23-10-2011

द्वारा:-
विजय लक्ष्मी शेट्टी,
बेंगलुरु।

यह किसी के लिए भी चिंता का विषय हो सकता है

मेरी मां श्रीमती विनोदा शेट्टी (स्त्री), उम्र 55 वर्ष को पेट का दर्द और गैस की समस्या रहती थी, और उन्होंने पिछले तीन वर्षों में कई चिकित्सकों को दिखाया। तमाम गोलियां लेने के बाद भी वो ठीक नहीं हो रही थीं। अगस्त 2010 के महीने में काव्या डायग्नॉस्टिक सर्विसेस प्राइवेट लिमिटेड, बेंगलुरु में उनका कंप्लीट मेडिकल चेकअप, एंडोस्कोपी और बायॉप्सी परीक्षण हुआ और तब पता चला कि उन्हें पेटा का कैंसर है "कार्सिनोमा स्टमक" है।

जांच को पक्का करने के लिए फादर मुलर मेडिकल कॉलेज, मेंगलूर में उनकी छाती, पेट और श्रोणि का सीटी स्कैन कराया गया। रिपोर्ट आने के बाद डॉक्टरों ने उनको तीन चक्र की कीमोथेरेपी और फिर सर्जरी कराने की सलाह दी। डॉक्टर की सलाह पर उन्होंने सितंबर, अक्टूबर और नवंबर 2010 में तीन चक्र वाली कीमोथेरेपी अपनायी। कीमोथेरेपी के बाद उन्हें न्यूट्रोपीनिया (कीमोथेरेपी के साइड इफेक्ट) जिसमें उन्हें उल्टी, थकान, बुखार, लो ब्लड शुगर, सफेद रक्त कोशिकाओं की कमी और चेहरे व शरीर के अन्य भागों में सूजन के कारण फिर से अस्पताल में भर्ती कराया गया।

कीमोथेरेपी के तीन चक्र पूरे करने के बाद नवंबर 2010 में एक बार फिर उनकी एंडोस्कोपी, हिस्टोपैथेलॉजी, बायॉप्सी और सीटी स्कैन कराया गया। परिणाम में कोई भी सुधार नहीं दिखे। फादर मुलर अस्पताल के डॉक्अरों ने कहा कि अब सिर्फ सर्जरी ही एक मात्र रास्ता बची है, जिसमें पूरे पेट को हटा दिया जायेगा, और उसके बाद फिर से कीमोथेरेपी होगी। डॉक्टरों ने यह भी सलाह दी कि इन सबके बाद भी ठीक होने के चांस सिर्फ 50 प्रतिशत ही हैं।

जब मैं मेंगलूर में थी, तब मैं श्री जगदीश भुरानी के संपर्क में आयी और मैंने उन्हें अपनी मां की पूरी केस हिस्ट्री बतायी और उन्हें सारी रिपोर्ट दिखायीं। उन्होंने मुझे मूत्र चिकित्सा के लाभ के बारे में विस्तार से बताया और साथ में यह आश्वस्त किया कि मेरी मां को सभी रोगों से छुटकारा मिल जायेगा और वो फिर से सामान्य जीवन जी सकेंगी वो भी बिना किसी सर्जरी या कीमोथेरेपी के। किसी तरह मैंने अपनी मां को मनाया कि उन्हें मूत्र चिकित्सा से गुजरना होगा और मैंने उन्हें इसके लाभ बताये।

मेरी मां ने 16-12-2010 को मूत्र चिकित्सा की शुरुआत की और 30 दिनों के बहुत थोड़े से समय में उनके अंदर परिवर्तन दिखाई देने पड़ा। देखते ही देखते उनकी सभी गंभीर समस्याओं से निजाद मिलने लगी। पेट में दर्द, जलन, गैस की समस्या, मुंह व शरीर के अन्य भागों में सूजन, आदि खत्म हो गई। वो ऊर्जावान हो गईं और वो अपने सामान्य कार्य करने लगीं। और उन्होंने खुशी-खुशी इस चिकित्सा को जारी रखा। उनके सिर पर बाल बढ़ने लगे, जो उन्होंने कीमोथेरेपी की पहली साइकिल में थे दिये थे।

इस दौरान न तो मैं और न मेरी मां श्री जगदीश भुरानी से निजी तौर पर मिले। हम उनसे सिर्फ फोन पर ही संपर्क में रहे और उनकी सलाह के अनुसार मूत्र चिकित्सा के सभी निर्देशों का पालन करते रहे।

वो पूरी तरह डाइट पर हैं और दो बार मूत्र लेती रहीं। दिन में वो मूत्र से गीता कपड़ा रखती और रोजाना दिन भर में करीब 3 लीटर मूत्र पीती रहीं।

मूत्र चिकित्सा के पांच महीने पूरे होने के बाद अगस्त 2011 में फादर मुलर मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल, मेंगलूर में उन्होंने एक बार फिर से सीटी स्कैन और रक्त परीक्षण कराया और वहां के ऑन्कोलॉजिस्ट डा। दिनेश सेठ से सलाह ली। डा। सेठ ने उनसे कहा कि अब उनकी तबियत सामान्य है और उनके पेट की बीमारी बाकी अंगों में नहीं फैल रही है। उन्होंने मेरी मां को मूत्र चिकित्स जारी रखने की सलाह दी।

आठ महीने के बाद जब हम बेंगलुरु वापस आये और काव्या डायग्नॉस्टिक्स सर्विसेस प्राइवेट लिमिटेड, बेंगलुरु में 10-08-11 को उनका उनकी एंडोस्कोपी व अन्य जरूरी रक्त परीक्षण कराये। यद्यपि एंडोस्कोपी की रिपोर्ट में पहली वाली रिपोर्ट की तुलना में ज्यादा अंतर नहीं दिखा, लेकिन रक्त परीक्षण, हेमाटोलॉजी, बायोकेमिस्ट्री और अन्य रिपोर्ट नॉर्मल रेंज में निकलीं। 11-102011 को हमने समय लेकर एचसीजी कैंसर हॉस्पिटल बेंगलुरु के सीईओ व ऑन्कोलॉजिस्ट डा. बीएस अजय कुमार को दिखाया। डा. बीएस अजय कुमार ने कहा कि अब उनकी हालत स्थिर है और वे मूत्र चिकित्सा जारी रख सकेंगे।

वो बिना सर्जरी कराये ही वो जिंदा हैं। न तो उनका पेटा निकाला गया, जिसकी सलाह डॉक्टरों ने शुरुआत में दी थी। अगर वो सर्जरी करातीं, तो क्या होता? तो उन्हें बिस्तर पर पूरी तरह आराम करना पड़ता औरशारीरिक दर्द भी झेलना पड़ता तब वो क्या करतीं, यह बताना मुश्किल होगा। अब वो पिछले 10 महीने से मूत्र चिकित्सा अपना रही हैं, वह अब उनका स्वास्थ्य भी स्थिर है। मूत्र चिकित्सा अपनाने के बाद वो अब तक परामर्श के लिए किसी डॉक्टर के पास या अस्पताल नहीं नहीं गईं।

मूत्र चिकित्सा के लाभों को निजी तौर पर जानने के बाद मैंने कुछ उन लोगों को इसका सुझाव दिया, जो कैंसर या अन्य बीमारियों से ग्रसित थे। उसके लिए वे मूत्र चिकित्सा अपनायें वो भी बिना ज्यादा समय खर्च किये। मैं मीडिया और सामाजिक संगठनों से अनुरोध करना चाहूंगी कि वे मानवजाति की सेवा के लिए मूत्र चिकित्सा के बारे में लोगों को जागरूक करें।

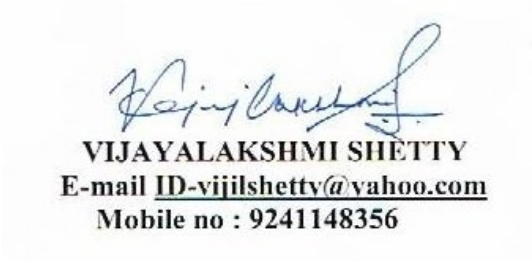

विजयलक्ष्मी शेट्टी
ई-मेल: vijilshetty@yahoo.com
मो. न. 09241148356

नोट- उपरोक्त पत्र विजयलक्ष्मी द्वारा अंग्रजी में पत्र का अनुवाद है।

श्रीमती विनोदा शेट्टी एंडोस्कोपी: - कार्सिनोमा स्टमक

KANVA DIAGNOSTIC SERVICES PVT LTD.
NO. 2/10, Dr. Rajkumar Road, 4th N Block, Rajaji Nagar, Bangalore - 560010

Patient Name	MRS VINODHA	Age	48 years
Patient I D	K635243	Sex	F
Ref.By Doc	Dr. JANARDHAN R	Visit Date	24-Aug-10

UPPER GI ENDOSCOPY REPORT:

INDICATION : Pain abdomen and hemetemesis

FINDINGS :

ESOPHAGUS: Normal. No erosions or hiatus hernia.

STOMACH:

Ulcerative type of growth seen involving the mid body circumferentially with narrowing. Lesion extends proximally along the lesser curve upto the GE junction. Multiple biopsies taken.

DUODENUM:

CAP : Normal. No ulcer.

DII : Normal.

IMPRESSION : CARCINOMA STOMACH

IMAGES:

1. DUODENAL CAP
2. GROWTH
3. FUNDUS
4. ESOPHAGUS

DR.ANAND DOTIHAL,
MD (PGI, CHANDIGARH), DM (DELHI).,
CONSULTANT GASTROENTEROLOGIST

श्रीमति विनोबा शेट्टी की एंडोस्कोपी रिपोर्ट (24 अगस्त 2010), जिसमें कार्निकोमा स्टमक यानी पेट के कैंसर की शिकायत है।

ऊतकविकृति विज्ञानी रिपोर्ट

KANVA DIAGNOSTIC SERVICES PVT LTD
No. 2/10, Dr. Rajkumar Road, 4th N Block,
Rajajinagar, Bangalore- 560010
Phone: 080 – 2313 3838 / 39 /40/41/42/43, 2313 4846, 23134847
Fax: 080 – 2313 3844 E-mail:dr.venkatappa@kanvadiagnostic.com.
Website. www.kanvadiagnostic . com.

Patient Name	**Mrs. Vinodha**	**Age**	**48 Yrs**
Patient I.D.	**K635278**	**Sex**	**Female**
Ref By Doc	**Dr. Janardhan R**	**Date**	**26/08/2010**

HISTOPATHOLOGY REPORT

HPE NO : **843** /2010

SPECIMEN : **BIOPSY FROM STOMACH**

GROSS EXAMINATION:

Specimen consists of multiple tiny grey white soft tissue bits altogether measuring < 0.5 cms.

MICROSCOPIC EXAMINATION:

Section studied is showing mucosa of the stomach with infiltrating tumour .the tumour is composed of cells arranged in diffuse sheets. The cells are round to columnar having hyperchromatic to vesicular nuclei with nucleoli and moderate amount of cytoplasm. the cells show moderate degree of nuclear pleomorphism with occasional atypical mitosis. There is moderate mixed inflammatory cellular infiltration. Rest of the mucosa and lamina propria is unremarkable.

IMPRESSION: HISTOPATHOLOGICAL FEATURES ARE SUGGESTIVE OF POORLY DIFFERENTIATED ADENOCARCINOMA – STOMACH.

ENCL: ONE SLIDE & BLOCKS
PRESERVE THEM CAREFULLY

Dr. Swarna Shivakumar
MBBS, MD
Pathologist

बायॉप्सी रिपोर्ट जिसमें ट्यूमर के बारे में विस्तार से बताया गया है।

सी. ई. सी. टी. छाती, पेट, और श्रोणि

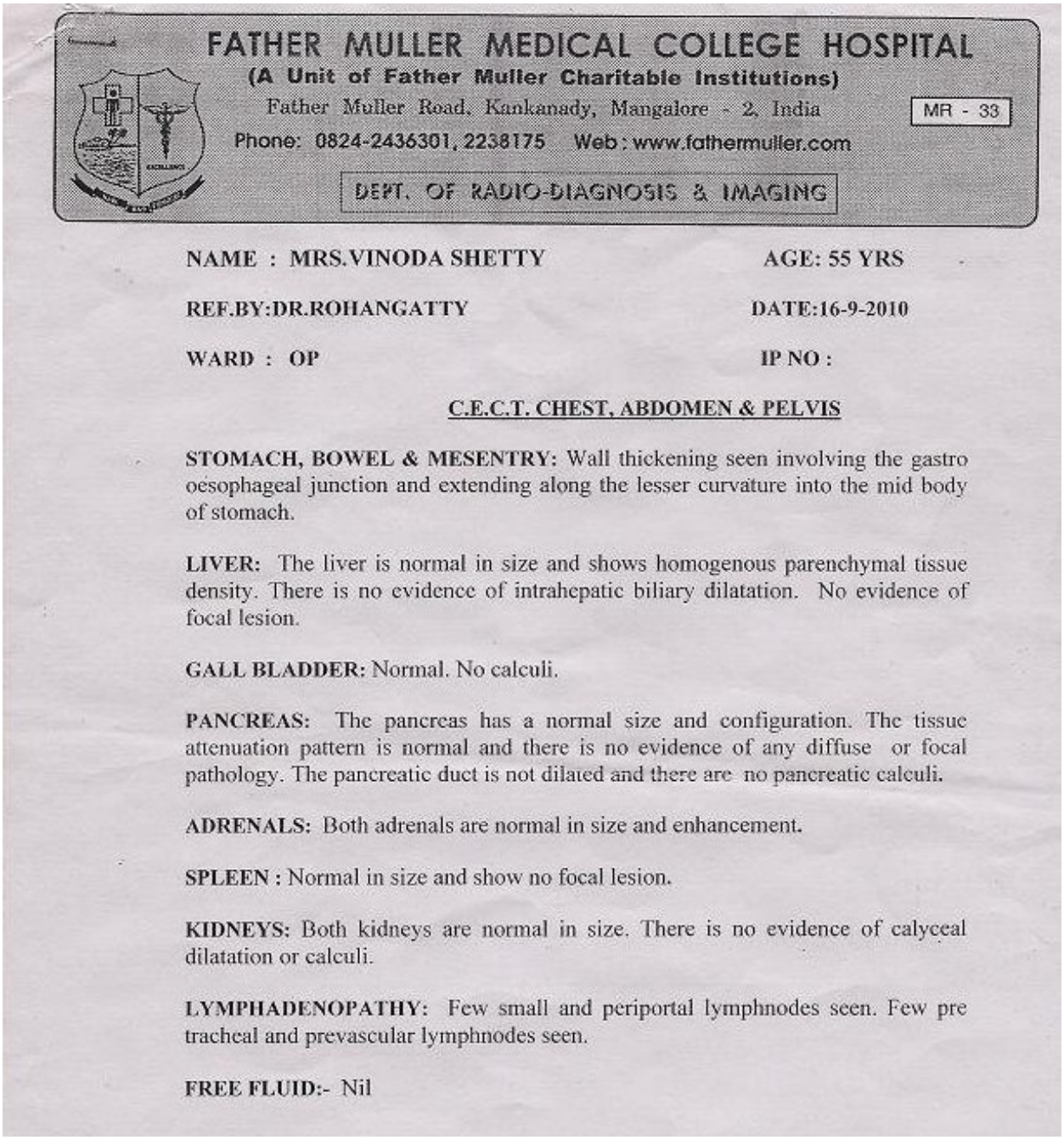

FATHER MULLER MEDICAL COLLEGE HOSPITAL
(A Unit of Father Muller Charitable Institutions)
Father Muller Road, Kankanady, Mangalore - 2, India
Phone: 0824-2436301, 2238175 Web : www.fathermuller.com
MR - 33
DEPT. OF RADIO-DIAGNOSIS & IMAGING

NAME : MRS.VINODA SHETTY AGE: 55 YRS

REF.BY:DR.ROHANGATTY DATE:16-9-2010

WARD : OP IP NO :

C.E.C.T. CHEST, ABDOMEN & PELVIS

STOMACH, BOWEL & MESENTRY: Wall thickening seen involving the gastro oesophageal junction and extending along the lesser curvature into the mid body of stomach.

LIVER: The liver is normal in size and shows homogenous parenchymal tissue density. There is no evidence of intrahepatic biliary dilatation. No evidence of focal lesion.

GALL BLADDER: Normal. No calculi.

PANCREAS: The pancreas has a normal size and configuration. The tissue attenuation pattern is normal and there is no evidence of any diffuse or focal pathology. The pancreatic duct is not dilated and there are no pancreatic calculi.

ADRENALS: Both adrenals are normal in size and enhancement.

SPLEEN : Normal in size and show no focal lesion.

KIDNEYS: Both kidneys are normal in size. There is no evidence of calyceal dilatation or calculi.

LYMPHADENOPATHY: Few small and periportal lymphnodes seen. Few pre tracheal and prevascular lymphnodes seen.

FREE FLUID:- Nil

विवरण: पेट- का आकार असामान्य रूप से बढ़ा हुआ, लीवर, गुर्दे से जुड़े अंग, तिल्ली और किडनी सामान्य हैं।

सी. ई. सी. टी. छाती, पेट, और श्रोणि पृष्ठ 2

FATHER MULLER MEDICAL COLLEGE HOSPITAL
(A Unit of Father Muller Charitable Institutions)
Father Muller Road, Kankanady, Mangalore - 2, India
Phone: 0824-2436301, 2238175 Web : www.fathermuller.com
MR - 33
DEPT. OF RADIO-DIAGNOSIS & IMAGING

BLADDER: Bladder have a normal anatomical configuration. There is no evidence of any intraluminal pathology or thickening of its walls.

UTERUS AND OVARIES: No obvious pathology.

INGUINAL ORIFICES: Normal

ABDOMINAL WALL: Normal

VISUALISED BONES : Normal

Chest:

LUNGS: Both the lungs show a normal bronchial and vascular branching pattern. There is no evidence of any parenchymal lesion.

PLEURA: No evidence of pleural thickening/calcification.

CARDIA & GREAT VESSELS: The heart and mediastinal vascular structures have a normal anatomical configuration. The thoracic aorta and its branches are normal and show no evidence of calcification.

THYROID: Is diffusely enlarged in size.

VISUALISED BONES: The visualized bones of the chest wall and the dorsal spine appears normal.

IMPRESSION:

KNOWN CASE OF CA STOMACH; PRESENT CT SHOWS:

- **WALL THICKENING INVOLVING THE GASTRO OESOPHAGEAL JUNCTION AND EXTENDING ALONG THE LESSER CURVATURE INTO THE MID BODY OF STOMACH.**
- **ENLARGED THYROID.**

DR. SAJAN JOY ANDREWS
M.D., D.N.B., F.R.C.R.

रिपोर्ट के इस पृष्ठ पर ब्लैडर सामान्य है, फेफड़े, प्लूरा व हृदय सामान्य रूप से काम कर रहा है। निष्कर्ष- कार्सिनोमा स्टमक यानी पेट का कैंसर।

कीमोथेरेपी के 6 चक्र की आवश्यकता होती है और लागत 1 लाख रूपये।

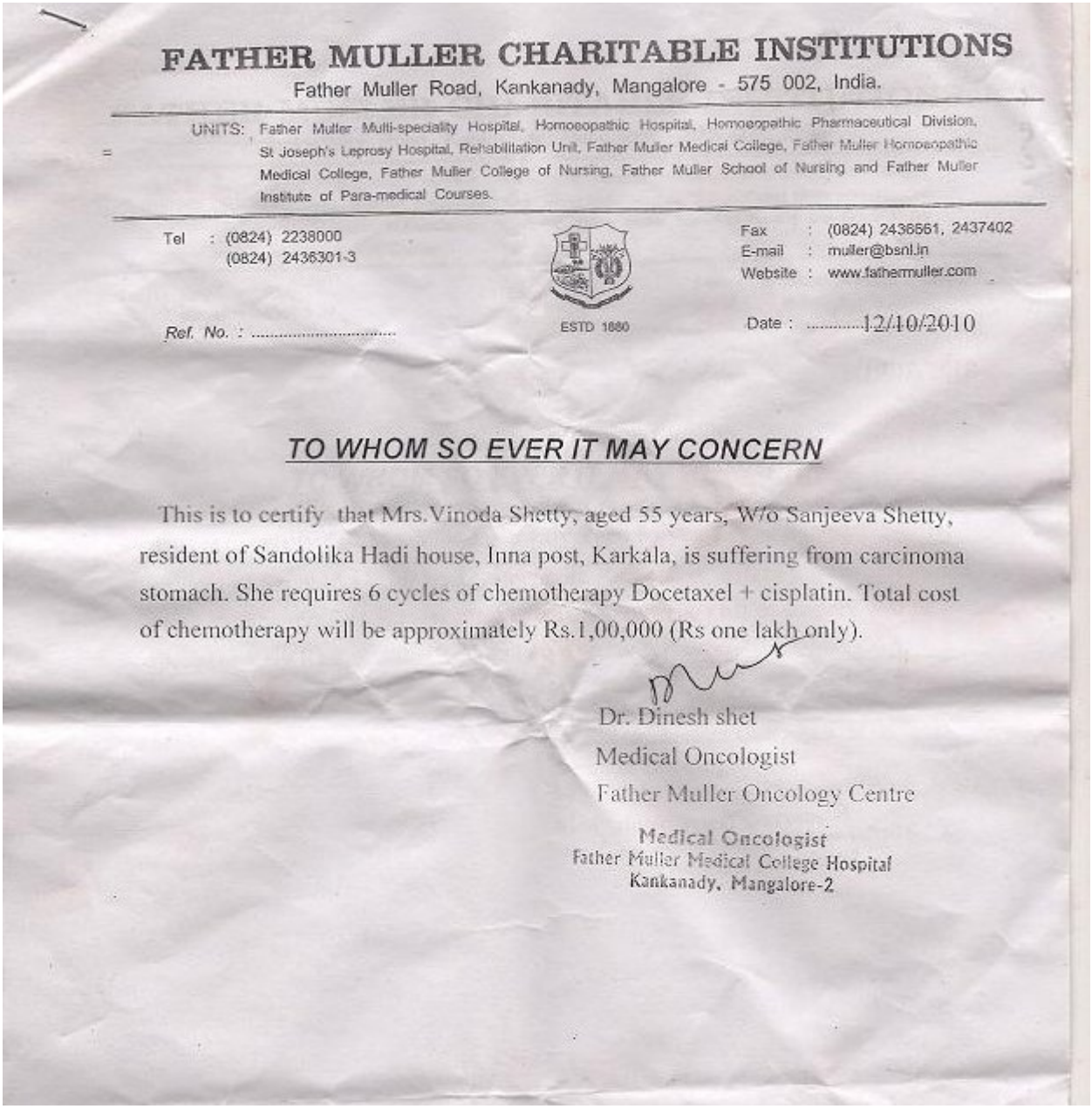

FATHER MULLER CHARITABLE INSTITUTIONS

Father Muller Road, Kankanady, Mangalore - 575 002, India.

UNITS: Father Muller Multi-speciality Hospital, Homoeopathic Hospital, Homoeopathic Pharmaceutical Division, St Joseph's Leprosy Hospital, Rehabilitation Unit, Father Muller Medical College, Father Muller Homoeopathic Medical College, Father Muller College of Nursing, Father Muller School of Nursing and Father Muller Institute of Para-medical Courses.

Tel : (0824) 2238000
(0824) 2436301-3

Fax : (0824) 2436661, 2437402
E-mail : muller@bsnl.in
Website : www.fathermuller.com

ESTD 1880

Ref. No. : .....

Date : 12/10/2010

TO WHOM SO EVER IT MAY CONCERN

This is to certify that Mrs.Vinoda Shetty, aged 55 years, W/o Sanjeeva Shetty, resident of Sandolika Hadi house, Inna post, Karkala, is suffering from carcinoma stomach. She requires 6 cycles of chemotherapy Docetaxel + cisplatin. Total cost of chemotherapy will be approximately Rs.1,00,000 (Rs one lakh only).

Dr. Dinesh shet
Medical Oncologist
Father Muller Oncology Centre

Medical Oncologist
Father Muller Medical College Hospital
Kankanady, Mangalore-2

ऑन्कोलॉजी सेंटर, फादर मुलर मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल कनकनडी, मेंगलूर के डा. दिनेश शेट द्वारा इस पत्र में कहा गया कि 55 वर्षीय विनोबा शेट्टी, निवासी संडोलिका हदी हाउस, इन्ना पोस्ट, करकला, कार्सिनोमा स्टमक से ग्रसित हैं, जिसके उपचार के लिए कीमोथेरेपी के 6 चक्र की जरूरत पड़ेगी, जिसमें करीब 1 लाख रुपए का खर्च आयेगा।

सर्जरी की आवश्यकता होती है और लागत दो लाख रुपए

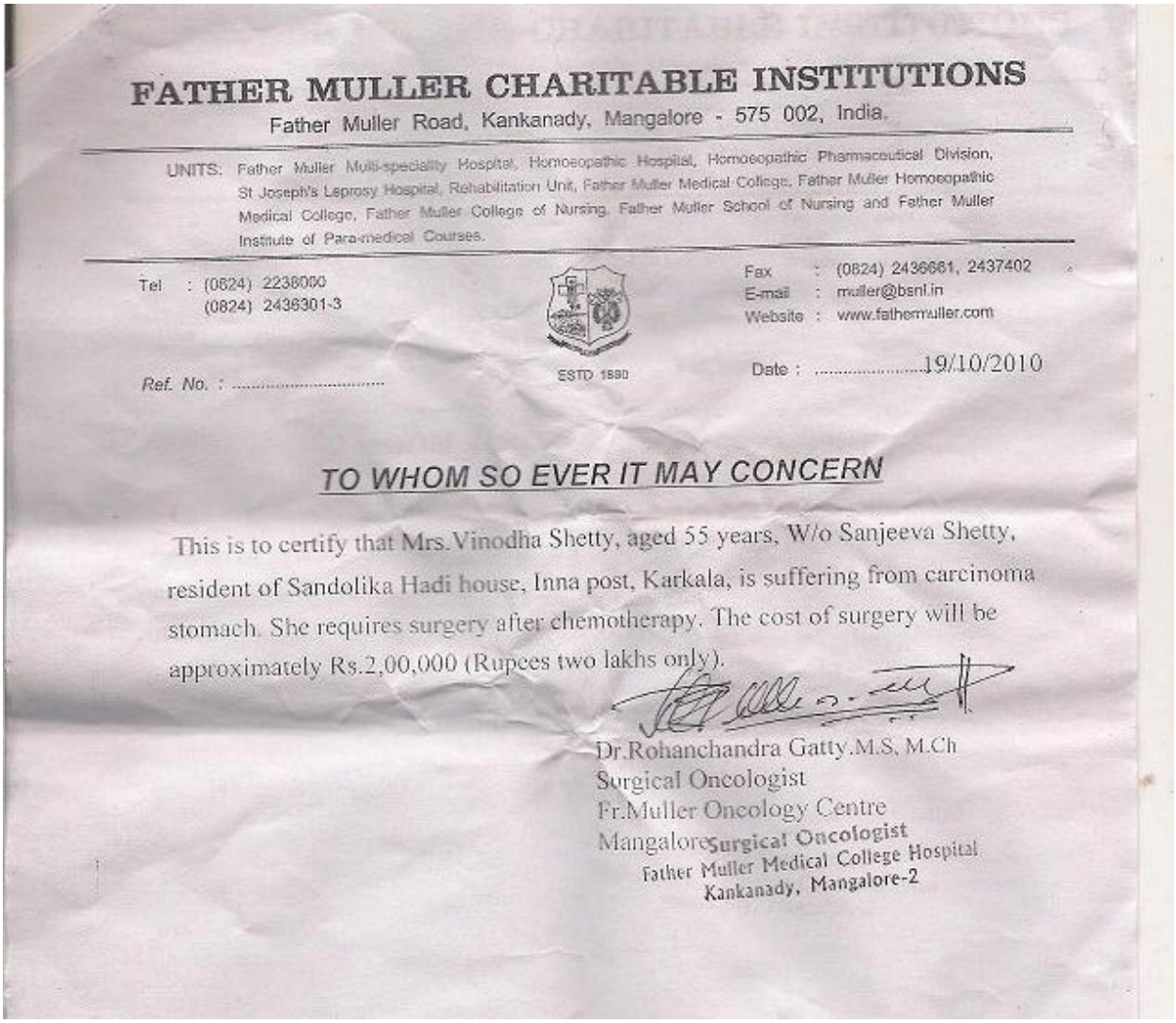

FATHER MULLER CHARITABLE INSTITUTIONS

Father Muller Road, Kankanady, Mangalore - 575 002, India.

UNITS: Father Muller Multi-speciality Hospital, Homoeopathic Hospital, Homoeopathic Pharmaceutical Division, St Joseph's Leprosy Hospital, Rehabilitation Unit, Father Muller Medical College, Father Muller Homoeopathic Medical College, Father Muller College of Nursing, Father Muller School of Nursing and Father Muller Institute of Para-medical Courses.

Tel : (0824) 2238000
(0824) 2436301-3

Fax : (0824) 2436661, 2437402
E-mail : muller@bsnl.in
Website : www.fathermuller.com

ESTD 1880

Ref. No. : .....

Date : 19/10/2010

TO WHOM SO EVER IT MAY CONCERN

This is to certify that Mrs.Vinodha Shetty, aged 55 years, W/o Sanjeeva Shetty, resident of Sandolika Hadi house, Inna post, Karkala, is suffering from carcinoma stomach. She requires surgery after chemotherapy. The cost of surgery will be approximately Rs.2,00,000 (Rupees two lakhs only).

Dr.Rohanchandra Gatty.M.S, M.Ch
Surgical Oncologist
Fr.Muller Oncology Centre
Mangalore

Surgical Oncologist
Father Muller Medical College Hospital
Kankanady, Mangalore-2

ऑन्कोलॉजी सेंटर, फादर मुलर मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल, कनकनडी, मेंगलूर के डा. रोहनचंद्र गट्टी द्वारा पत्र, जिसमें लिखा है कि 55 वर्षीय विनोबा शेट्टी, निवासी संडोलिका हदी हाउस, इन्ना पोस्ट, करकला, कार्सिनोमा स्टमक से ग्रसित हैं, उन्हें कीमोथैरेपी के बाद सर्जरी की आवश्यकता पड़ेगी, जिसमें करीब 2 लाख रुपए खर्च आयेगा।

पापिलरी एडेनोकार्सिनोमा (गर्भाशय का कैंसर)

गर्भाशय का कैंसर: श्रीमती ममता, उम्र 28 साल, विभिन्न समस्याओं के लिए अस्पताल में भर्ती हुईं थीं और उन्हें निम्न सर्जरी से गुजरना पड़ा:-

क) स्लैगिंग लैप्रोटॉमी (ओवेरियन ट्यूमर)

ख) टोटल एब्डॉमिनल हिस्टरेक्टॉमी (गर्भाशय को हटाना)

ग) बाईलेटिरल साल्फिंगो ओहरेक्टॉमी (दोनों अंडाशय हटाना)

घ) इंफ्रा कोलिक अमेनेक्टॉमी एंड एपेंडेक्टॉमी (एपेंटिक्स का हटाना)

जांच और विभिन्न परीक्षणों के बाद उनकी रिपोर्ट इस प्रकार आयी- "पैपिलरी एडेनोकार्सिनोमा" यानी गर्भाशय का कैंसर। डॉक्टरों ने उन्हें हर पंद्रह दिन में छह बार तीन महीने तक कीमोथेरेपी अपनाने की सलाह दी। सर्जरी के बाद उनके पेट में दर्द था, शरीर में कमजोरी और चलने में कठिनाई थी। मूत्र के निसतारण के वक्त खून भी बह रहा था, जो कि नियंत्रित नहीं हो रहा था। उन्होंने नवम्बर 2009 में मूत्र चिकित्सा शुरू कर दी और सभी गोलियां खानी बंद कर दी। 10 दिनों की छोटी अवधि के भीतर उन्हें पेट दर्द, कमजोरी से राहत मिली थी और खून बहना पूरी तरह बंद हो गया और अन्य समस्याएं समाप्त हुईं व आसानी से चलने लगीं।

उन्होंने 3 महीने के लिए उचित विधि में इलाज जारी रखा और इस अवधि के दौरान उन्हें उनके सारे कष्टों से राहत मिली और उन्होंने अपने शरीर में सहनशक्ति प्राप्त की थी। हालांकि नवंबर 2009 में चिकित्सक ने उन्हें कीमोथेरपी से गुजरने की सलाह दी थी, वे कीमोथेरेपी या कोई अन्य उपचार लेने के बिना जीवित हैं। वे चुस्त और स्वस्थ हैं और बिना समस्या के अपनी दिनचर्या की गतिविधियों को कर रही हैं। उनके बाल भी मजबूत हो गए हैं और पहले की तुलना में 9" बड़े हो गए हैं। मूत्र चिकित्सा अपनाने के बाद वे चुस्त और स्वस्थ हैं और वे आज तक किसी चिकित्सक के पास या किसी अस्पताल नहीं गई हैं।

बेंगलुरू

08-11-2010

मैं ममता 29 साल की हूँ। मेरे पित्ताशय में 12 सेमी का पुटीय द्रव्यमान था। 21 अक्टूबर 2009 को मेरा ऑपरेशन हुआ। मेरा गर्भाशय निकाल दिया गया, दोनों अंडाशय निकाले गये और परिशिष्ट भी। उसके बाद रिपोर्ट, डिम्बग्रंथि के कैंसर के रूप में आयी। डॉक्टर ने मुझे "कीमोथेरेपी" के 6 चरणों से गुजरने की सलाह दी। मैं पूरी तरह अचेत हो गयी, मुझे लगा जीवन समाप्त। माँ ने मुझे श्री जगदीश भुरानी के बारे में बताया। मैं और मेरे पति उनसे व्यक्तिगत रूप से मिलने गये। उन्होंने हमें मूत्र चिकित्सा के लाभ और आहार की उचित विधि, मालिश करने के रास्ते और मूत्र से गीला पैक रखने के बारे में बताया। सर्जरी से पहले और बाद में मेरे पेट में दर्द था और मैं बहुत कमजोर हो गई थी और स्वतंत्र रूप से चलने में सक्षम नहीं थी। मैंने मूत्र चिकित्सा शुरू की तो सारी दवाएं बंद कर दीं। एक सप्ताह के में दर्द खत्म हो गये। खून बहना बंद हो गया। मैं मजबूत महसूस कर रही थी।

मैंने 3 महीने के लिए इस इलाज को जारी रखने का निर्णय लिया। मैने वैसा ही किया और अब मैं तन्दुरुस्त और स्वस्थ हूँ। मुझे रसायन चिकित्सा के लिए नहीं गुजरना पड़ा। अब मेरे बाल भी लंबे हो गए हैं। लगभग कहिए 9"से 10" तक। मैं भगवान को धन्यवाद करती हूं कि उसने मुझे इस तरह के व्यक्ति को दिखया और मै अपनी माँ को भी धन्यवाद करती हूं।

काश अगर मैं श्री जगदीश भुरनी के साथ संपर्क में पहले आयी होती, तो मेरी शल्य चिकित्सा नहीं हुई होती। इतना पैसा बच जाता। मैं कैंसर से पीड़ित लोगों को सुझाव दूंगी कि वे सर्जरी के बजाय इसे अपनाएं, जिस पर कुछ भी खर्च नहीं होता।

Mamtha 12/11/2010

नोट - ममता द्वारा अंग्रेजी में पत्र का अनुवाद। (ममता)

चिकित्सक की रिपोर्टः - सर्जरी और कीमोथेरेपी से गुजरना

LOVE CARE SHARE
JMJ

ST. PHILOMENA'S HOSPITAL
No. 4, Campbell Road
Viveknagar P.O., Bangalore - 560 047.
Ph : 4016 4300
Fax : 2557 5704
E-mail : stphilomenashospital@vsnl.net

To whom ever so it may concerned

This is certify that Mrs Mamtha J.S. 28 yrs underwent surgery (staging laparotomy) for Ovarian tumor on 21. 10. 09. Total abdominal hysterectomy c̄ Bilateral salpingo oophorectomy c̄ infra colic omentectomy c̄ appendicectomy were performed. Histopathological report came as papillary serous cystadeno carcinoma.

रोगियों की केस हिस्ट्री जिन्होंने प्राप्त किया मूत्र चिकित्सा से लाभ

डा. के. सी. बल्लाल : "डा. बल्लाल की आयूर केयर क्लीनिक, पुराने रोगों से ग्रसित अपने रोगियों को 1995 से मेरे पास आने की सलाह देते आ रहे हैं। उन सभी ने इस उपचार से लाभ प्राप्त किए हैं। (डा. बल्लाल: मो नं.- 09900567924)

1. पित्ताशय में पत्थर - श्री रामकृष्ण रेड्डी (पुरुष): उम्र 55 वर्ष, पेट में तीव्र एवं गंभीर दर्द से पीड़ित थे। उस तीव्र दर्द के कारण वे खड़े नहीं हो पाते थे है, बैठ व सो नहीं पाते थे। उन्हें बें गलुरू और हैदराबाद में विभिन्न अस्पतालों में भर्ती कराया गया था। स्कैनिंग और पूरे चेकअप के बाद डॉक्टरों ने बताया कि उनके पित्ताशय में एकाधिक पत्थर हैं और उन्होंने "पित्ताशय"" हटाने की सलाह दी गई।

मेरी सलाह पर श्री रामकृष्ण रेड्डी ने सितंबर 2006 में "मूत्र चिकित्सा" शुरू कर दी। उन्होंने महसूस किया कि उनका गंभीर दर्द धीरे-धीरे दिन ब दिन कम होता गया और दर्द 7 दिनों के भीतर पूरी तरह से बंद हो गया। उन्हांने 60 दिनों के लिए इलाज जारी रखा, और उसके बाद हैदराबाद गए और स्कैनिंग व पूरी जांच के लिए फिर से अस्पताल में भर्ती हुए। जिन डॉक्टारों ने उनकी बीमारी के बारे में बताया था व जांच की थी वे पित्ताशय में पत्थर का एक भी निशान न देखकर चकित थे। आखिरकार डॉक्टरों ने उन्हें सलाह दी कि सर्जरी की आवश्यकता नहीं है।

2. मोटर नयूरोन रोग - श्री श्रीचंद (पुरुष) उम्र 58 वर्ष: पिछले तीन साल से मोटर न्यूरॉन रोग (एमएनडी) से पीड़ित थे। चिकित्सा की सलाह पर वो 12 गोलियां प्रतिदिन लेते थे और उसके बावजूद दिन ब दिन उनका स्वास्थ्य गिरता जा रहा था। तीन साल की अवधि के दौरान उनकी प्रतिरक्षा प्रणाली, नसें और कंधे से नीचे की मांसपेशियां धीरे-धीरे कमजोर हो गईं। हाथों और पैरों के सभी जोड़ कठोर और निष्क्रिय हो गए और वो चलने व अपनी उंगली, हाथ व पैर उठाने में अक्षम हो गए। स्वास्थ्य में गिरावट और कमजोरी के कारण उन्होंने अपनी मांसपेशियों को जैसे खो दिया था।

मेरी सलाह पर स्वर्गीय श्री श्रीचंद ने नवंबर 2006 में मूत्र चिकित्सा शुरू कर गोलियाँ लेनी बंद कर दीं। 10 दिन के छोट से अंतराल में वह अपने शरीर में ऊर्जा महसूस करने लगे। उनके स्वास्थ्य में गिरावट बंद हो गई और उनके प्रतिरक्षण तंत्र में धीरे-धीरे दिन ब दिन सुधार होने लगा। उनके हाथ एवं पैरों के सभी कड़े जोड़ ढीले पड़ गए और चलने लगे। उनके तंत्रिका तंत्र में सुधार हुआ और पूरे शरीर में मांसपेशियां विकसित होने लगीं। उन्होंने धीरे-धीरे अपने अपने कंधे, हाथ, घुटनों व शरीर के अन्य भागों को कुछ हद तक चलाने लगे।

जिन लोगों का किसी भी अन्य रोग के मोटर न्यूरॉन से निदान किया गया है, जिसमें शरीर का बिगड़ना शुरू होता है, उन्हें बिना किसी देरी के साथ शरीर की आगे की गिरावट को रोकने और नियंत्रित करने के लिए तुरंत मूत्र चिकित्सा शुरू करनी चाहिए।

3. लकवा - श्री कुप्पास्वामी (पुरुष): आयु 75 वर्ष, को लकवा का स्ट्रोक पड़ा था और अस्पताल में भर्ती कराया और कई परीक्षणों और निदान के बाद उन्हें 30 दिनों के बाद छुट्टी दे दी गई। लकवा के कारण उनके हाथ और पैर समेत शरीर का दायां भाग कठोर एवं निष्क्रिय हो गया, और वो अपना दायां

हाथ एवं पैर हिला नहीं सकते थे। उन्हें कुछ कदम चलने के लिए दो व्यक्तियों के सहारे की जरूरत पड़ती थी उसके बावजूद वो अपना दायां पैर आगे नहीं बढ़ा पाते थे। तभी से उन्होंने अपनी बोली खो दी और वह एक शब्द भी नहीं बोल सकते थे। बोलने के प्रयास करते वक्त सिर्फ खरखरी आवाज निकलती थी कोई उनके शब्द समझ नहीं सकता था।

स्वर्गीय श्री कुप्पास्वामी ने मूत्र चिकित्सा शुरू की और 75 दिनों की अवधि में उनके हाथ पैरों के जोड़ जो बहुत ज्यादा सख्त थे, नर्म पड़ गए व चलने लगे। वह अपना दायां हाथ व पैर उठाने में सक्षम हो गए और एक व्यक्ति का सारा लेकर कुछ कदम चलने भी लगे। अपने बिस्तर पर पीठ क बल लेटते समय भी अपना बायां पैर ऊपर और नीचे करने लगे। उनके पूरे शरीर की मांसपेशियों को आराम मिला और वे हलका, ऊर्जावान और आरामदायक महसूस करने लगे थे।

वह कुछ शब्द बोलने में सक्षम हो गए और उनकी आवाज़ नर्म हो गई, जो पहले काफी कठोर हो गई थी। उनके सिर के बीच के हिस्से में बाल उगने लगे, जो पहले पूरी तरह गंजे थे। उनका रंग खिल गया और वो पहले की तुलना में जवान दिखने लगे।

4. बालों का झड़ना- श्रीमती आशा रानी (महिला), उम्र 40: वर्ष ने मुझसे मेरे मोबाइल पर संपर्क किया और कहा कि उनके बाल हर रोज़ झड़ते हैं और उन्होंने चिकित्सकों की सलाह पर विभिन्न दवाएं लीं, लेकिन किसी से भी मदद नहीं मिली। उन्होंने पूछा कि क्या वह "मूत्र चिकित्सा" से लाभ प्राप्त कर सकती हैं। मेरी सलाह पर उन्होंने सुबह एक बार मूत्र पीना शुरू कर दिया और रात में अपने सिर पर मूत्र से गीले पैक को रखती थीं और सुबह हटाती थीं। यह उनके लिए आश्चर्य था कि 30 दिनों की अवधि के भीतर उनके बाल गिरने बंद हो गए और लंबे होने शुरू हो गए।

5. श्री विनोद (पुरुष) उम्र 15 साल: गंभीर घुटने के दर्द से पीड़ित था, दाहिने पैर के जोड़ों पर सूजन थी और चलने में कठिनाई होती थी। उसने बायोप्सी परीक्षण एवं अन्य परीक्षण करवाए, लेकिन चिकित्सक कोई बीमारी नहीं ढूंढ सके। उसने 45 दिनों के लिए मूत्र चिकित्सा को जारी रखा और उसे पूरी तरह अपने घुटने के दर्द, सूजन से राहत मिली और ठीक से चलने लगा।

6. दमा- श्री प्रसाद (पुरुष) उम्र 52 वर्ष: पिछले 35 वर्षों से (17 वर्ष की आयु में उसे दमा हुआ था) दमा से पीडित था। उसे नियमित रूप से जुकाम बना रहता था और नाक बहती रहती थी। लगभग हर दिन उसे साँस लेने में दिक्कत होती थी। उसने रोज़ाना सुबह केवल 200 मिलीलीटर मूत्र पीना शुरू कर दिया। उसके चार की अवधि में उनका गंभीर दमा की समस्या 70% तक कम हो गई और उन्हें जुकाम एवं सांस लेने की समस्या से राहत मिली।

7. घुटने की समस्या - श्रीमती जया लक्षमी (महिला) उम्र 58 वर्ष: इनकी हृदय शल्य चिकित्सा हुई और उसके बाद उन्हें चलने में तकलीफ होती थी, वो सीढ़ी भी चढ़ने में सक्षम नहीं थीं। मेरी सलाह पर उन्होंने केवल अपने मूत्र से हर रोज अपने शरीर की मालिश शुरू कर दी और हलका आहार लेने लगीं। मात्र दो माह की अवधि में वो ठीक ढंग से चलने लगीं और वो सीढ़ी चढ़ने में भी सक्षम हो गईं वो भी बिना किसी कठिनाईयों एवं बिना किसी समस्या के।

8. अलसर - श्रीमती वीना (महिला) उम्र 30 वर्ष: इनके पैर में अल्सर विकसित हो गया था अर्थात दाएं पैर की एड़ी में चोट लगी और उसमें संवेदनशीलता कम हो गई। उन्हें निमहांस और अन्य अस्पतालों में तीन बार भर्ती कराया गया। चिकित्सकों ने बताया कि वे टेथरेड कॉर्ड के साथ एल 5-एस 1 स्तर से ग्रसित हैं।

तीन साल तक अस्पताल में भर्ती होने और चिकित्सकों से सलाह लेने के बावजूद उन्हें कोई राहत नहीं मिली और उन्हें चलने में दिक्कत होती थी।

मेरी सलाह पर श्रीमती वीना ने नवंबर 2006 में मूत्र चिकित्सा शुरू कर दी जिसके अंतर्गत उनहोंने मूत्र पीना, शरीर पर मूत्र से मसाज करना और मूत्र से गीला पैक दाहिने पैर पर रखना शुरू कर दिया। धीरे-धीरे 60 दिनों (दो माह) की अवधि में उनकी चोट ठीक होने लगी अर्थात "अल्सर" पूरी तरह ठीक हो गया और उनके पैर में संवेदनशीलता वापस प्राप्त कर ली। उन्हें दर्द एवं अन्य समस्याओं से राहत मिल गई। वो ठीक से चलने में सक्षम हो गई और स्वस्थ्य जीवन जीने लगी।

9. एचआईवी एड्स - श्री रवि कुमार (पुरुष) उम्र 34 वर्ष- को वर्ष 2004 में पता चला कि उन्हें एचआईवी/एड्स है। उनकी त्वचा पर काले धब्बे और काले दाग दिखाई देन लगे थे, जैसे कि जली हुई त्वचा जो शरीर के भाग पर दिखाई दे रही थी और शरीर पर सभी बाल गायब थे। उनके पूरे सिर पर खुश्की थी। वो कई प्रकार की समस्याओं से जूझ रहे थे जैसे- कमजोरी महसूस करना, सुन्न पड़ जाना और उनके शरीर में कोई ऊर्जा नहीं थी। वो अपनी दैनिक गतिविधियों को करने में असमर्थ थे और नियमित रूप से कार्यालय नहीं जा पाते थे। उनके सीडी4 की संख्या भी घटकर 250 कोशिकाओं तक हो गई थी और उनका स्वास्थ्य दिन ब दिन बिगड़ता जा रहा था।

मेरी सलाह पर श्री रविकुमार ने मार्च 2009 में मूत्र थेरेपी शुरू कर दिया। 10 दिनों की अवधि के भीतर उनके स्वास्थ्य की गिरावट पूरी तरह से बंद हो गयी और उनके शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार शुरू हो गया। त्वचा पर काले धब्बे और उनकी त्वचा के कुछ अंश जो जली त्वचा की तरह दीखते थे वे गायब हो गए है।

उनके शरीर में नयी त्वचा विकसित हुई है जो बहुत साफ है और नरम है। बाल फिर से अपनी नई त्वचा पर आ गए हैं। उनके सिर पर रूसी ठीक हो गयी है और अब कोई भी समस्या नहीं है। उनकी प्रतिरक्षा प्रणाली में सुधार हुआ है और वह ऊर्जावान, स्वस्थ रहकर अपने सामान्य गतिविधियों को कर रहे हैं और अपने कार्यालय नियमित रूप से जा रहे हैं। उसकी सीडी 4 कऊंट्स फरवरी 2010 में 250 कोशिकाओं से 663 कोशिकाओं तक बढ़ने लगे हैं।

10. पेशी कुपोषण - श्री अभिषेक (पुरुष), उम्र 11 वर्ष: मस्कुलर डिस्ट्रोफी एवं डिसेबिलिटी से ग्रसित था। वो पिछले पांच वर्षों से हर एक दिन छोड़ कर "स्टीरॉइड" की 30 मिलीग्राम गोलियां लेता था, जैसा कि चिकित्सक ने उसे सलाह दी थी। उसके बावजूद उसकी मांसपेशियां दिन ब दिन कमजोर होती जा रही थीं। उसे चलने में दिक्कत होती थी, सीढ़ी नहीं चढ़ सकता था और मांसपेशियों में कमजोरी के कारण कई बार वो गिर जाता था। उसे कुर्सी से उठने व खड़े होने के लिए दो लोगों का सहारा लेना पड़ता था।

श्री अभिषेक ने मूत्र चिकित्सा शुरू की और 30 दिनों की छोटी सी अवधि के दौरान वो ऊर्जावान महसूस करने लगा और अपनी ताकत वापस पाने लगा। हर सप्ताह धीरे-धीरे "स्टीरॉइड" की गोलियां कम हो गईं और वो 15 मिलीग्राम प्रति एक दिन छोड़ कर लेने लगा।

उसकी कमजोर मांसपेशियां शक्तिशाली हो गईं, वो अपने आप कुर्सी से उठने में सक्षम हो गया, बिना किसी सहारे के। वो चलने में भी पहले से ज्यादा सक्षम हो गया और वो चलते समय एक बार भी गिरता नहीं था। उसने मूत्र चिकित्सा को 45 दिनों तक जारी रखा और उसके बाद अपना उपचार बंद कर दिया, क्योंकि वो स्कूल जाने व कक्षाओं में जाने के लिए उत्साहित था।

11. नेफ्रेटिक सिंड्रोम - श्री रक्षित (पुरुष) उम्र 9 वर्ष: को डेढ़ साल की उम्र से स्टीरॉइड डिपेंडेंट नेफ्रेटिक सिंड्रोम (गुर्दे की समस्या) थी और मूत्र में प्रोटीन कम होता जा रहा था। चिकित्सकों की सलाह पर वो स्टीरॉइड की गोलियां 30 मिलीग्राम से 5 मिलीग्राम तक प्रतिदिन लेता था।

उसके बावजूद उसके चेहरे, पेट, पैर और शरीर के अन्य भागों में सूजन बनी रहती थी और अकसर उसे सिर दर्द, पेट दर्द और शरीर में दर्द होता था। उसे गंभीर खांसी भी थी और उसे रुक-रुक कर सांस लेने की समस्या थी और वो अपने सक्रिय जीवन को जीने में सक्षम नहीं था और अन्य बच्चों की तरह नहीं खेल सकता था। मास्टर रक्षित ने दिसंबर 2008 में मूत्र चिकित्सा शुरू की। चिकित्सा शुरू करने के बाद धीरे-धीरे स्टीरॉइड की गोलियां कम होते-होते बंद हो गईं। 10 दिन के अंदर गंभीर खांसी और रुक-रुक कर सांस लेने की समस्या भी पूरी तरह खत्म हो गई और वो दिनप्रति दिन ठीक होने लगा। वो चुस्त एवं स्वस्थ्य हो गया है और स्कूल जाने लगा है,

कक्षाओं में नियमित रूप से जाता है और अन्य बच्चों के साथ खेलता है, जो कि पहले नहीं था। उसने तीन महीने तक चिकित्सा जारी रखी। तीन महीने बाद वो लगातार स्कूल से वापस लौटने के बाद वो अपना मूत्र पीता है। वह अब बुद्धिमान, बहुत सक्रिय हो गया है, ऊर्जावान महसूस करता है, स्वस्थ्य जीवन जी रहा है और उसे अब कोई समस्या नहीं है। स्टीरॉइड की गोलियां भी पूरी तरह बंद हो गई हैं।

जन्म से प्रभावित "गुरदे सिंड्रोम" ठीक/नियंत्रित किये जा सकते हैं।
व्यक्तियों को "स्टेरॉयड पर निर्भर " नहीं होना पड़ेगा।

12. सेरेब्रल पॉल्सी , माइक्रो सेफली , मानसिक मंदता: बेबी अमृता (एफ) 9 साल का लड़की का, प्रमस्तिष्क पक्षाघात यानी सेरेब्रल पाल्सी, मानसिक मंदता, माइक्रो सेफली, जन्म से सामान्यकृत सीज्योर विकार के साथ निदान किया गया।

वह 9 साल से निष्क्रिय स्थिति में थी और वह विभिन्न समस्याओं से पीड़ित थी। उसकी रीढ़ की हड्डी में एक तरफ हड्डी बढ़ गई। उसके दोनों हाथ और दोनों पैर मुड़े हुए थे और उसके सभी जोड़ बहुत कठोर हो गये थे। वह पूरी तरह निष्क्रिय थी क्योंकी वह बैठने, खड़े होने या चलने में असमर्थ थी। वह अपने हाथ और पैर चला नहीं सकती थी। वह अपनी गर्दन उठाने में सक्षम नहीं थी और अपना सिर नहीं घुमा सकती थी।

वह एक शब्द भी बोलने में और कुछ भी संवाद करने में सक्षम नहीं थी। वह भेंगी आंखों के साथ पैदा हुई थी और वह अपनी आँख की पुतलियों को चलाने में असमर्थ थी। उसकी आंख की पुतलियाँ नीचे गिरी हुई थीं जो स्पष्ट रूप से दिखती नहीं थीं। उसकी आँखों में केवल सफेद स्क्रीन दिखाई देती थी।

वह न तो देख सकती थी और न ही कुछ सुन सकती थी और किसी भी तरीके से खुद को व्यक्त नहीं कर पाती थी। वह तरल के रूप में चूर-चूर किया गया भोजन पर जीवित थी, वह अपने जबड़े चलाने में असमर्थ थी और कुछ भी खा नहीं पाती थी। उसको एक दिन में अक्सर 20 से अधिक समय के लिए बार-बार प्रबल जकड़न के दौरे आते थे। चिकित्सक उसके लिए उसकी सामान्य स्थिति को पुनर्जीवित करने में असमर्थ थे और चिकित्सा सहायता के साथ उसके बार-बार प्रबल जकड़न के दौरे नियंत्रित नहीं कर सके। बेबी अमृता ने जनवरी 2009 में मूत्र थेरेपी शुरू कर दिया और वह धीरे-धीरे सुधार दिन ब दिन उसे मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य में शुरू हुई।

उसकी रीढ़ की हड्डी में, जो पूरी तरह से एक ओर झुकी हुई थी, सुधार हुआ है और झुकाव कम हो गया। वह पहले अपनी समस्या को काबू करने के लिए "कैपरा" की 2000 मि.ग्रा. की गोलियां ले रही थी, जो धीरे धीरे प्रति दिन 1000 मि. ग्रा. तक कम हो गईं। उसके बार-बार आने वाले जकड़न के दौरे नियंत्रित होने लगे और उसको एक दिन में केवल एक या दो जकड़न के दौरे आते हैं।

उसकी आँखें सामान्य हो गयी हैं वह अपनी आँख की पुतलियों को चला सकती है और अपनी आँखों को घुमा सकती है। उसकी भेंगी आँखों में सुधार हुआ और उसकी आँख की पुतलियांस्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं। वह सुनने और ध्वनि पर प्रतिक्रिया करने में सक्षम है और अपना सिर मोड़ने लगी है। वह अपने माता पिता को पहचानने में सक्षम है और उसने उन पर मुस्कुराना शुरू कर दिया है। उसके हाथों और पैरों के सभी कड़े जोड़ ढीले, चलने वाले और सक्रिय हो गए हैं।

उसके मुड़े हुए हाथ और पैर सीधे हो गए हैं। वह अपना सिर पकड़ने, अपनी गर्दन घुमाने में सक्षम है और वह अपने माता पिता की उंगलियाँ पकड़ लेती है। उसके हाथ, पैर, चेहरे और शरीर के अन्य भागों में मांसपेशियाँ विकसित हो गई हैं। उसने हाथों और पैरों में शक्ति प्राप्त की है और उसका वजन बढ़ गया है।

वह कुर्सी पर बैठ लेती है और कुछ समय के लिए हलके सहारे के साथ खड़ी हो जाती है। वह अपना मुँह खोलने, अपने जबड़ों को चलाने और भोजन को खाने और चबाने में सक्षम है जो वह पहले नहीं कर सकती थी। वह अपरिष्कृत बन गई है और जब भी उसे कुछ चाहिए या मूत्र त्यागना चाहती है वह ध्वनि करके या जोर से रो कर अपने माता पिता को इशारा करती है। वह अपने मुंह से आवाज करती है और बात करने की कोशिश करती है।

इलाज से पहले बेबी अमृता

अमृता ने अपनी निष्क्रिय अवस्था से काफी तेजी से उबर गई अब उसके मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य में तेजी से विकास हो रहा है। अब उसके माता-पिता उसके अंदर एक सक्रिय जीवन देख सकते हैं।

बेबी अमृता इलाज के बाद

13. मस्तिष्क पक्षाघात के साथ सेरेब्रल पाल्सी : - श्री जगन (पुरुष) 10 वर्ष के लड़के के निमहांस अस्पताल में वर्ष 2005 में सेरेब्रल पाल्सी के साथ मध्यंम मानसिक मंदता के निदान के लिए भर्ती कराया गया। वो बैठने, खड़े होने, चलने चलने में असमर्थ था, अपने हाथ, पैर नहीं हिला सकता था, उसके जोड़ बहुत सख्ता हो गए थे। वह बात करने में सक्षम नहीं था, और अपनी गर्दन को उठा या सिर को घुमा नहीं सकता था। वह अपनी आंखों की पुतलियां घुमाने या किसी को पहचानने में भी असमर्थ था।

उपचार के 45 दिन बाद

मास्टर जगन ने मूत्र चिकित्सा सितंबर 2008 में शुरू की और 45 दिन में उसके अंदर उल्लेखनीय सुधार दिखाई दिया। उसने अपने जन्म के 10 वर्ष की अवधि के बाद पहली बार कुछ शब्द बोलना शुरू किए। उसके हाथों और पैरों के सभी कड़े जोड़ ढीले, गतिशील और सक्रिय हो गए। वह अपनी गर्दन उठाने लगा, ध्वनि से प्रतिक्रिया करने और अपना सिर घुमाने में सक्षम हो गया। वह अपनी आंख की पुतलियों को घुमाने और अपने माता पिता को पहचानने में सक्षम हो गया है। वह अपने हाथ में गिलास पकड़ने और खुद पानी पीने में सक्षम हो गया।

उसने अपना इलाज चार महीने के लिए जारी रखा। अब वह बहुत सक्रिय, बहुत बुद्धिमान हो गया है और वह ठीक से बात करने में सक्षम है। वह रिमोट कंट्रोल लेता है और खुद टीवी देख लेता है और एक सुखी जीवन जी रहा है। मूत्र चिकित्सा जन्म से लगी बीमारियों का नियंत्रण व इलाज कर सकती है। यह मेमोरी, समझ और ब्रेन फंक्शन का विकास कर सकती है। यह बोलने की योग्यता को पुनः प्राप्त और सुनने की असफलता की समस्या का अंत कर सकती है।

14. एक्सटेंसिव ल्यूको डिस्ट्रोफी के साथ सेरेब्रल पाल्सी:- श्री अंशुलत (पुरुष), उम्र 13 वर्ष, को सेरेब्रल पाल्सी, सफेद तत्व, एक्सटेंसिव लयूको-डिस्ट्रोफी, एलेक्जैंडर रोग और जनरलाइज़्ड बाईलेटरल सेंट्रल सीज्योर्स से ग्रसित था। उसकी रीढ़ की हड्डी में टेढ़ापन विकसित हो गया और उसे बैठने, खड़े होने, चलने में दिक्कत होने लगी और वो अपने हाथ, पैर को चला नहीं पाता था और उसके जोड़ बहुत जकड़ गए थे। वो बोलने में भी सक्षम नहीं था, अपनी गर्दन को संभाल नहीं पाता था, सिर को घुमा नहीं पाता था। वो अपनी आंखों की पुतलियों को भी नहीं घुमा पाता था व किसी को पहचान नहीं पाता था। उसकी रीढ़ की हड्डी टेढ़ी स्थिति में झुक गई और रीढ़ की हड्डी के बीच में एक हिस्सा मुड़ गया था। चेहरे की तुलना में उसका सिर ज्यादा भारी और आकार में बड़ा हो गया था और उसके हाथ एवं पैर मुड़ गए थे।

चिकित्सकों से सलाह लेने के लिए उसके माता-पिता उसे निमहांस और अन्य अस्पताल ले गए। निमहांस में चिकित्सकों ने उसे सलाह दी कि उसकी कंडीशन दिन ब दिन बिगड़ती जा रही है और वो दवाएं नहीं दे सकते।

उपचार से पहले

श्री अंशुलत ने जनवरी 2009 में मूत्र चिकित्सा शुरू की और दिन प्रति दिन धीरे-धीरे उसमें सुधार होने लगा। उसका सिर जो पहले काफी भारी दिखता था और आकार में बड़ा दिखता था बाद में कुछ हद तक घट गया और उसकी भौतिक आकृति पहले से काफी बेहतर दिखने लगी। अब वो अपनी आंखों की पुतली घुमा सकता है, ध्वनि पर प्रतिक्रिया देकर, सिर घुमाता है।

उसके हाथ, पैरों और शरीर के अन्य भागों में मांसपेशियां विकसित हो गई हैं। उसके हाथ के जोड़ हलके हो गए और चलने लगे। उसका मुड़े हुए हाथ एवं पैरों में सुधार दिखने लगा, कुछ हद तक सीधे हो गए। वह कभी कभी वो अपने हाथ और पैर सीधे भी करने लगा। ऊपर सुधार 4 महीने की अवधि के दौरान देखा गया। उसके माता पिता कुछ अप्रत्याशित कारणों की वजह से इलाज जारी नहीं रख सके।

15. "एएलएस" एक्यूट लंबर स्पॉडिलाइटिस , डिस्क ऑस्टियोफिटिक कॉम्प्लेक्स फ्रॉम C4-5 से C6-7 एंड डिफ्यूस डिस्क डीहाइड्रेशन:- श्री कृष्ण मूर्ति (पुरुष), उम्र 39: डिफ्यूस्ड डिस्क डीहाईड्रेशन, डिस्क ऑस्टीफाइटिक कॉम्पलेक्स सी4-5 से सी6-7 से पीडित थे और एएलएस (एक्यूट लुंबर स्पॉडिलाइटिस) का मामला था। वो मधुमेह से भी ग्रसित थे।

जुलाई 2008 में उन्हें अपने दाहिने हाथ की उंगलियों में संवेदनशून्यता एवं कमजोरी महसूसत हुई, जो बाद में कमजोर एवं निष्क्रिय हो गईं। उनका स्वास्थ्य दिन ब दिन बिगड़ता गया। शरीर के अन्य भागों पर धीरे-धीरे असर होने लगा यानी दाहिना हाथ, दाहिना पैर, बायां हाथ और बायां पैर कमजोर हो गया व चलना बंद हो गया। उनके सभी जोड़-मांसपेशियां कमजोर, कठोर और निष्क्रिय हो गईं। पेट, हाथ, पैर, पीठ, शरीर के अन्य भागों में दर्द था।

उनके दोनों हाथों और पैरों में सूजन थी और उनके बाल गिरने लगे। 2 साल की अवधि के दौरान उनकी बीमारी की वजह से विभिन्न अंग फेल हो गए। उनके बोलने की क्षमता बिगड़ गई और वह ठीक से बोलने में असमर्थ हो गए। वह पूरी तरह से निर्भर हो गए, वह खड़े होन, अपने आप से चलने में असमर्थ होगए और अपने हाथ और पैर उठाने में असमर्थ हो गए। उन्होंने कई चिकित्सकों से सलाह ली व बहुत सारे अस्पताल गए लेकिन कोई राहत नहीं मिल सकी। निमहांस और अन्य अस्पतालों के चिकित्सकों ने उन्हें सलाह दी कि अब उनकी बीमारी को नियंत्रित या उसका इलाज का कोई हल नहीं है। वो स्वास्थ्य की गिरावट को रोकने में भी असमर्थ थे, जो दिन ब दिन गिरती जा रही थी।

उपचार के 12 दिन बाद

श्री कृष्णा मूर्ति ने जुलाई 2010 में मूत्र चिकित्सा शुरू की और सभी दवाएं बंद कर दीं। 12 दिन की छोटी सी अविधि के उनके स्वास्थ्य में गिरावट रुक गई और उनके स्वास्थ्य में दिन ब दिन सुधार आने लगा। पेट, पीठ, पैर और शरीर के अन्य हिस्से में दर्द से उन्हें राहत मिली। उनके दोनों हाथों और पैरों में सूजन नहीं थी। उनके जोड़ और मांसपेशियां ढीली एवं सक्रिय हो गईं। वह बैठने और 2 व्यक्तियों का सहारा लेकर चलने में भी सक्षम हो गए। वह अपने शरीर में ऊर्जा महसूस कर रहे हैं और वे दोनों हाथ उठा सकते हैं और अपने चेहरे को छू सकते हैं, जैसा कि पहले नहीं कर पाते थे। उनके बोलने की शक्ति में भी सुधार हुआ है और वह थोड़ा बेहतर तरीके से बात करने में सक्षम हो गए।

4 महीने की अवधि में श्री कृष्णा मूर्ति के स्वास्थ्य में धीरे - धीरे दिन ब दिन सुधार हुआ है। वह एक सहज सीधे ढंग से आराम से बैठने के लिए सक्षम है। इलाज से पहले उनके कंधे सामने की ओर झुके हुए थे। उनहोंने अपने शरीर में ऊर्जा और सहनशक्ति पुनः पा ली है और उन्हें बहुत अच्छा लग रहा है। इससे पहले वह अपने शरीर में कंपन महसूस कर रहे थे जो अब पूरी तरह बंद है। उनके जोड़ अधिक ढीले और गतिशील बन गए हैं। वह अपने हाथों को आसानी से उठा सकते है। वह खुद अपने आप बिना किसी सहायता के व्यक्तिगत रूप से चलने में सक्षम हैं। उनकी बोलने की शक्ति में सुधार हुआ है और एक सामान्य तरीके से बोल सकते हैं।

मधुमेह:- वे पिछले 8 वर्षों से एक मधुमेह रोगी भी थे। वे रोजाना 2 गोलियाँ ले रहे थे और उनकी रक्त शर्करा अनियन्त्रित थी। अर्थात। 200mg/dl से ऊपर। मूत्र चिकित्सा अपनाने के बाद उपवास शर्करा का स्तर दिन से दिन ध्यान दिया जाता था। जब भी उपवास रक्त शर्करा 80 मिलीग्राम/डेसीलीटर और उससे नीचे पाई जाती थी तब आधी गोलियां कम कर दी जाती थीं। इसी तरह से गोलियाँ धीरे-धीरे शून्य तक कम हो गई थी। 2 महीने की अवधि में

यह देखा गया था कि उपवास शर्करा का स्तर कोई भी गोलियाँ लेने के बिना सामान्य था। उसके बाद से उसने कोई भी गोली नहीं ली है और उसकी रक्त शर्करा सामान्य हो गयी है। क्षतिग्रस्त अग्न्याशय पुनर्जीवित हो गए हैं और उनकी 8 साल की मधुमेह ठीक हो गयी है।

16. गुर्दा विफलता:- डा. जयश्री (महिला) उम्र 47 साल के क्रोनिक किडनी विफलता का निदान किया गया था। वे पिछले 4 साल से, एक सप्ताह में 3 बार के लिए डायलिसिस के इलाज पर चल रही थीं। उनहोंने डायलिसिस के 458 राउंड पुरे किये थे। डायलिसिस के बाद वे कमजोर और थका हुआ महसूस करती थीं।

डॉ. जयश्री ने सितम्बर 2010 में मूत्र चिकित्सा नियत करी। 15 दिन की अवधि में उनके स्वास्थ्य में काफी सुधार आ गया है। पहले 30 दिनों में उनके क्षतिग्रस्त गुर्दे पुनर्जीवित हो काम शुरू करने लगे। 30 दिनों के बाद वह डायलिसिस के लिए एक सप्ताह में 3 बार के बजाय 2 बार जा रही हैं। वे डायलिसिस उपचार के बाद अपने शरीर में कमजोरी या थकान नहीं महसूस करती हैं। सहनशक्ति हासिल करके, वे पहले से भी अधिक ऊर्जावान और स्वस्थ महसूस करने लगी हैं। उन्होंने इलाज बंद कर दिया क्योंकी वे 2 महीने के बाद आध्यात्मिक बैठक में भाग लेने शहर से बाहर चली गईं थीं।

मधुमेह :- वे पिछले 20 सालों से मधुमेह रोगी भी थीं। वे प्रतिदिन इंजेक्शन की 54 इकाइयों को ले रही थीं (सुबह में 32 इकाइयां और रात में 22) 30 दिनों की अवधि के भीतर इंजेक्शन कम हो गए और वे सुबह केवल 30 इकाइयाँ ले रही हैं और उनके रक्त में शर्करा सामान्य श्रेणी के भीतर थी। उन्होंने इलाज बंद कर दिया क्योंकी वे 2 महीने के बाद आध्यात्मिक बैठक में भाग लेने शहर से बाहर चली गईं थीं।

17. बाँझपन , श्रीमती नलीनाक्षी (एफ) उम्र 36 साल और श्री रमेश (एम) 38 साल वर्ष की 2004 में शादी हुई थी। श्रीमती नलीनाक्षी गर्भ धारण नहीं कर पा रही थीं और छह साल के दौरान गर्भवती नहीं हो सकीं। पति-पत्नी दोनों ने स्त्रीरोग विशेषज्ञ से सलाह ली थी और गुनाशीला आईवीएफ केन्द्र में चिकित्सकों के पास गए और विभिन्न बांझपन विशेषज्ञों से परामर्श किया।

उन्होंने चिकित्सा परीक्षण, स्कैनिंग, एक्सरे कराया और सभी आवश्यक प्रक्रिया पूरी करी। इसका "प्राथमिक बांझपन के साथ निदान किया गया। श्री रमेश की "वीर्य विश्लेषण" के परीक्षण की रिपोर्ट ने बताया कि वे कम शुक्राणु संख्या और कम शुक्राणु गतिशीलता के विकार से पीड़ित थे।

श्रीमती नलीनाक्षी का थायरोइड की समस्या से पीड़ित होने का निदान किया गया। वे पूर्व सिंड्रोम "पीएमएस" की माहवारी की समस्या से पीड़ित थीं। उन्हें 20 से 22 दिनों के भीतर अनियमित मासिक धर्म होते थे। उनके मासिक धर्म के समय के दौरान उनको अत्यधिक रक्तस्राव, पेट में दर्द और बेचैनी होती थी। उनहोंने अपनी "पीएमएस" समस्या के लिए कई स्त्रीरोग विशेषगयों से परामर्श किया, लेकिन कोई भी चिकित्सक उन्हें उनकी समस्या के लिए किसी भी उपाय की सलाह न दे सका।

श्रीमती नलीनाक्षी ने आईयूआई "इंट्रा यूटेराइन इन्सेमिनेशन" कराया। यह वह प्रक्रिया है जिसमे पुरुष साथी के वीर्य को केंद्रित किया जाता है और सफल गर्भावस्था की संभावनाओं को बढ़ाने के उद्देश्य के लिए महिला के गर्भाशय के प्रजनन पथ में सीधे इंजेक्ट किया जाता है। उन्होंने तीन बार आईयूआई प्रक्रिया कराई- 1) अरुणोदय क्लिनिक; 2) कैंब्रिज चिकित्सालय 3) जीएम हेल्थ केयर।

सभी 3 बार परिणाम नकारात्मक रहे थे, और वह गर्भ धारण करने में सक्षम नहीं थीं। अंत में चिकित्सकों ने उन्हें आईवीएफ "इन विट्रो निषेचन" कराने की सलाह दी। यह वह प्रक्रिया है जिसमें महिला साथी के अंडाशय से अंडे को हटा दिया जाता है और प्रयोगशाला में महिला के शरीर से बाहर पुरुष शुक्राणुओं के साथ निषेचित किया जाता है। निषेचित अंडे "भ्रूण" गर्भावस्था को आगे बढ़ाने के लिए महिला के गर्भाशय में स्थानांतरित किए जाते हैं।

"आईवीएफ" की प्रक्रिया डा। रमेश चिकित्सालय में जून 2010 में की गई थी। उन्होंने एक बच्चे को पाने की महत्वाकांक्षा को पूरा करने की उम्मीद के साथ "आईवीएफ" की प्रक्रिया कराई थी, लेकिन वे निराश रहीं क्योंकी परिणाम नकारात्मक रूप में बाहर आए थे और वे गर्भ धारण करने में सक्षम नहीं हुईं। उन्हें उपचार कराने के लिए 2 लाख रुपये खर्च करने पड़े। उन्होंने अपने सपने को पूरा करने के लिए लगभग सभी कोशीशें की थी, लेकिन कोई भी नहीं काम नहीं आई किया और वे अत्यधिक थके हुए और उदास थे।

मेरी सलाह पर श्रीमती नलीनाक्षी और एसआरआई रमेश ने दिसंबर 2010 में मूत्र चिकित्सा शुरू कर दी। वे दोनों अपनी दैनिक दिनचर्या के साथ व्यस्त थे और दिन के समय के दौरान अपने कार्यालय जा रहे थे। उन्होंने कार्यालय से वापस आकर रात के समय के दौरान और सुबह में अपने कार्यालय जाने से पहले मूत्र चिकित्सा के आंशिक उपचार को शुरू कर दिया।

महावारी पूर्व सिंड्रोम : - उन्हें 2 महीने की अवधि में पीएमएस समस्या "महावारी पूर्व सिंड्रोम" से राहत मिल गई थी। उनके मासिक धर्म के उनके अनियमित चक्र सामान्य हो गए हैं और उन्हें नियमित समय में मासिक धर्म हो रहे हैं अर्थात् बिना किसी परेशानी के एक सामान्य तरीके से 28 दिनों पर।

आंशिक उपचार के 3 महीने पूरा करने के बाद 19 मार्च 2011 को उन्होंने फिर से जाँच कराई और उनकी निदान की गई रिपोर्ट ने उल्लेखनीय सुधार के संकेत दिए। कम शुक्राणु संख्या और कम गतिशीलता: - श्री रमेश के "वीर्य विश्लेषण" के परिणाम " सामान्य " रूप के दिखे। उनकी कम शुक्राणु संख्या और कम गतिशीलता संख्या में वृद्धि हुई और सक्रिय हो गये।

थाइरॉइड: - श्रीमती नलीनाक्षी की थाइरॉइड की जांच रिपोर्ट ने फ्री टी 3, टी 4, और टीएसएच की सामान्य रेंज दिखाई। हीमोग्लोबिन HbA1c, और उनकी सभी अन्य परीक्षण की रिपोर्ट सामान्य श्रेणी के रूप में दिखाई गईं।

प्रमाण-पत्र
(मेल द्वारा भेजे गये)

सीएमएल ल्युकिमिया

चीजें बहुत तेज गति में सुधर रही हैं। मेरा ड्ब्ल्यूबीसी एक महीने बाद 265,000 से 219,000 तक गिर गया और फिर उसके तीन सप्ताह बाद यह 151000 तक गिर गया। मैने मंगलवार को एक और रक्त परीक्षण कराने के लिए सोचा और मुझे उम्मीद है कि ये इसके आगे भी और नीचे हो सकता।

मैं इस बात के लिए आभारी से परे हूँ, मुझे लगता है कि जब से यह कटु अनुभव शुरू हुआ है मैं पहली बार ठीक हो रही हूँ।

जेसन क्लार्क
एफसी रिचमंड
केवाई, संयुक्त राज्य अमेरिका
नवम्बर 03, 2012

एचआईवी पॉजिटिव

सभी प्रयोगशालाएं पहले से बेहतर करने के लिए जारी हैं, इसमें गुर्दे, अग्न्याशय, आदि शामिल हैं। सीडी4 गणना 800 से अधिक है, वायरल लोड पता नहीं लग पा रहा है।
जेम्स
सेन जोस
कैलिफोर्निया, संयुक्त राज्य अमेरिका
3 नवम्बर, 2012

सिज्योरेस

प्रिय महोदय,

मेरी तीव्रता काफी कम हो गई है। इसके अलावा मानसिक शांति में काफी वृद्धि हुई है। इससे पहले मैं आसानी से ध्यान नहीं कर पाती थी। अब मैं नियमित रूप से ध्यान कर सकती हूं। मुख्य परिवर्तन जिसकी अभी भी मैं उम्मीद कर रही हूँ, वह है दौरों की आवृत्ति। यह केवल मामूली रूप से नीचे आया है। इसके अलावा जीवन का सामना करने के मेरे आत्मविश्वास के स्तर में एक अच्छी वृद्धि हुई है।

भवदीय,

हर्ष वर्धन आर

harsha.vardhana.r@gmail.com

नवंबर 03, 2012

त्वचा रोग

महोदय,

मैं खुशी से कहना चाहता हूं कि 25 साल पहले होम्योपैथी दवाएं जो मैं पिछले 25 साल से खा रहा हूं और आयुर्वेदिक दवाएं जो 6-7 साल पहले शुरू कीं, उनकी तुलना में मूत्र चिकित्सा शुरू करने के बाद से मैंने ज्यादा सुधार महसूस किया। मूत्र चिकित्सा मैंने सितंबर 2012 में शुरू की थी।

अब मैने होम्यो और आयुर्वेदिक चिकित्सा दोनों को बंद कर दिया है।

धन्यवाद,

एन सुरेंद्रन,

लुधियाना, पंजाब 141015

unni15101952@yahoo.in

नवंबर 03, 2012

मोटापा

नमस्कार महोदय,
गुरुपूर्णिमा की हार्दिक शुभकामनाएं !

मुझे मूत्र चिकित्सा प्रक्रिया से मार्गदर्शन कराने के लिए आपका बहुत धन्यवाद। मैं आपको बहुत बहुत धन्यवाद देता हूं। मैं बेहतर महसूस कर रहा हूँ। मैने 4 हफ्तों में करीब 8 किलो वजन कम किया है। मैं अधिक ऊर्जावान महसूस कर रहा हूँ। मैने अपने दम पर पहले से ही लोगों को मूत्र चिकित्सा का प्रचार शुरू कर दिया है मैं जानता हूँ वे इस महत्वपूर्ण ज्ञान का आदर करेंगे। आपकी सहायता के लिए एक बार फिर धन्यवाद।

राजेश्वरी जे वी
सिकंदराबाद

rajeshwari_jv@yahoo.co.in
जुलाई 03, 2012

उन्मुक्त प्रणाली

महोदय, मैं वास्तव में इस स्व मूत्र चिकित्सा से प्रभावित हूँ। मैं इंटरनेट और पुस्तकों पर इतने सारे लेख पढ़ने के बाद 4 दिनों से इसका उपयोग कर रहा हूँ। मैने प्रतिरक्षा प्रणाली में सुधार, थकान में उपचार, पेट की समस्या, मुँहासे हटाने के मामलों में शीघ्र परिणाम पाए। यह उन लोगों के लिए वरदान है, जिन्होंने स्वास्थ्य के लिए जीवन में सब कुछ करने की कोशिश की लेकिन कुछ हासिल नहीं कर पाए। मैने अपने सभी दोस्तों को रोगों के इलाज के लिए इस अद्वितीय चिकित्सा को जितना जल्दी हो सके अपनाने का सुझाव

दिया है। मैं ज्ञान लेने के लिए आपकी वेबसाइट पर भी गया था। इस थेरेपी के लिए आपके कार्य उत्कृष्ट हैं, और अपनी नई किताब के विमोचन की पूर्व संध्या पर आपको बधाई। इसे जारी रखिए महोदय...

जगदीश अकबरी
सूरत, भारत
jagdish_akbari@rediffmail.com
सितंबर 18, 2012

चोट

मुझे आपका मेल मिला और इस प्रक्रिया का पालन करने की कोशिश कर रहा हूं। यहां उल्लिखित करने के लिए एक और बात है कि मेरे पति पश्चिम बंगाल परिवहन निगम में हैं और वहाँ कई कर्मचारी हैं, जो मूत्र चिकित्सा का अभ्यास कर रहे हैं (काम करते समय चोट ग्रस्त होने पर चोट लगे हुए अंग के बाहरी हिस्से पर लगाना) उनके मुताबिक चोट लगे हुए भाग पर लगाने के बाद दर्द और खून बहने में पारंपरिक दवा से तेजी से राहत मिलती है। तो यह देखने और मुझसे सुनने के बाद, वे अपने नाखून में मूत्र लगा रहे हैं, जो काले हो गये हैं और उनमें दर्द होता है और सिर्फ 10 दिन लगाने के बाद उन्हें दर्द से राहत है और केवल काला निशान मौजूद रह गया है।

और जब वे जिला मिदनापुर, पश्चिम बंगाल में अपने गांव जाते हैं, वे गरीब लोगों को सांप के काटने के समय में मूत्र की चिकित्सकीय उपयोगिता के बारे में बताते हैं क्योंकि उनके गांव से चिकित्सा सहायता बस से 2 घंटे पर है और जो एक दिन में केवल 4 बार उपलब्ध है।

सधन्यवाद।

अर्चना भट्टाचार्य
कोलकाता
abhattacharyya34@gmail.com
नवंबर 19, 2012

दांत दर्द, मसूड़ा क्षय

महोदय,

अब मैं दर्द से पूरी तरह निजाद पा चुका हूँ। मैं आपके सुझाव का पालन कर रहा हूँ, पी रहा हूं, गरारा कर रहा हूं और नियमित रूप से गीले पैक रख रहा हूं।
आपके सहयोग के लिए धन्यवाद।

रोहित वी रावल
सूरत, गुजरात
rohit_raval27@yahoo.com
नवंबर 5, 2012

लीगामेंट्स में चोट

नितिन कुमार की 26 सितम्बर 2011 को एक बड़ी दुर्घटना हुई। उनके सिर, गर्दन, कंधे, रीढ़ की हड्डी और घुटनों के लीगामेंट्स में गंभीर चोटें लगीं। वे कई डॉक्टरों से चिकित्सा उपचार लेने के बावजूद 13 माह से लिगामेंट में चोटों की वजह से पूरे शरीर में गंभीर दर्द से पीड़ित थे। वे बैठने, खड़े होने या ठीक से चलने में और अपनी सामान्य गतिविधियों को करने में असमर्थ थे। मेरी वेबसाइट के माध्यम से उन्होंने मुझे व्यक्तिगत रूप से संपर्क किया और अक्टूबर 2012 से मूत्र चिकित्सा शुरू कर दी। 4 महीने की अवधि (2012 अक्टूबर से जनवरी 2013) में एक क्रमिक ढंग से उन्हें अपने कष्टों से आराम मिल गया। उनके सिर, गर्दन, कंधे, रीढ़ की हड्डी, घुटनों में गंभीर दर्द 90% कम हो गया है। वे अपनी सामान्य गतिविधियों को करने में सक्षम हैं।
02/01/2013 को टेलीफोन द्वारा उपरोक्त विवरण दिया गया।

ई - मेल द्वारा पुष्टि की गई : -

आदरणीय महोदय,

मैं नितिन मित्रा, एतद्द्वारा स्वीकार करता हूं कि मेरी प्यारे श्री जगदीशजी द्वारा निर्धारित शिवाम्बू चिकित्सा मेरे कंधों, घुटनों और रीढ़ (गर्दन के दर्द सहित) में आकस्मिक लीगामेंट्स की चोटों में चामत्कारिक काम कर रही है। मैं चार महीने से उनकी निर्धारित चिकित्सा को जारी रखे हूँ और मैं बड़ी राहत महसूस कर रहा हूँ। मेरे सुधार के मुताबिक, मैं अपने आप को ये आश्वासन दे सकता हूं कि वर्तमान में बनी हुई समस्याएं बहुत जल्द ही ठीक हो जाएंगी। मैं बहुत आभारी हूँ कि भगवान शिव ने उनको यह ज्ञान दिया है। मैं कामना करता हूं कि इस इलाज का उनका ज्ञान रोगों को निष्क्रीय बनाने में मददगार होगा। स्वस्थ और प्राकृतिक जीवन जीने की आपकी इच्छाओं के लिए सभी को धन्यवाद।

धन्यवाद और आदर,

नितिन मित्रा
दिल्ली
nitinmitra@hotmail.com
जनवरी 10, 2013

सामान्य स्वास्थ्य

एक बहुत ही उपयोगी और सफल कहानी को नेट पर डालने के लिए मैं आपका बहुत आभारी हूँ।मैं गुजरात सरकार में एक राज्य सरकार अधिकारी हूं। **(**मो। **09909979577)**।

मैने पिछले 2 महीने से मूत्र चिकित्सा प्रयुक्त की है और मेरा वसा और मधुमेह कम हो गया है मैं पहले से बहुत ज्यादा बेहतर महसूस कर रहा हूँ, कि मेरी खुशी का बयान करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। एक दिन भी मूत्र पिये बिना लगता है, कि कुछ छूट रहा है। मैं एक दिन में तीन बार मूत्र पीता हूं, सुबह, भोजन के दो घंटे बाद और शाम को 6:00 बजे, हर बार मात्रा होती है 200 ग्राम।

मेरे अनुरोध पर, मेरे भतीजे की पत्नी जिगना, 35, वजन 87 किलो ने भी इस थेरेपी को शुरू कर दिया है और वह भी बहुत अच्छा महसूस कर रही है और उसने केवल 15 दिनों की अवधि के अंदर कुछ वजन भी घटा लिया है। उन्हें स्थायी सिरदर्द से तत्काल राहत मिली है।

उसकी बेटी सृष्टि जिसके चेहरे पर खील थे, उसको भी राहत मिली है। वह अपने चेहरे पर मूत्र रगड़ती थी। उसने 7 दिनों के लिए यह किया और उसे अच्छा लग रहा है। मेरे भाई कृष्णवदन उम्र 69 सेवानिवृत्त सरकारी अधिकारी, जिन्हें घुटने में समस्या थी, उन्होंने भी मूत्र चिकित्सा शुरू कर दी और एक महीने के अंदर ही राहत महसूस कर रहे हैं।

मैं आपके लंबे और सुखी स्वस्थ जीवन की कामना करता हूं।

चैतन्य पारिख
गांधीनगर, गुजरात
chaitanyaparikh@rediffmail.com

जनवरी 16, 2013

पुराने रोगियों के लिए इलाज की प्रणाली एवं विधि : -

"मूत्र चिकित्सा" की उचित विधि है-

क) मूत्र पीना

ख) मूत्र से पूरे शरीर की मालिश करना

ग) शरीर के प्रभावित हिस्से पर मूत्र से गीला पैक रखना

घ) पानी पीना, रस पीना और हलका एवं संतुलित आहार लेते रहना

मूत्र पीने के साथ संतुलित और हल्का आहार लेते रहना बहुत महत्वपूर्ण और आवश्यक है, पुरानी बीमारी से पीड़ित मरीजों को अधिकतम लाभ प्राप्त करने के लिए मूत्र के गीले पैक रखने के साथ मूत्र से शरीर की मालिश करनी चाहिए। व्यक्तियों को प्राकृतिक उपचार के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण और विश्वास का विकास करना चाहिए, जो उनके जीवन को बचाने और उन्हें दर्द और सभी प्रकार की पीड़ा से दूर कर सकती है। इस उपचार में व्यक्तियों को इसके लाभ उनके व्यक्तिगत विश्वास, रुचि, प्रयास, भोजन और उपचार की विधि के मुताबिक ही देखने को मिलेंगे। व्यक्ति जो इस इलाज को पूरे उत्साह के साथ स्वेच्छा से अपनाते हैं उन्हें अपने स्वास्थ्य में 10 से 15 दिन यानी एक या दो सप्ताह के छोटे अंतराल में धीरे-धीरे सुधार देखने को मिलेंगे।

मूत्र का रंग और स्वाद उस पर निर्भर करता है कि व्यक्ति क्या खाते हैं और पीते हैं। अगर कोई व्यक्ति जो हर घंटे पर बहुत सारा पानी पीता है और और मूत्र विसर्जित करता है, उसका आंतरिक शरीर साफ हो जाता है और मूत्र का रंग सफेद (रंगहीन जैसे पानी) हो जाता है। इसी तरह से कोई व्यक्ति जो संतुलित एवं हलका खाना खाता है और तेल, नमक, मसाले और मिर्च का उपभोग अपने आहार में नहीं करते उनके मूत्र में गंध नहीं होती।

व्यक्ति जो अपने दैनिक दिनचर्या और अन्य गतिविधियों में व्यस्त है और उनको इलाज की संपूर्ण विधि करने के लिए समय नहीं मिलता है, लेकिन खुद को स्वस्थ रखना चाहता है वह सुबह मूत्र पी सकते हैं। डिनर लेने के बाद और बिस्तर पर जाने से पहले उसे 500 मिलीलीटर (आधा लीटर) पानी पीना चाहिए। इसके बाद वे हल्के पीले रंग का या सफेद बेरंग का मूत्र निकालेंगे जिसे वे पी सकेंगे। एक बार जब वे मूत्र पीना शुरू कर देंगे तो उन्हें सुबह तक मूत्र और पानी पीते रहना चाहिए।

इस प्रक्रिया में वे आसानी से एक या 1½ लीटर मूत्र सुबह तक पी सकते हैं और वे खुद को चुस्त और स्वस्थ रख सकते हैं। वे लोग जो "मूत्र थेरेपी" को अपनाना चाहते हैं, लेकिन संकोच करते हैं या मूत्र पीने के लिए अपना मन नहीं बना पाते वे शुरू में पहली बार मूत्र के साथ अपने शरीर की मालिश द्वारा इलाज शुरू कर सकते हैं। इसके बाद वे मूत्र में शहद, पानी या मूत्र में कोई भी रस डालने से और उसे पीने से मूत्र पीना शुरू कर सकते हैं।

यदि व्यक्ति पानी, रस पीता है और संतुलित आहार लेता है, वो सफेद रंग का मूत्र प्रवाहित करता है, जिसमें दुर्गंध भी नहीं होती। सफेद रंग का मूत्र आसानी से बिना किसी झिझक के पिया जा सकता है, क्योंकि उसका स्वाद एकदम पानी के जैसा होता है और उसमें स्वस्थ्य बने रहने के लिए जरूरी प्रोटीन और विटामिन होते हैं। व्यक्ति धीरे-धीरे सुधार प्राप्त कर सकते हैं, वो भी सिर्फ मूत्र पीकर या सिर्फ मूत्र से मालिश कर या मूत्र से गीला पैक रख कर। सिर्फ मूत्र पीकर, व्यक्ति के शरीर के आंतरिक भाग की सफाई होती है, वो जवान हो जाता है और अपने शरीर में ऊर्जा का प्रवाह महसूस करने लगता है। यह आवश्यक अंग जैसे मस्तिष्क, हृदय, फेफड़े, आंतों और लीवर, आदि की प्रतिरक्षक क्षमता को पुनजीर्वित एवं पुनर्विकसित करेगी, जो बीमारी के कारण क्षतिग्रस्त हो गये।

मूत्र पीना सर्वोत्तम दवाई है, जिस भी व्यक्ति ने पहली बार पीड़ा लेकर इस प्रयोग को अपनाया है और मूत्र को पहली बार पीया है वो संतुष्ट हुआ है। व्यक्ति जो रोजाना दिन में कभी भी 1 लीटर मूत्र (सफेद या पीले रंग) पीएं और दिन में एक बार शरीर पर मूत्र से मालिश करें, वो धीरे-धीरे अपनी बीमारियों को नियंत्रित एवं ठीक कर सकते हैं। वो ढेर सारी दवाईयों को लेने से बच सकते हैं और अपने अपको स्वस्थ्य रख सकते हैं।

केवल मालिश से व्य क्ति सभी प्रकार के त्वचा रोगों का इलाज कर सकते हैं। त्वचा निखर जाती है और हर प्रकार के अप्राकृतिक काले धब्बे और सफेद धब्बे गायब हो जाते हैं। यह त्वचा को स्थाई चमक प्रदान करती है, जो "स्पा या ब्यूटी पार्लर" जानेसे नहीं प्राप्त की जा सकती। मूत्र से मालिश करने और मलने से त्वचा के बहुत सारे रोगों से छुटकारा प्राप्त कर सकते हैं। और फिर त्वचा साफ और मुलायम हो जाएगी।

शरीर के भागों के कांपने, सुन्न पड़ जाने और पक्षाघात के लिए मूत्र से मालिश करना काफी कारगर रहता है और ठोस जोड़ ढीले पड़ जाते हैं, लचीले और चलने योग्य हो जाते हैं। बुखार के समय मूत्र को शरीर पर मलने से शरीर का तापमान को नीचे लाया जा सकता है। कटने, चोट लगने और जलने के लिए मूत्र एंटी-सेपटिक दवा है जो काफी बेहतरीन तरीके से कार्य करता है। सिर्फ मूत्र से गीले पैक को रख कर व्यक्तियों को कई समस्याओं से राहत मिल सकती। यह गैंगरीन (मांस का सड़ना), पुराने अल्सर और चोटों को ठीक कर सकता है, जो दवाओं से ठीक नहीं हो रहीं। यह बालों के गिरने को रोक सकता है और बाल मजबूत हो जाएंगे और लंबे होना शुरू हो जाएंगे। कुछ लोग जो गंजे हो गए हैं वे अपने गंजे सिर पर बाल उगते देख कर आश्चर्यचकित रह जएंगे। मूत्र दंत चिकित्सा और अन्य मौखिक मुसीबतों में भी प्रभावी है। दांत में साधारण दर्द के लिए मुँह में कुछ मूत्र रखें और कुल्ला करें जो सुबह और शाम को छह बार दोहराया जाना चाहिए। ह

मारे शरीर में रक्त प्रकृति द्वारा विकसित और उत्पन्न होता है। रोग के कई गंभीर मामलों में लाखों लोगों के जीवन को बचाने के लिए एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को रक्त का ट्रांसप्लांटेशन किया जाता है।

मूत्र "दैवी अमृत" है और चूंकी मूत्र रक्त से आता है, यह किसी को भी अर्हता प्राप्त कराएगा जो अगर एक उचित आजार के बाद एक दूसरे के प्रदान किए गए मूत्र को पिएगा। एक स्वस्थ व्यक्ति का मूत्र किसी अन्य व्यक्ति, जिसे अपना मूत्र इकठ्ठा करने में कठिनाई हो या असमर्थ हो, द्वारा पीया या मला जा सकता है। एक व्यक्ति किसी अन्य स्वस्थ व्यक्ति का मूत्र पी सकता है क्योंकी पृथ्वी पर इसके बराबर कोई अन्य उपाय नहीं है। यह उपचार शक्ति से युक्त है जो आश्चर्यजनक है और एक व्यक्ति आध्यात्मिकता से प्रबुद्ध हो जाता है जिसे व्यक्तिगत रूप से अनुभव किया जाता है।

माँ अपना सफेद रंग का मूत्र (पानी की तरह रंग हीन) अपने बच्चे को यह अपने शरीर से निकालने के तुरंत बाद प्रदान करके पीने के लिए दे सकती है जब वह अधिक पानी पीए और केवल हल्का और संतुलित आहार खाए। इस विधि को अपनाया जा सकता है और सेरेब्रल पाल्सी और मानसिक विकार, आदि की तरह जन्म से बीमारी के साथ प्रभावित बच्चों को मूत्र दिया जा सकता है।

कुछ महिलाएं जो बच्चे को पाने के लिए प्रबल महत्वाकांक्षी हैं, कुछ अप्रत्याशित कारणों से या पति के अपर्याप्त सक्रिय शुक्राणुओं के कारण बच्चे को गर्भ धारण करने में असमर्थ हैं। महत्वाकांक्षा को पूरी तरह से भरने के लिए दोनों पति-पत्नी को एक दूसरे का ताजा मूत्र पीना चाहिए। उन दोनों को रस के साथ संतुलित और हलका आहार लेना चाहिए और मूत्र चिकित्सा की उचित विधि का पालन करना चाहिए। दोनों व्यक्तियों के मूत्र में एक ही मूल स्वाद होगा अगर वे एक ही आहार लेते हैं।

पत्नी को पति का मूत्र पीना चाहिए और पति के मूत्र से अपने शरीर पर मालिश करनी चाहिए और पाति को पत्नी का मूत्र पीना चाहिए और पत्नी के मूत्र से अपने शरीर पर मालिश करनी चाहिए। उन्हें एक दूसरे के मूत्र से अपने यौन अंगों को भी धोना चाहिए। यह साथी के शरीर से हार्मोन हस्तांतरण करेगा और शुक्राणुओं को मजबूत बनाता है और गर्भाधारण के होने की संभावना बनाता है। उच्च शुक्राणुओं की संख्या में वृद्धि के अलावा यह यौन उत्तेजक क्षमता और यौन सुख बढ़ाता है। यह उपचार करते समय उन्हें संभोग जारी रखना चाहिए और तब तक कोशिश करते रहना चाहिए जब तक इन शुक्राणुओं में से एक सफल ना हो जाए। प्रसव में पत्नी द्वारा पति का मूत्र पीना जन्म में मदद करता है और वह गर्भावस्था के दौरान अपना मूत्र भी पी सकती है।

कुछ महिलाएं पेट में दर्द, सफेद स्राव, अत्यधिक रक्तस्राव और अनियमित मासिक धर्म समस्या अर्थात् महावारी पूर्व सिंड्रोम (पीएमएस) से पीड़ित हैं। मासिक धर्म को मासिक चक्र से पहले प्राप्त करने के लिए उन्होंने विभिन्न समस्याओं झेलीं। उनमें से कुछ गर्भाशयोच्छेदन (गर्भाशय को हटाना) कराती हैं। मूत्र चिकित्सा उनके हार्मोन को संतुलित करने और उनके मासिक चक्र को नियमित करने के लिए शरीर की प्राकृतिक चिकित्सा प्रक्रियाओं को बढ़ावा देता है।

मधुमेह रोगियों को अपने शर्करा के स्तर को नियमित रूप से निरीक्षण करना चाहिए। जब भी उपवास शर्करा का स्तर 80 मिलीग्राम/डेसीलीटर से नीचे गिरे, उन्हें अपनीं गोलियाँ कम करनी चाहिए। अगर वे 2 गोलियाँ ले रहे हैं तो उसे कम करके हर बार ½ गोली कर दें (25% तक) अर्थात इसी तरह अगर वे इंजेक्शन ले रहे हैं तो उसे कम करके हर समय 25% करना चाहिए। उपर्युक्त साधारण तरीके से मधुमेह के रोगी अपने रक्त की शर्करा को नियंत्रित एवं उसका इलाज कर सकते हैं।

उन्हें एहसास होगा और वो देखेंगे कि उनकी रक्त शर्करा के स्तर में दिन ब दिन सुधार हो रहा है और परीक्षण रिपोर्ट के बाद धीरे-धीरे वे गोलियां खाना या इंजेक्शन लगवाना भी कम कर सकते हैं। क्षतिग्रस्त अग्न्याशय को पुनर्जीवित करने और कामकाज शुरू कर देंगे।

क्रोनिक किडनी विफलता रोगियों, जो एक सप्ताह में 3 बार डायलिसिस उपचार पर जाते हैं और जिन्हें गुर्दा प्रत्यारोपण की सलाह दी गई है, वे भी मूत्र चिकित्सा अपनाकर 1 या 2 महीने की एक छोटी अवधि में उसके लाभ का एहसास कर सकते हैं। वे लोग मूत्र चिकित्सा शुरू कर सकते हैं और उसके साथ-साथ उसी प्रकार सप्ताह में 3 बार डायलिसिस के लिए भी जा सकते हैं। वे डायलिसिस के लिए जाने से पहले क्रिएटीनाइन की जाँच करें और जब कभी क्रिएटीनाइन परिणाम 2.00 मिलीग्राम/डेसीलीटर या उससे नीचे दिखे, तब उन्हें सप्ताह में दो बार डायलिसिस पर जाना चाहिए। इसी तरह वे इसे कम करके सप्ताह में एक बार तक कर सकते हैं और बाद में डायलिसिस पर जाना बंद कर सकते हैं। क्षतिग्रस्त किडनी पुनर्जीवित होकर धीरे-धीरे सामान्य तरीके से काम करना शुरू कर देगी और लोगों को उनकी प्रमुख समस्याओं से राहत मिल सकेगी।

उन्हें डायलिसिस या किडनी प्रत्यारोपण के लिए जाने की आवश्यकता नहीं होगी। जो व्यक्ति डायलिसिस पर हैं या वे जिनके रक्त में उच्च पोटेशियम है, उन्हें सब्जियों को काट कर 4 से 6 घंटे तक पानी में भिगोना चाहिए, ताकि उन सब्जियों में से अधिक पोटेशियम हट जाये फिर उनका इस्तेमाल करें, जो की रक्त में पोटेशियम स्तर को नियंत्रित करता है। पीने के मूत्र के बाद अगर एक व्यक्ति जो मालिश और मूत्र गीला पैक रखने के लिए पर्याप्त मूत्र एकत्र करने में सक्षम नहीं हैं, तो वे कुछ अन्य व्यक्तियों, जो हलका आहार और रस ले रहे हैं के मूत्र का उपयोग कर सकते हैं।

वे गाय के मूत्र को भी इकट्ठा कर सकते हैं और उसे बाहरी मालिश के लिए उपयोग कर सकते हैं। वे लोग, जो पर्याप्त मात्रा में मूत्र प्रसाधन करने में सक्षम नहीं हैं या जिनके शरीर के कुछ हिस्सों में सूजन है, वे शुरुआत में थोड़े समय के लिए लैसिक्स टैबलेट ले सकते हैं।

लोगों को, जिनको गठिया की समस्या है और घुटने की वजह से घूमने और सीढ़ी चढ़ने में कठिनाई होती है उन लोगों को मूत्र से अपने घुटने पर हल्के ढंग से मालिश करनी चाहिए जब तक वह सूख नहीं जाता। वे 3 बार फिर समान तरीके से मूत्र को सूखने तक लगायें। वे मूत्र से गीला पैक भी अपने घुटने पर रख सकते हैं जो की अधिक प्रभावी है। यह एक दिन में 3 से 4 बार के लिए दोहराया जाना चाहिए। 10 से 15 दिनों की छोटी अवधि में उन्हें अधिक दर्द से राहत मिल जाएगी, कड़े जोड़ ढीले और चलने योग्य बन जायेंगे और वे चलने और सीढ़ी चढ़ने में सक्षम हो जायेंगे। यह उपचार के साथ घूमना, व्यायाम करना, योग और भौतिक चिकित्सा प्रतिरक्षा प्रणाली को बढ़ाता है और पुरानी बीमारियों से ग्रसित व्यक्ति की प्रतिरक्षा क्षमता को बढ़ाता है, जिससे वो जल्दी स्वस्थ्य एवं ठीक हो जाए।

पीने, मालिश करने और गीला पैक रखने की विधि

रात्रि में एक गिलास पानी में तीन नीम की पत्तियां डाल दें और उसे सुबह उठकर पिएं। ईश्वर से प्रार्थना करें कि वो आपको स्वस्थ्य रखे।
पीने 1.5 लीटर पानी पियें।
हर एक घंटे पर मूत्र या पानी पियें।
2.5 लीटर (या इससे अधिक) मूत्र सुबह से शाम तक पियें।
आंख, कान और नाक में दिन में तीन बार ताजा मूत्र की बूँदें डालें।

नोट:- सफेद रंग (पानी की तरह रंगहीन) या बहुत हल्के पीले रंग का मूत्र पिएं और बचे हुए मूत्र को शरीर की मालिश करने और मूत्र से गीले पैक के लिए बोतल में इकट्ठा करके रख लें।

मूत्र से शरीर की मालिश (सिर से पैर तक) निम्न विधि से करें:- पूरे शरीर पर मूत्र लगा लें और हल्के-हलके उसे तब तक मलें जब तक वो सूख न जाए। इस तरह फिर से मूत्र लगाएं और तब तक मालिश करें जब तक वो सूख नहीं जाता। तीन बार ठीक से मालिश करने व उसे सुखाने में करीब एक घंटा लगता है। पूरे शरीर की मालिश इसी प्रकार दिन में 2 से 4 बार करें।

मालिश के बाद:- मूत्र से गीले पैक को पेट पर और शरीर के अन्य संक्रमित भागों पर 2 घंटे तक रखें, दिन में दो बार। रात में फिर से पैक को रखें और सुबह हटाएं।

मूत्र से गीला पैक बनाने के लिए:-
एक सूती कपड़ा लें और मूत्र में भिगो दें।
मूत्र से गीले कपड़े को तह कर के पेट और संक्रमित भाग पर 3 बार रोल करें।
"मूत्र से गीले कपड़े" के ऊपर प्लास्टिक पेपर लगा दें, उसे कवर करने के लिए।
प्लास्टिक पेपर के ऊपर एक और कपड़े को लपेटें।
मूत्र से गीले पैक को हटाने के बाद, जब जरूरत पड़े तब गर्म पानी से नहाएं।

2 चम्मच शहद, 1 चम्मच अदरक का रस, आधा चम्मच नीबू का रस, आधा चम्मच हल्दी का रस (पानी में भिगोएं और कूट कर उसका रस निकालें) गर्म पानी में मिलाएं और रोजाना सुबह इस रस को पियें। खाँसी, ठंड और बुखार आने पर इसे शाम को और रात में फिर से पी सकते हैं।

दिन के समय हर 3 घंटे पर निम्नलिखित में से किसी भी रस को पियें:-

मक्खन दूध	सेब
नारियल पानी	मोसंबी
गाजर	अनार
टमाटर	सोया मिल्क
नींबू का रस	गाय का मलाई उतारा या बकरी का दूध

संतुलित एवं हल्क आहार निम्न रूप से लिया जाता है:-

<u>नाश्ता:</u>- अखरोट के साथ सफेद जई का दलिया और बादाम (सभी 6 पीस)
<u>मध्य सुबह</u>:- पपीता, छोटे केले या सेब
<u>दोपहर का भोजन:</u>- टूटा चावल, मलाई उतरा दही और उबली सब्जियां
<u>शाम को:</u>- ब्राउन ब्रेड, जई के बिस्कुट या सेब
<u>रात्रि भेज</u>:- अंकुकरित और उबले हुए हरे चने (मूंग) या हरे चने का सूप, और उबली सब्जियां या सलाद
इसमें गुड़, शहद, खजूर, लहसुन और नींबू भी ले सकते हैं।
उबली हुई सब्जियां:- गाजर, गोभी, बीन्स, और बेबी कॉर्न
सलाद:- टमाटर, ककड़ी, और घिसी हुई गाजर
फल:- सेब, छोटा केला। पपीता, सपोता (चीकू), स्ट्रॉबेरी।
<u>ये इस्तेमाल नहीं करें:</u>- साबुन, तेल, नारियल, रिफाइंड चीनी, नमक, मिर्च

लोग मूत्र पीकर, अपने शरीर पर मालिश करके और पेट व प्रभावित अंगों पर मूत्र से गीला कपड़ा रख कर उपचार शुरु कर सकते हैं। मूत्र, पानी और जूस हर घंटे पर पियें और इसके साथ संतुलित आहार लें। यह आपको लंबे समय तक के लिए करना पड़ सकता है। यह एक सुरक्षित पद्धति है। यह पद्धति वो बच्चे भी अपना सकते हैं जो सेरेब्रल पॉल्सी के शिकार हैं या जन्म से उन्हें कोई बीमारी है।

3 महीने के बाद निम्न आहार शामिल कर सकते हैं:

चपाती (रोटी):- कोलेस्ट्रॉल प्रबंधन आटा सादा आटा के साथ मिलाकरहरे चने की खुराक या इडली (अंकुरित मूँग पेस्ट होने तक पीसा जाए) छोटी मात्रा में गाय का शुद्ध घी (अधिकतम एक चम्मच प्रति दिन) छोटी मात्रा में कोलेस्ट्रॉल मुक्त मक्खन (अधिकतम 10 ग्राम प्रति दिन)

सब्जियां:- पालक, मेथी, लौकी, तुरई, गोभी, फूलगोभी, तूर दाल, हरा चना, काला चना और प्याज। सेंधा नमक, काली मिर्च और जीरा छोटी मात्रा में लिया जा सकता है।

वे लोग जो उपर्युक्त मूत्र चिकित्सा को अपना रहे हैं, उन्हें विटामिन, एंटीबायोटिक, तीव्र गोलियां और इंजेक्शन नहीं लेने चाहिए। लेकिन वे मधुमेह, रक्तचाप हृदय की समस्याओं और बुखार के लिए हलकी गोलियाँ ले सकते हैं। जब वे देखें की उनके स्वास्थ्य में प्रगति हो रही हो तो इन गोलियों को भी धीरे-धीरे कम कर सकते हैं।

व्यक्ति जो कैंसर से पीड़ित हैं, उन्हें गाजर, नारियल पानी, टमाटर, अनार और गेहूं घास का रस प्रतिदिन पीना चाहिए। गेहूं घास का रस बनाने के लिए 40 ग्राम गेहूं घास को आधे" पीसों में काट लें इसे एक मिक्सर में डालें इसे पीसे और इसे पियें।

रस और संतुलित हलके आहार "स्वस्थ आहार" के लाभ

रस और हलका संतुलित आहार "स्वस्थ आहार" है। यह आवश्यक खनिज, प्रोटीन, विटामिन और महत्वपूर्ण ऑक्सीकरण रोधी कंपाउंड का प्राकृतिक स्रोत है। यह रक्त परिसंचरण में सुधार करता है, पाचन तंत्र को साफ और प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करता है। यह शरीर को जवान बनाता है और कई रोगों से लड़ने में मददगार और लाभकारी होता है। यह मोटापे के लिए भी फायदेमंद है, और किसी भी पक्ष प्रभाव के बिना वजन कम करने, ऊर्जा को बढ़ने और स्वस्थ रहने के लिए मदद करता है।

कुछ बीमारियों के लिए बताए गए फल और सब्जियां

	रक्तचाप	मधुमेह	कोलेस्ट्रॉल	कैंसर	हृदय	दमा
सेब	✓	✓	✓	✓	✓	✓
सेम	-	✓	✓	✓	-	-
ब्राउन ब्रेड	✓	✓	-	✓	✓	-
भूरा चावल	✓	✓	✓	✓	-	-
गाजर	✓	✓	-	✓	✓	✓
कोलेस्ट्रॉल प्रबंधन						
आटा	✓	✓	✓	✓	✓	-
मूंग	✓	✓	-	-	✓	-
जई	✓	✓	✓	✓	✓	-
टमाटर	✓	✓	✓	✓	✓	-
अनार	✓	✓	✓	✓	✓	-

बादाम विटामिन ई, कैल्शियम, फास्फोरस, लौह और मैग्नेशियम का समृद्ध स्रोत है। इसमें अन्य सभी बादाम तुलना में सबसे अधिक पोषक तत्व होते हैं। यह महान चिकित्सा मूल्य के रूप में जाना जाता है। कई रोगों के लिए फायदेमंद है।

सेब में आवश्यक पोषक तत्व, एंटी ऑक्सीडेंट होते हैं जो शरीर को कुछ बीमारियों से बचाता है और शरीर में कैंसर बनने व हृदय रोग से बचाता है। यह उच्च रक्तचाप को कम करता है, आंतों को मजबूत बनाता है और शरीर से विषाक्त तत्वों को निकालने में मदद करता है। यह ऊर्जा का अच्छा स्रोत है।

ब्राउन ब्रेड (गेहूं की रोटी) उच्च फाइबर, एंटी ऑक्सीडेंट जैसे विटामिन 'बी' और आयरन से युक्त होती है। यह कब्ज, हृदय रोग, कैंसर, रक्तचाप, मधुमेह में के लिए फायदेमंद होता है और अच्छे स्वास्थ्य को बढ़ावा देता है।

ब्राउन चावल मैग्नीशियम, कैल्शियम, लौह, सेलेनियम, मैंगनीज और विटामिन बी1, बी2, बी3 और बी6 का बहुत अच्छा स्रोत है। यह आहार फाइबर और प्रोटीन का अच्छा स्रोत है। कैंसर, उच्च रक्तचाप और मधुमेह से बचने में मदद करता है और शर्करा के स्तर को नियंत्रित करने में मदद करता है। कोलेस्ट्रॉल को कम करने की क्षमता है।

सेम पोषक तत्वों, पोटेशियम, कैल्शियम का अच्छा स्रोत है। यह सभी आवश्यक कार्बोहाइड्रेट प्रदान करता है और कोलेस्ट्रॉल, रक्त शर्करा को कम करने में मदद करता है। यह हृदय रोग, कैंसर और आंतों के लिए फायदेमंद है।

लौकी आवश्यक खनिज, आयरन, प्रोटीन, फाइबर, विटामिन सी और बी कॉम्प्लेक्स में समृद्ध है। यह पाचन समस्या, मधुमेह, कलेजे के कार्यों, रक्तचाप, हृदय रोग, मूत्र विकार आदि में सहायक होता है।

मक्खन विटामिन ए, ई, के, कैल्शियम, एंटीऑक्सीडेंट, आयोडीन, ऊर्जा और महत्वपूर्ण खनिज का स्रोत है, यह मांसपेशियां बनाता है और हड्डियों को, प्रतिरक्षा प्रणाली, तंत्रिका तंत्र और मस्तिष्क की क्रिया के विकास में मदद करता है।

छांछ आवश्यक विटामिन, कैल्शियम, प्रोटीन, खनिज, आदि का मूल्यवान स्रोत है। यह तंत्रिकाओं और त्वचा में स्वस्थ सामग्री की आपूर्ति करता है और गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल के विकारों व कब्ज से छुटकारा दिलाता है।

गोभी कम कैलोरी वाला, पोषक तत्व से भरपूर भोजन है और विटामिन सी, फॉलिक एसिड, पोटेशियम, कैल्शियम, मैग्नीशियम, बायोटिन और लोहा सहित कई पोषक तत्वों का स्रोत है। यह कैंसर, हृदय रोग, मधुमेह, दमा, ब्रोंकाइटिस, रक्त में कफ की अशुद्धियों, अपच, मोटापे और दोषपूर्ण दृष्टि के लिए फायदेमंद है।

गाजर विटामिन ए, बी1, बी2, बी6, सी, ई, के, फॉलिक एसिड, पोटेशियम, कैल्शियम, बायोटिन, मैग्नीशियम, मैंगनीज और आयरन का स्रोत है। यह कम क्लोरीन, पोषक तत्वों से भरपूर भोजन है और फोटोकेमिकल से युक्त होता है जो कैंसर विरोधी गुण है। यह कैंसर, मधुमेह, सिर में दर्द, अस्थमा, ब्रोंकाइटिस, गॉलस्टोन समस्या, यकृत रोग, आंत्र अल्सर, पाचन समस्या है, प्रतिरक्षा तंत्र और त्वचा के घावों के लिए फायदेमंद है। यह मांसपेशियों का निर्माता है, रक्त साफ करने वाला और नेत्र को मजबूत बनाता है और अल्प पेशाब में सहायक है।

फूलगोभी फाइबर का एक बहुत अच्छा स्रोत है जो मलाशय के स्वास्थ्य के सुधार में मदद करता है। यह विटामिन सी और एलीसिन से युक्त होता है जो दिल के स्वास्थ्य और स्ट्रोक के जोखिम में सुधार कर सकते हैं। यह प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करने और स्वस्थ कोलेस्ट्रॉल के स्तर को बनाए रखने में मदद करता है। यह बेहद पौष्टिक होता है और इसकी पौष्टिकता में कई रोगों की सीमा को रोकने में मदद कर सकती है।

कोलेस्ट्रॉल प्रबंधन आटा में उच्च प्रोटीन, ऊर्जा, कार्बोहाइड्रेट और आहार फाइबर होते हैं, जो मैग्नीशियम, मैंगनीज, तांबा और फास्फोरस का समृद्ध स्रोत है। यह सोया प्रोटीन, जई और जौ की वस्थ्य सामग्री से युक्त होता है। यह उच्च कोलेस्ट्रॉल को कम करने में मदद करता है, पाचन और कब्ज, रक्तचाप, मधुमेह, कैंसर, उच्च रक्तचाप, स्ट्रोक और दिल की बीमारियों के लिए फायदेमंद है।

नारियल पानी में कैल्शियम, पौष्टिक, इलेक्ट्रोलाइट्स, पोटाशियम होते हैं, जो प्राकृतिक विसंक्रमित है और उसमें कोलेस्ट्रॉल नहीं होता। यह परिसंचरण में सुधार, पाचन तंत्र को साफ और प्रतिरक्षा तंत्र को मजबूत।

खीरा ठंडा, पाचक, पेट की आग से राहत देने वाला होता है। यह गठिया में राहत देता है, वात रोग की अवस्था और मधुमेह में फायदा पहुंचाता है, और मूत्र संबंधी रोगों का उपचार करता है। यह मोटापा कम करने में सहायक होता है और वजन घटाता है।

दही (स्किम्ड दही) में कैल्शियम होता है, प्रोटीन, आवश्यक विटामिन और खनिज का महत्वपूर्ण स्रोत है। यह तंत्रिकाओं और त्वचा में स्वस्थ सामग्री आपूर्ति करती है। यह गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल विकारों और कब्ज से छुटकारा दिलाती है।

खजूर विटामिन 'बी', आयरन, कार्बोहाइड्रेट, मैग्नीशियम, पोटेशियम और आहार फाइबर का अच्छा स्रोत है। यह ऊर्जा के लिए प्राकृतिक चीनी मुहैया कराता है, मांसपेशियों और तंत्रिका तंत्र को बनाए रखने के लिए आवश्यक खनिज प्रदान करता है। यह पेट के कैंसर के लिए मददगार है, स्वस्थ हड्डियों के विकास, कमजोर दिल और गर्भाशय की दीवार को मजबूत करने और हीमोग्लोबिन बढ़ाने में मदद करता है।

मेथी में प्रोटीन, विटामिन सी, नियासिन और पोटेशियम होता है। यह कई रोगों का इलाज करती है और यह कोलेस्ट्रॉल, मधुमेह, कब्ज, उच्च ट्राइग्लिसराइड्स, गठिया, दमा, पेट विकार, श्वसन रोग और गुर्दे की समस्या में फायदेमंद हो सकती हैं।

लहसुन उच्च रक्तचाप को कम करता है, यह रक्त वाहिकाओं को बढ़ाने में प्रभावी सिद्ध होता है, पल्स धीमी कर देता है, हृदय की आवृत्ति को नियंत्रित करता है और चक्कर आने से बचाता है, सांस के उखड़ने, गैस बनने से राहत देता है।

घी (गाय का शुद्ध घी) का प्राकृतिक मूल्य है, जो एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर है और प्रतिरक्षा तंत्र को मजबूत करता है और शारीरिक कमजोरी से पीड़ित लोगों को शीघ्र शक्ति प्रदान करता है। यह पेट में अतिरिक्त अम्ल को नियंत्रित करता है और पेट में श्लेष्म अस्तर बनाने में मदद करता है। लिपिड झिल्लियों में यह प्रवेश कर जाता है और उन्हे नया बना देती है और खराब पाचन तंत्र को बेहतर बनाता है। यह याददाश्त, बुद्धिमता और दिमाग की क्रियाओं को बढ़ाता है।

अदरक एक प्राकृतिक संघटक है पोटेशियम, मैग्नीशियम, तांबा, मैंगनीज का अच्छा स्रोत है। यह चिकित्सा के लिए पाचन शक्ति को उत्सर्जित करता है, गैस कम कर देता है और चक्कर आने, मिचली आने व उलटी आने के लक्षणों को प्रभावी ढंग से रोकती है। यह पाचन रोग, माइग्रेन, गठिया, उच्च रक्तचाप, डारिया रोकती है और ठंड के गंभीर लक्षणों, एलर्जी आदि को कम करने में मदद करती है।

शहद एक महत्वपूर्ण पोषक तत्व है और उसमें लोहा, कैल्शियम, सोडियम, फास्फोरस शामिल पोटेशियम होता है। यह तात्कालिक ऊर्जा प्रदान करता है। इसका इस्तेमाल कई बीमारियों के लिए उपचारात्मक और निवारक के रूप में किया जाता है। यह आँखें और अस्थमा के लिए अच्छा है, फेफड़ों, कफ जमा होने, और बालों के उगने में मदद करता है और कब्ज और अत्याधिक अम्लयता यानी ऐसिडिटी से छुटकारा दिलाता है। यह हीमोग्लोबिन और लाल रक्त कोशिकाओं (आरबीसी) के संतुलन बनाए रखने में मदद करता है।

गुड़ अपरिष्कृत चीनी है, जो कई पोषक तत्वों जैसे प्रोटीन, खनिज, फास्फोरस, लोहा, मैग्नीशियम, कैल्शियम, विटामिन, पोटेशियम, आदि, से युक्त होता है। यह खून की सफाई में मदद करता है, यकृत की क्रिया, रक्तचाप, प्रतिरक्षा तंत्र को नियंत्रित करता है और पीलिया और आमवाती वेदनाओं को रोकता है। यह तंत्रिका तंत्र को मजबूत करता है और मांसपेशियों को राहत देता है और थकान से राहत दिलाता है, रक्तचाप नियंत्रित करता है और रक्त को रोकने में मदद करता है। यह खाँसी, दमा, अपच, माइग्रेन, गले, फेफड़ों के संक्रमण और कब्ज के लिए फायदेमंद है।

जीरा रक्त का शुद्धीकरण करता है, हीमोग्लोबिन के निर्माण में मदद करता है और अपच के लिए फायदेमंद है, पेट दर्द और हृदय संबंधी बीमारियों रोकने में मदद करता है।

नींबू रक्त वाहिकाओं, धमनियों को मजबूत बनाता है और आंतरिक रक्तस्राव रोकता है। यह गुर्दे, मूत्राशय और पेट के विकारों में राहत प्रदान करता है और यह अनगिनत बीमारियों के इलाज में मदद करता है। यह शक्तिशाली एंटीबायोटिक है जो , कफ निकालता है, कब्ज दूर करता है और उल्टी से बचाता है।

दूध (स्किम्ड दूध) में कम वसा होता है, रक्त परिसंचरण, श्वसन विकारों को दूर करता है और एसिडिटी होने पर एक टॉनिक, एक शांतिदायक दवा के रूप में काम करते हुए प्रणाली के एसिड कम करता है। यह स्वास्थ्य, रक्त परिसंचरण बनाए रखने में मदद करता है।

मूंग की दाल (हरे चने) उच्च फाइबर, पोषक तत्वों, प्रोटीन, कैल्शियम और आवश्यक विटामिन की अच्छा स्रोत है। यह आसानी से पच जाती है और ऊर्जा प्रदान करती है, स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद तत्व प्रदान करती है और हृदय की समस्या, मधुमेह, उच्च रक्तचाप, अन्य सभी पुराने रोगों में फायदेमंद साबित होती है।

मोसंबी (मीठा नीबू) में मूल्यवान पोषक तत्व होते हैं और शरीर को पोषण प्रदान करती है। इससे जीवन शक्ति बढ़ जाती है, प्रतिरोध शक्ति बढ़ जाती है और उल्टी में प्रभावी साबित होता है, डीहाइड्रेशन और रक्त की अशुद्धता दूर करती है।

नीम की पत्तियां पाचन और प्रतिरक्षा तंत्र को उत्तेजित करता है। यह जिगर की क्रिया में सुधार लाता है, रक्त से विषैले तत्वों को दूर करती है और स्वस्थ परिसंचरण, श्वसन, पाचन तंत्र को बढ़ावा देता है। यह एड्स, कैंसर, मधुमेह, गुर्दे की समस्या है, नसों समस्या, रक्त विकार और हृदय रोग के लिए फायदेमंद है।

जई आवश्यक विटामिन, कैल्शियम, प्रोटीन, ऊर्जा, कार्बोहाइड्रेट, घुलनशील फाइबर और पोषक तत्वों का अच्छा स्रोत है। यह एंटीऑक्सीडेंट से समृद्ध है, भोजन में से विटामिन और अन्य खनिजों खनिजों के अवशोषण में सहायता करता है और प्रतिरक्षा तंत्र को मजबूत करता है। यह पेट में अम्ल का स्राव उत्सर्जित करता है, ताकि पाचन में मदद मिल सके, रक्त कोलेस्ट्रॉल कम करने में प्रभावी है और उच्च रक्तचाप कम करता है व अत्याधिक तनाव यानी हाईपरटेंशन दूर भगाता है। यह कैंसर, मधुमेह, अस्थमा, हृदय रोग के लिए फायदेमंद साबित होता है हृदय रोग और स्ट्रोक के खतरा को कम करता है।

पपीता विटामिन 'ए', 'बी' और 'सी' का स्रोत है, जो दिल, जिगर, गुर्दे की समस्या है, उदर विकार, मूत्र विकार और कब्ज के लिए फायदेमंद साबित होता है। यह अस्थमा से राहत देता है और रोगों में सुधार करने में मदद करता।

केले में भारी मात्रा में पोषण के गुण होते हैं और यह ऊर्जा, ऊतक बनाने वाले तत्व, प्रोटीन, खनिज, विटामिन सी, ए 1, बी6, बी12 का संयोजन होता है और कैलोरी का बेहतरीन स्रोत होता है, जो स्वस्थ्य ऊतकों के पुनरुत्पादन में मदद करता है। यह आंतों से संबंधित विकारों, कब्ज, आर्थराइटिस, गठिया, थक्का, किडनी की समस्या, आदि में फायदेमंद होता है।

अनार एंटीऑक्सीडेंट का अच्छा स्रोत होता है, हृदय तक रक्त के संचार को बढ़ाता है और एलडीएल कोलेस्ट्रॉल को कम करता है। यह पोषक तत्व प्रदान करता है, बुद्धि और चेतनत्व बढ़ाता है। यह हृदय, लीवर और किडनी की समस्याओं, जलन, बुखार, हृदय संबंधी विकार, मुंह के रोगों और गले के रोगों में फायदेमंद साबित होता है।

सेंधा नमक में खनिज और स्वास्थ्य के लिए आवश्यक तत्व शामिल होते हैं। यह फेफड़ों से बलगम और कफ आदि को साफ करता है और साइनस में जमाव दूर करता है। यह रक्त शर्करा स्तर को संतुलित रखता है और शरीर की कोशिकाओं में जलविद्युत ऊर्जा का उत्पादन करने में सहायता करता है। यह अस्थमा, एलर्जी, गठिया, उच्च रक्तचाप, माइग्रेन, सिर दर्द और अन्य समस्याओं में फायदेमंद साबित होता है।

सोया मिल्क में भारी संख्या में स्वस्थ्य यौगिक होते हैं। यह ऊर्जा, प्रोटीन, विटामिन ए, डी, कैल्शियम, फॉस्फोरस, कार्बोहाइड्रेट्स का बेहतरीन स्रोत है। यह कोलेस्ट्रॉल और ट्राइग्लिसराइड घटाने में मदद करता है और हृदय रोग, कैंसर, मधुमेह, गुर्दे की समस्या और कई अन्य स्वास्थ्य समस्याओं में फायदेमंद होता है।

सपोता (चीकू)- यह पोटेशियम, तांबा, लोहा, जैसे खनिजों और विटामिन ए और विटामिन सी जैसे एंटीऑक्सीडेंट विटामिनों, जो दृष्टि, त्वचा और हड्डियों के लिए आवश्यक है, का अच्छा स्रोत है। यह संक्रमण के खिलाफ प्रतिरोध विकसित करने और कब्ज दूर करने में मदद करता है। यह फेफड़ों और मौखिक गुहा के कैंसर से बचाता है और दांत मजबूत बनाता है।

पालक विटामिन, कैरोटीन, विटामिन ए, बी1, बी2, बी6, सी, ई, फॉलिक एसिड, मैंगनीसियम, लोहा, कैल्शियम और हड्डियां बनाने वाले तत्वों सहित पोटेशियम का बेहतरीन स्रोत है। यह मोतियाबिंद और उम्र संबंधी आंखों में मैकुलर डीजैनरेशन के खतरे को कम करता है। यह ऑस्टियोपोरोसिस, हृदय रोग, कैंसर, गठिया, उच्च रक्तचाप के उपचार एवं हड्डियों को मजबूत बनाने में फायदेमंद रहता है।

टमाटर विटामिन ए, बी1, बी2, और सी का स्रोत होता है। इसमें कैल्शियम, फॉस्फोरस, पोटेशियम, मैंगनीसियम, क्लोरीन, सोडियम और आयरन होता है। इसमें लाइकोपीन होता है, जो एंटीऑक्सीडेंट होता है और कैंसर कोशिकाओं और अन्य प्रकार के रोगों से लड़ता है। यह गैस, अपच, कब्ज और में सहायक होता है और कैंसर, दृष्टि, हृदय समस्या, कोलेस्ट्रॉल, उच्च रक्तचाप, मधुमेह और किडनी विकारों में फायदेमंद होता है।

गेहूं घास के रस में आवश्यक विटामिन और खनिज होते हैं। यह कैल्शियम, लोहा, मैग्नीशियम, फास्फोरस, पोटेशियम, सोडियम, सल्फर, कोबाल्ट, और जस्ता का बहुत अच्छा स्रोत है। यह एंजाइमों में बहुत अधिक है और इसमें 70% तक क्लोरोफिल शरीर बनाता है।

यह लाल रक्त कोशिकाओं को बनाता है और रक्त, हीमोग्लोबिन संख्या को बढ़ाता है, थैलेसीमिया और रक्ताल्पता से लड़ने में मदद करता है। यह कैंसर, मधुमेह, उच्च रक्तचाप, पक्षाघात, अधिश्वेत रक्तता, गठिया, दमा, मासिक धर्म समस्याओं, आदि जैसे रोगों से मुकाबला करने में मदद करता है। यह पुरुषों और महिलाओं दोनों के प्रजनन स्वास्थ्य के सुधार में मदद करता है, बढ़ाता है व गर्भ धारण में मदद करता है।

हल्दी रक्त का शुद्धिकरण करती है, लीवर को उत्तेजित एवं मजबूत बनाती है और पूरे शरीर को स्वस्थ्य एवं सक्रिय रखती है। यह जुकाम, खांसी, सूजन, गैस, रक्त अशुद्धियों, मधुमेह, चोट और त्वचा संबंधी रोगों में लाभकारी है।

अखरोट प्रोटीन और फाइबर का बेहतरीन स्रोत है। यह विटामिन बी, मैंगनीसियम और एंटीऑक्सीडेंट, ओमेगा-3, फैटी एसिड और कई कैंसर विरोधी गुड़ों से युक्त होता है। यह प्रतिरक्षक तंत्र के लिए सहायक होता है और कोलेस्ट्रॉल कम करने, किडनी समस्या और अस्थमा में फायदेमंद है, हृदय की समस्याओं के खतरे कम करता है और नसों को स्वस्थ्य रखता है।

जूस और हलका आहार ही "प्राकृतिक स्वस्थ्य भेजन" है
यह फायदेमंद है और कई बीमारियों को नियंत्रित एवं
उनके इलाज में मदद करता है।

मूत्र चिकित्सा उपचार का प्राचीन तरीका है। इस पद्धति को 'खुद के मूत्र चिकित्सा' के रूप में शिवांबु कल्प विधि में संदर्भित किया गया है। शिवांबु कल्प विधि पांच हजार साल पुराने दस्तावेज 'दमर तंत्र' का भाग है, जो पवित्र हिंदू मूलग्रंथ वेदों से ताल्लुक रखता है। इसका संदर्भ आयुर्वेद की लगभग सभी किताबों में है।

यह योगाभ्यास की प्राचीन पद्धति भी है। तंत्रिका योग सभ्यता में इस चिकित्सा को 'अमरोली' कहा गया है। अमरोली 'अमर' शब्द से उपजा है। प्राचीन किताबों और वेदों में मूत्र को 'शिवांबु', यानि शिव का जल के रूप में संदर्भित किया गया है। शिवांबु को पवित्र द्रव्य करार दिया गया। उनके अनुसार मूत्र दूध से ज्यादा पोषक है।

यह प्रभावी आरोग्यकर तौरतरीका एवं शक्तिशाली प्राकृतिक चिकित्सा है और उपचार का सबसे सुरक्षित तरीका। इसके कोई दुष्प्रभाव नहीं हैं। यह हर प्रकार की गंभीर एवं पुरानी बीमारियों को ठीक करने और स्वस्थ्य बने रहने की पूरी तरह दवारहित एवं प्रभावी प्रणाली है।

ईश्वर ने हमें जन्म से ही बहुमूल्य उपहार (मूत्र) दिया है। मूत्र चिकित्सा को पारंपरिक रूप से इस्तेमाल किया गया। अधिकांश लोगों के लिये इस उपचार की तकनीक को अपनाना एवं उसके लाभ पाना काफी कठिन होता है। मूत्र चिकित्सा के अधिकतम लाभ उठाने के लिये मैंने अध्ययन किया, खोज की और अनुसंधान कर सही विधि एवं तकनीक को खोजा है, जिसे जन्म से सेरेब्रल पॉल्सी से ग्रसित बच्चों समेत हर कोई अपना सकता है। इसे अपनाकर घर में बहुत आसान तरीके से इसका अभ्यास किया जा सकता है।

1. भगवान शिव 2. गणपति 3 श्री अंगला परमेश्वरी माता

“स्वस्थ्य आहार”

ज्ञान एक समुंदर है
जिनके पास है, उन्हें उनके साथ बांटना चाहिये जिनके पास नहीं है
समुंदर अमृत बन जायेगा
और दुनिया और अधिक बेहतर

समाज के अंदर व अन्य लोगों को शिक्षित करने व
मानव-जाति की सहायता करने के लिए जागरूकता फैलाने के लिए
"मूत्र चिकित्सा के प्राकृतिक लाभ" की प्रतिलिपियां वितरित
करने के लिए लोग आगे आ सकते हैं

ज्यादा जानकारी के लिये-

- कैंसर मरीजों की केस हिस्ट्री, डायग्नोस रिपोर्ट एवं वीडियो रिकॉर्डिंग।
- विभिन्न मरीजों की रिपोर्ट एवं वीडियो रिकॉर्डिंग।
- कैंसर एवं अन्य रोगों के मरीजों के प्रमाणपत्र।
- मूत्र चिकित्सा के लाभ।
- उपचार के तरीके।
- अंग्रेजी, हिन्दी, तमिल एवं कन्नड़ में डाउनलोड करने के लिये-

http://www.urinetherapy.in/CaseHistory.aspx

जगदीश आर. भुरानी
बेंगलूरु- 560076
ईमेल- jbhurani@gmail.com
Mob: 09342872578